Chap-4

चतुर्थ अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं व्यंग्य काव्य

चतुर्थ अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं व्यंग्य काव्य

1. चुनाव
2. प्रतिनिधि नेता चरित्र
3. कुर्सी की राजनीति
4. लालफीताशाही
5. प्रशासकीय भ्रष्टाचार
6. भ्रष्ट खोखले आदर्श
7. दल-बदल की राजनीति
8. राजनीति व्यवसायी बन गयीं है
9. राजनैतिक भ्रष्टाचार
10. सत्ताप्राप्ति के पश्चात् आत्मसुख में लीन राजनेता।
11. समस्याग्रस्त आम आदमी और भ्रष्ट राजनीति
12. भारतीय लोकंतत्र

चतुर्थ अध्याय

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं व्यंग्य काव्य

उपशीर्षक : स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक पृष्ठभूमि एवं राजनैतिक मूल्य पतन और व्यंग्य काव्य

स्वातंत्र्योत्तर काल एक इस प्रकार का आशाप्रक एवं लोकाभिमुख समचेतनाओं का सम्वाहक काल है जिसमें संविधान की स्थापना होने के कारण भारतीय जनता को विदेशी अव्याचारों तथा उसकी दमन नीतियों से मुक्ति मिली और भारतीय जनता को सर्वप्रथम नागरिकता के स्वतंत्र अधिकारों की प्राप्ति हो सकी।

भारतीय समाज के सर्वागीय विकास के लिये न्याय समता बन्धुत्व के स्तर पर उसे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिणिक जैसे अधिकारों की प्राप्ति तथा उनकी सुरक्षा के लिये सवैधानिक रूप से स्वतंत्र्यता प्राप्त हुई इसके परिणाम स्वरूप भारतीय जन समूह में व्यक्ति के समग्रह विकास के लिये या आशा और लोक विश्वास की धारण मजबूत हुई कि अब भारतीय लोक समाज के विकास के मार्ग में किसी प्रकार की राजनैतिक, सामाजिक बाधाये उत्पन्न नहीं होगी। यदि उसे कोई अन्याय हुआ तो संवैधानिक रूप से अपने अधिकारों की पुनः प्राप्ति के लिये वह न्याय का दरवाजा खटखटा सकता है। इसी विश्वास के साथ भारतीय समाज में आनन्द की लहर सर्वत्र दौड़ गई।

1952 में प्रथम चुनाव हुआ तथा उसके पाँच वर्ष पश्चात् दूसरा आम चुनाव हुआ। और धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राजनैतिक दलो ने अपने-अपने ढ़ंग से लिया जिसके कारण राजनीति में विकृतियाँ शुरु हुई।

1960 के पश्चात् भारतीय वातावरण में राजनैतिक विसंगतियों के पनपने के कारण नेताओं के चरित्र में पतन की सीमाये बढ़ती है अर्थात् नेताओं का चरित्र

राजनैतिक स्वार्थ के कारण स्वार्थ लिप्सा का घर होता गया निहित स्वार्थ की राजनीति में अपने पक्ष में ओट को हथियाने के जो राजनैतिक दंगे और अनैतिक आचरणों के द्वारा भारत के स्वतंत्रपरिवेश को विकृत किया। देश की राजनीति का आदर्श और नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहा इससे लोगो में मोहभंग की स्थिति उत्पन्न हो गयी।

सर्वप्रथम भारतीय जनता ने यह महसूस किया कि यह हमारे मसीहा ये हमारे कर्णधार अब भारतीय स्वतंत्रता को डुबा देंगे उनके प्रति आस्था भंग हो गयी। और राजनैतिक मूल्यों की धुरी अपने केन्द्र से चरमरा गयी।

साहित्यकार समाज की बदलती हुई परिस्थितियों को आवश्यकतानुसार उद्वेलित किया है। उस समय समाज की स्थिति भयावह थी। स्वाधीनता का यह भयानक पथ दासता से भी अधिक क्रूर था। सिर्फ कहने के लिए ही देश स्वतन्त्र हुआ था। गुलामी से मिलकर पुनः ऐसी गुलामी में कैद हो गये जहाँ संवैधानिक स्वतन्त्रता केवल प्रपंच मात्र थी। समाज की इसी पीड़ा को उस समय के व्यंग्यकारों ने अपनी वैदग्ध्यपूर्ण लेखिनी से जो अभिव्यक्ति दी है। वह उस युग की सत्यता को प्रकट करती है।

हरिशंकर परसाई ने अपने 'व्यंग्य वह जो आदमी है न्' में सत्य का अनावरण किया है। बड़ी उम्मीद और कामना से देश को स्वतन्त्रता हुई। आशा की गई कि राम-राज्य की स्थापना होगी। देश में कोई भूखा, नंगा, बेघर नहीं होगा। जनता ही देश की शासक होगी परन्तु परसाई कहते है- 'अंग्रेज छुरी काँटे से प्लेट में रखकर इण्डिया को खाते रहे। देशी साहब बचे भारत को खाने लगे।' 1

डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने स्वीकार किया है कि 'व्यंग्य की धार में अत्यधिक पैनापन आया 1960 के पश्चात। यह इसलिए कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के कुछ ही वर्षों के पश्चात् जन-मानस जिस मोहभंग की स्थिति से गुजर रहा था, वह अब जैसे पराकाष्ठा को पहुंच चुकी थी।' भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् वर्षो तक सामन्तों राजाओं और जमीदार, सूदखोरों का वर्चस्व न केवल यथावत् कायम रहता है बल्कि वह राजनैतिक सत्ता हथियाने के सफल प्रयत्न करता रहा है।

व्यंग्य की इस नई दिशा पर प्रकाश डालतें हुए डॉ. मनोहर देवलिया ने लिखा है कि 'हमारे यहां आजादी के 25-30 वर्षों तक राजे महाराजे और प्रजातंत्र एक साथ रहे और बड़े जमीन के मालिक और बड़ी पूंजी का आपसी लेन-देन भी है।' 2

इसी परिप्रेक्ष्य में हम स्वतंत्रता के पश्चात् देखते है अनेक प्रकार के काण्ड घटित हुए नेताओं के घोटाले आम जनता के सामने आज तक आते रहे हैं।

उदाहरण- वोटो की राजनीति

आज के युग में राजनीति में वोटों कि सत्ता महत्ता अक्षुण्य है, जो नेता जितने अधिक वोट प्राप्त कर लेता है वह उतना ही अधिक बड़ा माना जाता है। आज के युग में वोटदेना जनता का अधिकार नहीं रह गया है। आज के समय में वोट प्राप्त करने के लिये मतदाता को खरीदा जाता है। यथार्थ में तो यह प्रजा की हार और जनता की जीत होती है। इस सम्बन्ध में श्री श्यामकिशोर 'कोई खतरा नही' में लिखते हैं-

यहाँ चुनाव में
एक तो जात होती है
एक मुलाकात होती है
न जिसकी जात होती है
न मुलाकात होती है
उसके मुंह पर
वोटरों की। लात होती हैं। 3

दल बदल की राजनीतिः-

आज के युग में राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार का समावेश हो गया है। आज के नेता अपना फायदा देखते है। देश के हित के लिये कोई कार्य नहीं करना चाहते है। जिस पार्टी से उन्हें फायदा होता है उसी में शामिल हो जाते हैं इस प्रकार की राजनीति पर काका हाथरसी ने व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्ट्रव्य की है-

मंत्री पद की लूट है, लूट सके तो लूट
अंतकाल पछताएगा, प्राण जाएँगे छूट
प्राण जाएँगे छूट, मेज पर रक्खे पेपर
बदल पार्टी, इस्तीफा पर कर सिगनेचर
कहँ काका कवि, स्वतंत्रता का लाभ उठाओ
राष्ट्र ध्वज फहरा करके फोटो खिचवाओं। 4

वोटो को राजनीति :

आधुनिक युग में चुनाव लीला में विशेष प्रकार के परिवर्तन होते जा रहे है। चुनाव में पहले प्रत्याशी हाथ जोड़कर वोट मांगते है। सभी से विनती करते है और

चुनाव जीतने के बाद उनका व्यवहार बदल जाता है। राजनीति की इस बदलती हुई स्थिति को देखकर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है।

नेता वही महान जो, भागे वोट बटोर,
पहले मीठा मुलायम, पीछे बने कठोर। 5

कुर्सी की राजनीति :

आज के राजनैतिक क्षेत्र में अनेक विकृतियों का समावेश हो गया है। अजा के नेता राजनीति को व्यवसायी धन्धा बनायें हुए है। राजनीति में नेता कुर्सी के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। किसी भी सरकारी तंत्र में कुर्सी को विशेष महत्व दिया जाता है जो व्यक्ति कुर्सी पर बैठता है वह मौज उड़ाता है। और जो साधारण व्यक्ति है उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कुर्सी की राजनीति पर कवि गिरिमोहन गुरु ने व्यंग्य किया है।

नित नए उत्पात करती कुर्सियां।
आदमी को मात करती कुर्सिया।।
अपनी जड़ता की जड़े मजबूत कर।
दिवस को भी रात करती कुर्सिया ।।
जो सरलता से बिताते जिन्दगी।
उन्हीं पर आघात करती कुर्सिया।।
फाइलों पर जो रखा करते वजन।
सिर्फ उनसे बात करती कुर्सिया।।
जाम होठों से लगाती तब कहीं।
काम की शुरूआत करती कुर्सियाँ।।

घोटाला काण्ड : बूथ फेप्चरिंग राजनैतिक क्षेत्र में अनेंक विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। आज के नेता जीतने के बाद अनेक घोटाले काण्ड करते है और पैसों का लालच देते है। ये गलत से गलत अपराध करते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में विशेष रूप से बदलाव आ गये है-

इस पर कवि सत्यकाम गिरीष ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

ऊँचा पद हो, दृव्य से भरे आपके भाण्ड
होवे रोज विहार-सा कोई चारा काण्ड
रचे हवाला नित नयो रोज

उड़ाये माल
चाहे जितनी आयु हो, लाल लाल हो गाल
भीख मांगने की नहीं तुम्हें जरुरत आज
नेताजी ने कल तुम्हें पहनाया था ताज।
रैली में खाना तुम्हें जिसने बाँटा मुफ्त
उस दल की जय-जय करों क्यों बैठे हो सुस्त।
यूथों पर कब्जा करो यही समय की मांग
मत पेटी ही दो बदलतौड़ सभी की टांग
हो अपना आंतक तो निश्चित होगी जीत
वोट न डालेगी स्वयं जनता हो जय भीत। 7

इस प्रकार राजनीति में अपने पक्ष को मजबूत करने के लिये अनेक प्रकार के हथकण्डो का प्रयोग किया गया है-

इस प्रकार अनेंक प्रकार की राजनैतिक विकृतियाँ आज तक सुरसा की मुंहकी तरह अपना मुंह फाड़ती जा रही है अनैतिकता के ओट को लेने की लिये अन्धी प्रवृत्तियों से आज का नागरिक सुपरिचित हो गया है।

उसके लिये अपने विकास की जो आशायें थी आशाओं पर पानी फिर गया है। स्वतंत्रता के सुख मृग जल तुल्य प्रतीत हो रहे है।

नेताओं के लिये आजादी स्वर्गीय स्वर्ग के समान आनन्द दायक हो गयी है। नेताओं के लिये आजादी स्वर्ग के कल्पवृक्ष एवं कामधेनु के समान सुखदायक हो गयी है। यह स्वतंत्रता आम जनता के लिए नर्क तुल्य दुःखदायक हो गयी है। नेताओं की विलास प्रियता उनकी सर्वमुख्यतियार शाही या स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति भाई-भतीजाबाद पर आधारित उनकी प्रवृत्ति लोक चेतना के विपरीत है।

इसी स्तर पर हम देखते है कि एक तरफ जितना राजनैतिक प्रगति या विकास का दौर कहलाने और दिखाने के लिये बढ़ता गया। उसी कारण जनता में त्रास, आभाव, घुटन जैसी स्थितियाँ भी सर्वत्र विकसित होती गयी। आम जनता की स्थिति पंख कटे पक्षी की तरह होती गयी। उसकी स्थिति में विकास के कोई चिन्ह दृष्टिगत नहीं होते। आर्थिक, राजनैतिक, दृष्टि को लेकर बेकारी जैसी स्थितियाँ महँगाई की मार टैक्स का भार सरकारी कर्मचारी आदि से पीढ़ित जनता की स्थिति को रोज के दिनचर्या अखबारों में देखा जा सकता है। कहलाने के लिये सरकारी तंत्र जनता के

लिये है कहलाने के लिये स्वतंत्रता हमारी है किन्तु ऊपर कथित जनता की त्रासदियों को उसकी विपन्न अवस्था को देखते हुए हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि 1960 के बाद राजनैतिक अराजकता, राजनैतिक उथल-पुथल, राजनैतिक स्वार्थ -लिप्सा आदि के कारण जो मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया था वह मोहभगं आजादी के बाद और भी अनेक स्तर पर बढ़ता ही गया है।

साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य पर अपने समय परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है अपने समय की परिस्थितियों की उपेक्षा करते हुए कदापि आगे नहीं बढ़ सकता है यही कारण है कि विसंगतियों के धनीभूत होते जाने के कारण स्वतंत्रता के बाद व्यंग्य का साहित्य भी सर्वाधिक रूप से लिखा जाने लगा है। स्वतंत्रता के बाद और विशेषकर 1960 के पश्चात् स्वतंत्र रूप से व्यंग्य नाटक, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्यकहानी व्यंग्यमयी काव्य रचनाओं ने भी अपना यथेष्ट विकास किया है। उसके अन्तर्गत सन् 60 के पश्चात राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सांस्कृतिक साहित्यिक एवं शैक्षिक जगत से सम्बन्धित अनेक विधि विद्रूपताओं के यर्थाथ रूप को स्पष्टतः देखा जा सकता है।

साणेत्तरी काव्य में व्यंग्य -राजनैतिक दृष्टिकोण

1. चुनाव :-

चुनाव राजनीति का सम्बन्ध जीवन के परिवेश से जुड़ा हुआ है। जीवन के परिवेश में बढ़ती हुई विकृतियों के कारण व्यंग्य की जड़े मजबूत हो गयी। और व्यंग्य का क्षेत्र विस्तार भी बढ़ गया। आज के राजनेताओं की पद-लिप्सा के लिये भ्रष्टाचार की नीति अपनाई जिससे इन राजनेताओं को व्यंग्य का कोपभाजन बनना पड़ा। राजनैतिक परिवेश निरन्तर कलुषित होता जा रहा है। नेताओं की कथनी और करनी में अधिक अन्तर है। आज के नेता चुनाव के समय जनता के आश्वासन देते है और जीतने के बात भूल जाते है। आज के नेता ही जनता के दुःख का निमित्त बन गए है।8

लोकतंत्र में चुनाव का अत्यधिक महत्व है। वह क्या चाहता है मतदाता की इच्छा पेटियों के द्वारा प्रकट होती है। भारत में चुनाव की प्रक्रिया अंग्रेजों के शासनकाल से शुरु हुई थी। प्रारम्भ में धनी लोगों को वोट देने का अधिकार प्राप्त था। भारत के संविधान में प्रत्येक जन समूह में समान अधिकार प्राप्त थे। परन्तु आज की चुनाव पद्धति में अनेक दोष उत्पन्न हो गये है। आज के युग में गरीब और सामान्य व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ सकता है। चुनाव लड़ने के लिये योग्यता की आवश्यकता नहीं

है। अजा के चुनाव बहुत महंगे हो गये है। लोकतन्त्र की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा जनता की सरकार, जनता द्वारा चुनी गयी सरकार, जनता के लिये काम आने वाली सरकार। आज के युग में यह परिभाषा लड़खड़ा जाती है। जनता की सरकार में सुख-दुःख दोनों में प्रत्येक नागरिक बराबर का भागीदार होता है। चाहे वह अनपढ़ हो गरीब हो किसी भी जाति का है।

हमारे देश में इस प्रकार की जनशक्ति का उदय गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आदोलन के समय हो गया था। इसलिए लोकतन्त्र को प्रथम शर्त पूरी करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। स्वतंत्रता के ढ़ाई-वर्ष बाद ही देश का संविधान बन गया और 1952 में आम चुनाव हुए और उस समय जन-आंदोलन की सूत्रधार कांग्रेस को जनसत्ता सौंपकर जनता ने लोकतन्त्र की दो शर्ते 'अपनी सरकार' और 'जनता द्वारा चुनी गयी सरकार' का पूर्ण कर दिखाया।

जनता की यह भरोसेमंद सरकार 10-15 साल तक चली। परन्तु पंडित जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री ने निधन के बाद कांग्रेस और उसके नेताओं के प्रति विश्वास और आदर घट गया और आगे चलकर कांग्रेस की स्थिति गिर गयी। राज्यों में संयुक्त सरकारें बनने लगी। आयारम गयाराम (दल-बदल) की स्थिति प्रारम्भ हो गयी। और यही से भ्रष्टाचार का समावेश प्रारम्भ हो गया। राजनीति में धन-शक्ति का हस्तक्षेप भी सारी सीमाएँ तोड़कर पूरे वेग से बढ़ा। 9

चुनाव में वे ही टिकिट पा सकते है जिनकें पास पैसा है। आज के चुनाव में अनेंक विसंगतियों और विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। चुनाव की इन राजनैतिक विसंगियों को साठोत्तरी कवियों ने व्यंग्य का निशाना बनाया है। इनकी रचनाओं में राजनेताओं तथा उनकी प्रत्येक सूक्ष्मतातिसूक्ष्म विसंगतियों पर यर्थाथ व्यंग्य की चित्रण किया है।

आज की राजनैतिक परिस्थितियों के बदल जाने से साहित्यकारों, कवियों को नये मूल्य-संक्रमण से गुजरना पड़ रहा है। नई विचाराधाराओं के सामने पुराने मूल्यों में प्रश्नचिन्ह लग गया है। द्वितीय महायुद्ध तथा यातना शिविरों के कारण मूल्यों का विघटन तेजी से बढ़ रहा है। राजनैतिक स्थिति में इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ रहा है।

आज के चुनावों की स्थिति परिवर्तित होती जा रही है। आज के युग में चुनाव जनता के लिये दुःखदायी होते है। आज के नेता मतदाता को आश्वासन देते है। और

वोट मिलने के बाद सिर्फ अपने घर भरने में लगे रहते है। जिसका दुस्परिणाम जनता को भुगतना पड़ रहा है काका हाथरसी ने चुनाव में बढ़ती हुई विद्रूपताओं पर व्यंग्य कविताओं द्वारा तीखा प्रहार किया है।

आज की
राजनीति का
खोट
वोट के बदले में
चोट। 10

हमारा भारत देश जनतंत्रात्मक शासन होने के कारण प्रति पाँच वर्ष में सरकार बनाने हेतु आम चुनाव कराए जाते है और उस चुनाव के समय प्रथ्याशी जनता को झूठे वादे में फँसाकर जीतकाहार पहनते है, और जीतने के बाद अपने वादे भूल जाते है। इस आपाधापी के कारण जनता को दुःखो का सामना करना पड़ रहा है। इस पर कवि चिंरजीत ने माध्यम से यह कविता प्रस्तुत की। झूठे वादों और दिलासों, संकल्पों के जादू से, हर चुनाव में झूठेश्वर ही, जय का हार पहनता है। 11

आधुनिक युग में राजनीति में अनेक विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। आज के नेता चुनाव जीतने के बाद मँजे उड़ाते है, और अपने क्षेत्र के लोगों को खिला-पिलाकर खुश कर देते है। देश के प्रति कर्तव्यों का कोई ध्यान नहीं रहता है- इस विषय पर कवि जायस्वाल ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

चुनाव जीतकर वे
मज़ा अकेले नहीं उड़ाएगे,
क्षेत्र को भी मजा चखाएँगे। 12

चुनाव के समय प्रत्याशी के लिये वोटर भगवान के समान है, वोटर के हाथ में उसका भाग्य होता है परन्तु आज के नेताओं की बदलती हुई मनोवृत्ति और बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण जनता वोट देने से कतराती है।

जनता की इस परिस्थिति पर काका हाथरसी ने व्यंग्य लिखा है-

पाँच साल बाद
पैर पर सिर रखकर
वोट माँगे,
मागर रूख देखकर

सिर पर पैर रखकर भागे। 13

भारत देश जनतंत्रात्मक होने के कारण प्रति पाँच वर्ष में चुनाव होते है। परन्तु राजनैतिक क्षेत्र में अत्यधिक भ्रष्टाचार बढ़ने के कारण चुनाव खरीदा जाने लगा है। वोटरों को पैसे, दारू की बोटल बाँटकर चुनाव जीते जाते है। चुनाव की इस विसंगति पर कवि सुरजीत नवदीप ने व्यंग्य लिखा है-

कई बार चुनाव में
लहराते रह जाते हैं
ऊँचे झंड़े
देखते-देखते
जीत जाते हैं-
सिर्फ डंडे।

*

चुनाव में यह गलत है नारा-
'सत्यमेव जयते'
पैसे और दारू की नदी में
बड़े-बड़े है बहते। 14

आज की राजनीति झूठ-फरेब की राजनीति बन गयी है। आज के नेता चुनाव का समय आने पर अपने क्षेत्र में पहुँच कर नयी-नयी चाले चलते हैं। जनता को झूठे आश्वासन, लालच देकर जीत जाते है जीतने के बाद अपने वादे भूल जाते है। आज की इस भ्रष्ट-चुनाव प्रक्रिया पर कवि मदन मोहन शर्माने व्यंग्य है।

वह पाँच साल में आता है,
वह सौ सौ चाल चलाता है,
फूलो में आग लगाता है,
मौसम वोटर का आ पहुँचा॥
वह लूट वोट ले जायेगा,
झूठे लालच दे जाएगा।
फिर मुखड़ा न दिखलाएगा,
वह शान जताने आ पहुँचा।
वह मान बढ़ाने आ पहुँचा॥ 15

आज के युग की चुनाव प्रक्रिया इतनी भ्रष्ट हो गयी है कि हर चुनाव के बाद जनता को अनेक कठिनाअयों का सामना करना पड़ रहा है। आज के चुनाव दिखावे के लिये हो रहे है। नेता अपने मतदाताओं को भ्रष्टाचार का रास्ता सुझा ही देता है। उस समय संतुष्ट करके चुनाव जीत जाते है। आज की अनोखे भ्रष्ट चुनाव पर कवि कृष्ण कुमार शर्मा ने व्यंग्य के माध्यम से यह कविता प्रस्तुत की है-

एक नेता महान से
हमने पूछा शान से -
'सात अजूबों वाली इस दुनिया में
आठवाँ अजूबा बतलाइए श्रीमान'
चुनाव का धनुष
जनता के हाथों में देकर
वोट का तीर
अपनी ओर चलवाते हैं,
जीत जाने पर
दूसरी असंतुष्ट आत्माओ को
अपने खेमे में खीचं लाते हैं,
हमारी सात पीढ़ियाँ खा सकें,
इतना एक पल में कमा लेते हैं,
हमारी तमाम कोशिशों के बावजूद
देश अब तक डूबा नहीं है
क्या यह आठवाँ अजूबा नहीं है? 16

आधुनिक युग में जीवन के परिवेश में विकृतियों, विद्रूपताओं का समावेश हो गया है। जिसका कारण है। राजनीति में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार इस समय समाज में, साधारण मनुष्य को अपना जीवन व्यापन करना मुश्किल हो गया है। देश को खोखला करनेवाले बड़े-बड़े नेता शिकारियों के वेश में धूम रहे है। चुनाव के समय इन बड़े नेताओं के कंडीडेत आगे-पीछे घूमते है। और वोटरो की चमचागीरी करते है। आज के नेता यह चुनाव जीतने के लिये करते है। आज के इन चुनावों पर कवि 'अशोक अंजुम' ने सटीक व्यंग्य प्रहार किया है-

जनता बेचारी फिरे इत-उत मारी यहाँ,

बड़ें बड़ें नेता है शिकारियों के वेश में।

आते ही चुनाव बढ़े वोटरों के भाव।

दिखे सारे कंडीडेट ही मदारियों के वंश में। 17

भारत में राजनैतिक परिस्थितियाँ विकराल रूप धारण करती जा रही है। हर पाँच साल में चुनाव होने से देश की आर्थिक समस्या बढ़ रही है। महँगाई बढ़ने से आम आदमी को जीवन व्यतीत करना मुश्किल हो गया है। आज के चुनाव के कारण बढ़ती हुई महँगाई पर कवि काशीपुरी कुंदन ने व्यंग्य प्रहार किया है।

हमारी समस्याएँ विकराल हैं।

तुम्हें क्या बताएँ क्या हाल है।

ये जो तुम्हारा नेता है

हर पाँच साल में धोखा देता है,

व्यापारी हमें लूटता है,

महँगाई के मारे बुरा हाल है

बच्चों के आगे बेरोजगारी का सवाल है। 18

आधुनिक युग का चुनावी वातावरण बिल्कुल बदल गया है। देश को चलाने के लिये एक योग्य शासक की जरुरत होती है। जिससे देश की उन्नति हो। परन्तु आज के युग में चुनाव लड़ने के लिये योग्यता की कोई जरुरत नहीं रही है। जो भ्रष्टाचार के रास्ते पर चलते है। उन्हें ही चुनाव जीतना सम्भव है। जो नेता गांधीवादी का पाठ पढ़कर दिखावा करता है। जनता की समस्या पर आँसू बहाता है। चुनाव के समय ये सब दिखावे होते है। आज के चुनाव-चिह्न के नये-नये रूपों को देखकर कवि आशाकरण अटल ने व्यंग्य किया है। एक दिन आवारागर्दी करते मैं गिरफ्तार हो गया

तो देखते ही देखते मेरे चुनाव लड़ने के लिए

एक ग्रांउड तैयार हो गया।

*

मैने कहा-जेल कुर्सी तक पहुँचने का

शार्टकट रास्ता है,

और जो राष्ट्रीयस्तर के नेता होते हैं

उन्हें एक-दूसरे पर आरोप लगाने पड़ते है।

और महीने में केवल एक बार

हरिजन समस्या पर आंसू बहाने पड़ते है।
भैया बोले रोने का राजनीति से क्या सम्बंध है?
मैने कहा-ढ़ोंग हमारी राजनीति का
अभिन्न अंग है
और इसमें गाधीवाद का ढ़ोंग
सबसे ज्यादा प्रचलित और टिकाऊ है
पाँच साल तक हर बड़ा नेता
लाखों रूपये का पेट्रोल फूंकता है
किंतु चुनाव के दिनों में
एक पद यात्रा करता है।
और हमारे गाधीवादी नेताओं द्वारा
स्वदेश का पाठ पढ़ाया जाता है
आप तो जमानत के पैसों की व्यवस्था कीजिए
और मुझे कभी देश की चिन्ता व सताए
ऐसा आर्शीवाद दीजिए। 19

आधुनिक युग में चुनाव - प्रक्रिया इतनी दोषपूर्ण हो गयी है। कि इनमें कभी भी सत्यता नहीं मिलती है। चुनाव आने पर ही मतदाता का समय आता है। चुनाव के समय नेता अपने क्षेत्र में पहुँचकर वहाँ की समस्याओं को देखता है। जीतने के बाद भूल जाते हैं। कि उनका क्या कर्तव्य है। चुनाव की इन भ्रष्टनीति पर कवि अशोक 'अंजुम' ने व्यंग्य कविता के द्वारा पर्दाफाश किया है।

चुनाव प्रचार के दौरान
एक सत्ताधारी नेता
हमारे गांव में आये
वहाँ की दयनीय स्थिति को देखा
तो चकराये
उन्होंने देखें
चारों तरफ गन्दगी के ढेर
और हर घर में एक दो बीमार,
रास्तों पें, कीचड़

नालियों की हालत
और भी बेकार।
मुंह बनाते हुए बोले
'क्या सरकारी डाक्टर
और सरकारी कर्मचारी
यहाँ काम पर नहीं आते हैं
लगता है-
मुफ्त की तनखा पाते हैं?
यह सुनकर
एक ग्रामीण ने मुंह खोला
भरएि गले से बोला-
'बाबूजी
हम बताते हैं'
उआते तो हैं
पर आपकी तरफ
पाँछ साल में एक बार आते हैं। 20

आधुनिक युग में चुनाव प्रक्रिया में अत्यधिक भ्रष्टाचार का प्रवेश हो गया है, आज चुनाव के समय-विभिन्न दल-अपनी-अपनी सभाओं का आयोजन करते है। विरोधी दल के विरुद्ध में बोलते है। और तरह-तरह के नारे लगाते है। चुनावकी इन भ्रष्ट नीतियों को देखकर कवि हुल्लड़ मुरादाबादी ने चुनाव की याथार्थ स्थित का चित्रण प्रस्तुत किया है।

वोट दे दो, वोट दे दो, बड़बड़ाने आ गए,
फिर हमारी लाश को कंधा लगाने आ गए।
देश से मतलब नहीं है, देश जाय भाड़ में,
चंद नारे रट लिए और, हिन हिनाने आ गए।
भीड़ तो जुटती नहीं है, अब किसी भी नाम पर
लोंग कहने लग गए है, कान खाने आ गए।
प्यास से हम मर रहे थे, दोपहर की धूप में,
उनकी किरवा देखिए, भाषण पिलाने आ गए। 21

आज की राजनीति में विकृतियों का पूर्णरूप से समावेश हो गया है। आज के नेता अवसरवादी, दल -बदलू आपसी मतभेद के कारण देश में चुनाव कराते रहते है। और यह चुनाव जनता के लिये एक संकट ही होता है। जिस तरह प्राकृतिक प्रकोप से लोगों को अनेक कठिनाइयों को झेलना पड़ता है। चुनाव होने के बाद जनता को महंगाई, बढ़ते हुए भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है। ऐसे चुनाव देश और जनता के लिए व्यर्थ और निरर्थक है इन परिस्थितियों को अनिल धमाका ने अपनी व्यंग्य लेखिनी द्वारा प्रस्तुत किया है।

चौथे वर्ष उनकी समृद्धि थी विशाल,
क्योंकि बारी-बारी से आए-
बाढ़-सूखा और अकाल
राहत की सांस ली
क्योंकि न सूखा पड़ा
न आयी बाढ़, पर
संकट का बादल हाय फिर छा गया,
प्राकृतिक प्रकोप तो नहीं
राजनीतिक प्रकोप आ गया।
राजनीति की नदी में
भ्रष्टाचार की बाढ़ आई,
फिसला गयी जनता को
चुनावो की खाई।
हाय, फिर वही स्थिति हो गयी,
जनता पाँच वर्षो के लिए पुनः
आभावों के सागर में खो गयी। 22

आम की चुनाव प्रक्रिया में भ्रष्टाचार का पूर्ण रूप से अधिकार हो गया है। भारतीय समाज प्रजातांत्रिक होने के बावजूद उसका कोई अधिकार नहीं है। आज के चुनाव गुण्ड़ागीरी, जबरन वोट डलवाने से जीते जाते है। जिसके पास वोट खरीदने के लिए नोट है। केवल वे ही टिकट प्राप्त कर सकते हैं आज के चुनाव पैसों से खरीदने वाले है। आज के चुनाव की भ्रष्टाचार की नीति पर कवि गुरु सक्सेना व्यंग्य कविता

के द्वारा निम्न रूपेण उद्घाटित किया है।

दुकानदार देखते ही बोला-कहिए
हमने कहा-
अच्छे किस्म के
पाँच-छः गुंडे चाहिए।
लेकिन माफकरना भाई
हमारे सारे गुंडे इस समय
चुनाव के काम में लगे हैं।
किसी की ओड़ से
जबरन वोट डलवाना है
कई प्रत्यशियो को
उनके घर से उठवाना है
किसी की ओर से
विरोधियों पर गोली दागना है,
कई जगह तो
चुनाव की पेटी लेकर ही भागना है।
कई गुंडो ने
तो एसी जबरदस्त इमेज बना ली है,
कई पार्टियों की टिकिट
अपने नाम से पा ली है
कई तो ऐसे हैं
जो कानून के आगे भी नहीं झूके है,
और कई ऐसे हैं
जो पहले मंत्री भीरह चुके हैं,
आप तो एकदम
अपना काम करवाने में अड़े है,
आपको क्या पता
हमारे यहाँ लोगों के
छः छः महिने से एडवांस पड़े हैं

पहले एडवांस का काम निपटाएगें
अभी तो चुनाव के सजीन का
लाभ उठाएँगे।
आपकी कामनाओं वाली गोदाम
अपने गुंडो के माल से
फिलहाल नहीं भर पाएँगे।
बड़े भाई क्षमा करना
चुनाव तक हम
आपकी कोई सेवा नहीं कर पाएँगे। 23

चुनाव के समय विशेष रूप से अनेक परिवर्तन होते दिखाई देते है। नेता जब अपने क्षेत्र में पहुँचता है। तो पहले वह साइकिल से आया था। अब कार से आया है। चुनाव जीतने के बाद नेताओं की विशेष रूप से तरक्की होती है। नेताओं के इन चुनावी धन्धों पर कवि योगेन्द्र मौदगिल ने व्यंग्य करते हुए लिखा है।

चुनाव वर्ष में
अत्यधिक हर्ष में
नेता जी गांव में आए
नेतृत्व में सबी का हुआ है विकास
इसीलिए हमारे पास
ताजा समाचार है
कि आपके इस तुच्छ सेवक
के पास पहले साइकिल थी
अब कार है।
भाइयो, विश्वास करना,
इस बार जीत गयातो आप सभीको
हवामें उडाऊँगा
हवाई पट्टी के जरिये पूरे गांव को
सीधे अमरीका से जुड़वाऊंगा
क्योकि इससे होंगे कई कायदे

निश्चित रूप से आप सभी को
सिस्टेमेटिकली काम करना आ जाएगा
चुनाव सम्पन्न होते-होते।
'कम्प्यूटर' इस्तेमाल करना।
आ जाएगा। 24

आज के चुनाव में नये-नये चुनाव चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। अजा के नेता चुनाव जीतने के बाद अपने क्षेत्र के लोगों का ध्यान नहीं रखते अपनी निजी कमाई करते है। और अगले चुनाव आने से पूर्व उस क्षेत्र में प्रचार शुरु हो जाता है। और उस दौरान मतदाताओं को अनेक प्रकार के प्रलोभन देना शुरु कर देते है। चुनाव की इन स्थितियों पर कवि अशोक'अंजुम' ने व्यंग्य किया है-

पर्चे चिपके दीवारों पर, साव गाँव में आएँगे
खबर गर्म घर चौबारों पर, साब गाँव में आएँगे।
कई साल पहले आये थे, भाषण देकर लौट आएँगे,
अब चर्चा सब घर द्वारा पर, साब गाँव में आएँगे।
भूखों को रोटी देंगे और, नंगो को कपड़ा देंगे,
रौनक होगी बीमारों पर, साब गाँव में आएँगे। 25

आज की चुनाव प्रक्रिया इतनी दोषपूर्ण हो गयी है कि लोगों को इसका विरोध करना असम्भव है। देश की जनता इन गोरख धंधों को चुपचाप खड़ी देख रही है। चुनाव के समय नेता जनता के द्वारा चंदा इकट्ठा करती है। इन चुनावी व्यवसायीनीति पर कवि अल्हड़ बीकानेरी ने व्यंग्य किया है

प्रजा कुएँ में पडे, तंत्र का देखो गोरख-धंधा।
आम-चुनावों में, लाखों का हमें पूज कर चंदा।
चमचे कर चोर बाजारी, जनता खड़ी तमाशा देखें,
हम इक-दूजे के हितकारी, जनता खड़ी तमाशा देखे। 26

हिन्दुस्तान ज्यादातर गैर जिम्मेदार और भ्रष्टाचारी प्रतिनिधियों से भरा है। आज के नेता एक-दूसरे पर अरोप लगाते है। और अपनी पार्टी को आगे बढ़ाने में लगे है। हर- चुनाव में नये-नयें रूपों का प्रयोग किया जाता है चुनाव के सम्बन्ध में डॉ. गिरिराज शरण अग्रवालने यह पंक्तियाँ दृष्टव्य की है -

कुछ सच्चे-झूठे किस्से है,

ये राजनीति के हिस्से है,
उसने खाया, तुमने खाया
खाकर सबने हँसी उड़ाई
लो फिर तुमने बात घुमाई।
स्वामीजी भी जेल गए थे
राजनीति में खेल नए थे
वो बाहर ही घूम रहे हैं
नई अदालत गई बनाई
लो फिर तुमने बात घुमाई।
अबकी बार चुनाव हुए हैं
नेताजी वे-भाव हुए हैं
नहीं दिवारे रँगी गई हैं
शेषन की सबकरें बड़ाई
लो फिर तुमने बात घमाई। 27

आधुनिक चुनावों में अनेक प्रकार की विकृतियों का समावेश हो गया है, चुनाव के समय नेता अपने क्षेत्र में भ्रमण करता है। और मतदाताओं को खुश करता है उनकी चापलूसी करता है। इन नेताओं को लोग वोट देकर खुद समस्याओं से ग्रसित हो जाते है। और अन्त में मतदाताओं की उम्मीदे खोखली ही रह जाती है। प्रेमकिशोर 'पटाखा' ने चुनाव के गिरते हुए मूल्यों की यथार्थ अभिव्यक्ति प्रस्तुत की हैं-

होना है चुनाव, हर नेता तेरे कस्बे में,
मुखड़े पे, नयी मुस्कान ले के, आएगा,
लूट लेगा देश को लुटेरा, पर तेरे लिए,
'बचत करो' का अभियान ले के आएगा।
वोट दे के, जीवन का दान, देगा जिसको तू,
वही तेरी मौत का सामान ले के आएगा।
झोपड़ा जो फूस का है- फुंकवा बैठेगा उसे
कौन रोटी, कपड़ा, मकान ले के आएगा। 28

आज के आपाधापी युग में मनुष्य विपरीत परिस्थितियों से गुजरनें के बाद अपनी बुद्धि का प्रयोग भी करने लगा है। चुनावी नीतियों को देखकर आज के मतदाता

आसानी से वोट नहीं देते है। आज के नेताओं को मतदाताओं के पैर तक छूने पड़ते है। चुनाव की ऐसी स्थिति पर कवि सुरेश नीरव ने व्यंग्य दोहे का निर्माण किया है।

उतरे नहीं बस, उसके ही कपड़े चुनाव में,
'वोटर' के पांव जिसने भी पकड़े चुनाव में। 29

आज के चुनाव के बदलते हुए परिवेश पर कवि ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये है। जिसमे आज के चुनाव की परिस्थिति को बताया गया है। आज के नेता चुनाव जीतने के बाद अपने निजी जीवन में लगे रहते हैं। और अपने मतदाता को भूल जाते है। इन चुनावी व्यवसाय की अभिव्यक्ति राजीव सक्सेना ने अपनी व्यंग्य कविता में की है।

यहाँ आते-आते कुर्सी से चिपक जाते है, लोग.
राष्ट्रीय धन को दोनो हाथो से लुटाते है लोग।
संसद को युद्ध का अखाड़ा बनाते है लोग,
लिबास बदल फिर वोट मांगने आते हैं लोग।
हमें फिर पाँच बरस तक भूल जाते हैं लोग। 30

आज के चुनावी दौर में नेता अपने स्वार्थ के लिये मतदाता के पास चक्कर लगाते है। मीठे-बोल बोलकर पूरे गांव के लोगों को बेवकूफ बनाते है। चुनाव की बदलती राजनीति पर कवि जय कुमार रुसवा से व्यंग्य कविता द्वारा निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य की है -

चुनावी दौरे में
नेताजी
मीठे बोल कर
फिर
पट्टी पढ़ा गये
पूरे गांव को
बांस पर
चढ़ा गये। 31

चुनाव के समय नेता मतदाताओं को प्रेम जताते है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये नेता जनता के बहुत ही हमदर्द है। परन्तु सत्ता प्राप्ति के पश्चात वह स्वयं में सिमटकर रह जाते है। चुनाव की यह स्वार्थपरक राजनीति पर कवि जय कुमार रुसवा

ने यह व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है-

उम्मीदवार वो थे तो
प्रेम का नाम
रट-रट कर चले
प्रेम से गले
लिपट-लिपट कर चले
और जीतने के बाद
मतदाताओं से
हट कर चले
अपने में सिमट कर
सबसे कट कर चले
जहाँ से चले थे
उधर न कभी पलट कर चले। 32

आज राजनीति में अनेक भ्रष्टाचार विकृतियों का समावेश हो गया है। आज के नेता दो तरह के व्यवहार करते है। चुनाव आने से पूर्व ये नेता जनता की परेशानी दूर करते है। उनके सगे बनते है। उनका रूप बदल जाता है। चुनाव के समय रामनामी चादर ओढ़कर सामने आते है। चुनाव के समय होने वाले परिवर्तन पर कवि अशोक चक्रधर ने आधुनिक नेताओं के बदलते रूप पर तुलनात्मक व्यंग्य किया है।

एक-चुहिया
दौड़ी-दौड़ी बिल में आई
चूहों के सामने चिल्लाई-
ऊपर दो बिल्लियाँ
बातें कर रही हैं।
रामनामी ओढ़कर
सबसे मुलाकातें कर रही हैं।
अपने पंजों के
सारे नाखून
कटाकर आई हैं,
पड़ोस के चूहों को

पटाकर आई हैं,
कहती हैं–
हमारी अन औथराइज्ड चूहा कॉलोनी नंबर दो को भी
पास कर दिया जाएगा,
बिजली पानी का
इंतजाम भी
खास कर दिया जाएगा।
एक बुजुर्ग चूहा बोला–
चुप रहो,
उनकी बातों में मत रहो
अपना तो इस बिल के
अंधेरे में ही उजाला है,
पर लगता है जंगल में
चुनाव आने वाला है। 33

आज के चुनावो वातावरण में विकृतियों का अधिकता बढ़ रही है। चुनाव के समय चारों ओर शोर होता रहता है। प्रत्याशी अपनी-अपनी पार्टी को जिताने की कोशिश मे लगें रहतें है। आज के युग में प्रत्याशियों की छवि दिन पर दिन खराब होती जा रही हैं, आज के चुनाव में योग्य व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं करता है। चोर, डाकू ही सफलता प्राप्त करते है। बढ़ती हुई चुनावी विद्रूपताओं विसंगतियों पर कवि धूर्त बनारसी नें व्यंग्य कविता द्वारा प्रस्तुत किया है।

फिर वही चुनाव।
कौवे सा काँव–काँव॥
किसी की मझधार में नाव॥
तो कही दाँव पर दाँव, दाँव पर दाँव॥
एक सी ख्वाइस।
और एक ही च्वाइस ॥
कि बस, किसी भी तरह सत्ता पर आ जायें।
और बचे हुए देश को, पूरा का पूरा खा जायें॥
कोई बालि कोई खरदूषण।

कोई रावण तो कोई कंस का कुल भूषण।।

और यही नहीं नटवर लाल की छाप

और परिणाम यह निकला कि चुनाव मैदान में, केवल

कल्ली जी और डाकू जी ही आमने-सामने।

इस समाचार को सुनकर, लोग लगे दिल को थमाने।।

और यही नहीं इन दोनों ने दूसरे-दूसरे निर्वाचन क्षेत्रों से भी अपना नाम था भरा।

वाह रे लोकतंत्र, एक तरफ कल्ली जी और एक तरफ डाकू।

वोट पड़ने का क्रम जारी।

कभी कल्ली पर डाकू, तो डाकू पर कल्ली भारी।

ड्यूटी पर तैनात, पुलिस कर्मियों को पटाया, पानी रास्ते का पत्थर हताया।

और मोर्चा डटाया।

और फिर, दनादन, फायरिंग का सिलसिला।

मतदाता दुब दबा कर हिला, न कोई शिकवा नगिला।।

अचानक, एक हैवी पर्स नालिटी वाला हथियारबंद व्यक्ति मतदान केन्द्र पर आया।

और कान में कोई नया गूढ़मंत्र भी बतलाया।।

गूढ़मंत्र सुनते ही, कुल्ली जी और डाकू दोनों ही हो गये प्रसन्न।

क्यों कि दोनों की जीत आसान

एक यहाँ से जीतेगा, दूसरा वहाँ से।

अरे, मंजिल एक ही तो पहुँचना है चाहे बॉजदहाँ से।।

हथियारबंद व्यक्ति, किसी सर्कस का मास्टर आफरिंग था।

अरे भाई साहब वह इस जिले का सबसे बड़ा माफियाकिंग था।

आश्चर्य की चुनाव में सुधार हेतु।

असामाजिक तत्वों हेतु, ग्रह केतु।।

जनता और कर्णधार के मध्य सेतु।। 34

आज के चुनावी आवरण में बेईमानी, स्वार्थ लिप्सा, अनैतिकता की अधिकता हो गयी है। आज के नेता चुनाव के समय अपना रूप बदल देते है। ईमानदारी से सबके साथ व्यवहार करते है। उनका यह व्यवहार सिर्फ चुनाव के समय देखने को

मिलता है। चुनाव जीतने के बाद उनकी स्वार्थ की राजनीति शुरु हो जाती है। नेताओ की बदलते हुयें रूपों से चुनाव प्रक्रिया भ्रष्ट हो गयी है। आज की बढ़ती हुई चुनावी विद्रूपताओं पर कवि अशोक चक्रधर ने व्यंग्य किया है।

एक नन्हा मेमना
और उसकी मां बकरी
जा रहे थे जंगल में,
राह थी सकरी,
अचानक
सामने से
आ गया एक शेर
लेकिन अब तक तो
हो चुकी थी बहुत देर
भागने का नहीं था
कोई भी रास्ता
बकरी और मेनने की
हालत खस्ता।
बकरी लगी जैसे-तैसे
बच्चे को थामने।
छिटक कर बोला
बकरी का बच्चा-
शेर अंकल
क्या तुम हमें खा जाओगे
एकदम कच्चा?
शेर मुस्कुराया
उसने अपना भारी पंजा
मेमने के सिर पर फिराया-
हे बकरी कुलगौरव
आयुष्मान भव।
चिरायु भव।

दीर्घायु भव।
उछलों कूदों, नाचो
और जीओ हंसते हँसते
अच्छा बकरी मैया नमस्ते
इतना कहकर शेर
कर गया प्रश्थान
बकरी हैरान-
बेटा ताज्जुब है,
भला ये शेर किसी पर
रहम खाने वाला है,
लगता है जगंल में
चुनाव आने वाला है। 35

आज के बदलते युग में राजनैतिक क्षेत्र में विशेषरूप से विसंगतियों का समावेश हो गया है। सत्ताधारी नेता सत्ता प्राप्ति के लिये विशेष चुनाव का आयोजन करते है। और जनता को चुनावी प्रक्रिया में मूर्ख बनाकर जीत जाते है। इन चुनावी विसंगतियों पर कवि उमाशंकर मनमौजी ने व्यंग्य कविता की यह पंक्तियाँ दृष्टिव्य की है -

नेता भाषण दे रहे, करके निज-गुणगान।
भीड़ भयंकर देखकर, फूल उठे श्रीमान॥
फूल उठे श्रीमान, अन्त आभार जताये -
'धन्यवाद ! जो भीड़ बनाकर सुनने आये।'
कहँ 'मनमौजी' तभी किसी की आवाज आई -
'भीड़ तो होगी, आज पेंठ का दिन है भाई।' 36

आज के चुनावों में विसंगतियाँ, भ्रष्टाचार बेईमानी आदि की अधिकता हो गयी है। सत्ता धारी नेता चुनाव जीतने के बाद सिर्फ अपनी तिजोरी भरते है। अपने स्वार्थ के लिये स्वतः चुनाव कराते है। आज के चुनाव जनता के हित में नहीं होते है। चुनाव की बदलती हुई प्रक्रिया से जनता को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इन परिस्थितियों पर काका हाथरसी ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

गांधी जी का चित्र लगाकर, जन-गण-धन पर डालें डाका,

जाने कब कुर्सी छिन जाए, फिर कैसे जीएँगे काका।
खोलेगें अगले चुनाव में,भर लें आज तिजोरियाँ,
गणपति बापा.....37

काका हाथरसी ने चुनाव में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है, कि सत्ताधारी नेता चुनाव जीतने के बाद भ्रष्टचार की नीति अपनाते है। आज के युग में चुनाव में गुण्डों की ज्यादा जरुरत होती है जिनके डर से प्रत्याशी वोट देते है। अजा के चुनाव प्रजातंत्रिक नहीं रह गये है। ये चुनाव जनता की इच्छा के विरुद्ध हो रहे हैं। चुनाव में बढ़ती हुई भ्रष्ट राजनीति पर कवि ने व्यंग्य द्वारा यह कविता प्रस्तुत की है-

दर्पण रखकर सामने अपना रूप निहार
होकर खड़े चुनाव में, करों देश उद्धार
करो देश-उद्धार, जोड़ गुंण्डो से नाता
जिनकी सूरत देख काँप जाए मतदाता
कहँ काका जो निदा करते नहीं अधाएँ
वही विरोधी तुम्हें वोट देने को आएँ। 38

काका हाथरसी ने चुनाव की बढ़ती हुई विद्रूपताओं पर व्यंग्य किया है। कि चुनाव की प्रक्रिया भ्रष्ट, झूठ-फरेब मक्कारी से परिपूर्ण हो गयी है। इस भ्रष्ट चुनाव की प्रक्रिया से देश पतन की ओर जा रहा है। लोगों की समस्याएँ बढ़ती जा रही है। कवि ने चुनावी भ्रष्टाचार पर व्यंग्य का कुठाराघात किया है -

एक्सपर्ट इस आर्ट केकर बुर्के की ओट
दे सकते हैं आपको, मुर्दो के कुछ वोट,
मुर्दो के कुछ वोट, नोट जब पा जाते हैं
मियाँ वहीय 'वहीदन' बनकर आ जाते है
कहँ 'काका' कवि झूठ-फरेब जाल-मक्कारी,
यह चुनाव का धर्म, जानते सब संसारी। 39

आज के आपाधापी जीवन में भ्रष्टाचार की अधिकता बढ़ रही है। जिसमें राजनैतिक क्षेत्र में इसका अत्यधिक प्रभाव बढ़ रहा है। देश में चुनाव योग्य व्यक्ति को चुनने के लिये किये जाते थे। परन्तु आज चुनाव रिश्वत के बल पर जीते जाते है। चुनाव में बढ़ती हुई विसंगतियों पर काका हाथरसी ने यह व्यंग्य कविताएँ प्रस्तुत की

है।

वोटर बोला दाबकर, दस रूपए का नोट,

दे सकता हूँ आपको अपना सिंगल वोट

अपना सिंगल वोट, नोट, यदि दूजा पाऊँ

घरवाली का वोट आपको और दिलाऊँ

कहँ 'काका' कवि, होय जुगल जोड़ी के धंधे

भजत रहु भगवान। आँख के ऐसे अंधे। 40

काका हाथरसी ने चुनाव प्रक्रिया में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार धोखेबाजी के धंधों को देखखर चुनाव पर व्यंग्य किया है। प्रत्याशी चुनाव के समय विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर जीत जाते है, और मतदाता पाँच साल तक इन झूठे वायदों का इन्तजार करता रहता है। कुछ व्यंग्य कविताएँ इस संदर्भ में दृष्टव्य है।

अगर चुनावी वायदे, पूर्ण करे सरकार,

इंतजार के मजे सब, हो जाएँ बेकार। 41

आज के आधुनिक युग में चुनाव की स्थिति भ्रष्ट हो गयी ही प्रत्याशी ईमानदारी से चुनाव नहीं जीतते है। बेईमानी के अपनाकर ही जीते जा रहे है। इस संदर्भ में व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

होगे आम चुनाव जब, यत्र-तत्र-सर्वत्र,

मतदाताओं को मिले, फोटो परिचय पत्र।

फोटो परिचय पत्र, मुखौटे चार मँगाओ,

अलग-अलग शक्लों के फोटो चार खिंचाओ।

चार नाम से वोट आपके चार पड़ेंगे।

इस युक्ती से शकधर भी शक नहीं करेंगे। 42

आधुनिक युग में मतदाता विशेष कठिनाइयों का सामना कर रहे है। आज के प्रत्याशी का समाज मे दो प्रकार के व्यवहार कर रहे है। चुनाव जीतने के बाद उनका समाज के कार्यो में कोई चिन्ता नहीं रहती है। इन बदलते हुए व्यवहारों पर कवि काका हाथरसी से व्यंग्य किया है।

मतदाताओं का आश्वासनों से मन भर दो

विजयश्री के पश्चात् सम्बन्ध कट कर दो। 43

आज के युग में बड़ी पार्टी के प्रत्याशी मेहनत किये बिना ही जीत जाते है।

आज की बदलती चुनावी परिस्थिति पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य कविता दृष्टिव्य की है।

चक्कर चला चुनाव का, करने लगे रिसर्च,
मैटर, वैटर मिल गया, हुआ नहीं कुछ खर्चा
हुआ नहीं कुछ खर्च, टिकिट लेने को जाते,
पार्टी–पापा के चरणों में अश्रु बहाते।
विजयीश्री के धनी चैन की निदिया सोएँ।
जब्त जमानत वाले नौ–नौ आँसू रोएँ॥ 44

भारत में भ्रष्टाचार तीव्र गति से बढ़ रहा है। इसका श्रेय राजनीति को ज्यादा दिया जाता है। राजनीति में चुनाव को लेकर अत्यधिक विकृतियाँ बढ़ गयी है। चुनाव देश के हित के लिये नहीं हो रहे है। चुनाव ओलम्पिक बन गये है। आज यह स्थिति हो गयी है कि प्रत्याशी चुनाव जीतने से पहले ही यह सोचने लगता है कि कितना पैसा कमाना है और कैसे कमाना है। चुनाव की इन विपरीत परिस्थितियों को देखकर कवि काका हाथरसी ने निम्न पंक्तियों में व्यंग्य का प्रहार किया है-

आगामी चुनाव में मेरा लग सकता है दाँव
इसी कल्पना से मन ऐसे दौड़ हा है,
जैसे ओलम्पिक में घोड़ा।
अगर न अटका कोई रोड़ा
और मिल गई सीट।
तो घर के आँगन में जड़वा दूँ सोने की ईट। 45

राजनैतिक क्षेत्र में चुनाव ने व्यवसाय का रूप ले लिया है। प्रत्याशी चुनाव में अपनी तमाम मनोकामना लेकर खड़े होते है। कि उनके जीवन में सार्वागीय सुख मिल जायेगा। भेंट, उपहार मिलेगें आजकल के चुनाव प्रत्याशी अपनी आशाये पूर्ण करता है। उसे देश की चिन्ता नहीं रहती है। इस विषेष को देखकर काका कवि ने व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की है -

उदारता की खोलूँ खत्ती,
दस हजार के नोटो पर,
होकर निःशंक रख दूँगा बत्ती।
तेल तिली से निकला करता,

लग जाता है जितना
उससे कई गुना वापस आता है.
यह चुनाव का सार,
बिना बुलाये चले आयेगे
भेंट और उपहार। 46

आधुनिक युग की चुनाव लीलाओं को देखते हुए कवि अल्लहड़ बीकानेरी ने व्यंग्य द्वारा चुनावी वातावरण को प्रस्तुत किया है। कि जब चुनाव का समय आता है तो ऐसा प्रतीत होता है, कि शादी का वातावरण बन गया है। आज की चुनाव लीलाओ के दिखावे पर व्यंग्य किया गया है।

वेला आई पाणि- ग्रहण की,
पल में वातावरण तन गया।
दल-बल सहित भिड़े नेतागण,
देवासुर संग्राम तन गया
माइक-नाद दसों दिस गूँजा। 47

आज के बदलते हुए परिवेश में राजनैतिक क्षेत्र में अत्यधिक प्रभाव पड़ रहा है। चुनाव का उद्देश्य आधुनिकता में बदल गया है। चुनाव तो एक पर्व के रूप में मानाकर लोग मजे लूटते है। जनता को गलत प्रत्यासियों को वोट देनां पड़ जाता है। उनकी यह मजबूरी होती है। प्रत्याशी जनता को आश्वासन देते हैं। कि इस बार रामराज्य लायेगें राजनीति के झूठे आश्वासनों पर कवियत्री सरला भटनागर ने व्यंग्य किया है-

आलोक पर्व मना चुके
खूब खुश हुए,
जी भर के पटाखे चलाए
फूंकी कई दुकानें
घर और झोपड़ियाँ
और अब तैयारी है
दूसेर पर्व की
पर्व तो है
पर वह बरसाता है।

अन्धकार नैराश्य और विसंगति।
मन न भीचाहे तो भी
आप
करेंगे उनकी आगवानी
जो
पुराने बदनाम चेहरों पर
मुखौटे चढ़ाए
झेलियाँ फैलाए
राष्ट्र पिता गाँदी और जय प्रकाश
की कसम उठाए
आंएगे घर घर द्वार-द्वार
वोट दो वोट दो एक बार फिर
इस बार हम
राम राज्य लाएँगे
आँखो में आंसू भरे
पिलाएँगे भाषण॥
हम तुम सब उनकी बातों में
आ जाएँगे फिर से-
फिर से थमा देंगे उन्हें
अपने भाग्य का कटोरा।
अपने भाग्य को कोसते रहेंगे।
चुनाव को टोकते रहेंगे। 47

राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि अशोक आनन ने व्यंग्य किया है। कि चुनाव के समय नेताओं की क्या स्थिति होती है।

उन्होंने निवेदन कर
जूता-विक्रेताओं से कहा-
'चुनाव नजदीक हैं,
प्लीझ।
हमारी प्रतिष्ठा का भी

जरा ध्यान रखिएगा
संभव हो तो-
कुछ दिन अपनी दुकान बंद रखिएगा। 48

आधुनिक युग में बदलते वातावरण में राजनीति के मूल्य भी बदलते जा रहे है। चुनाव के समय झूठे आश्वासन, दिलासा, दी जाती है। चुनाव की इन परिस्थितियों पर कवि कृष्ण 'मनु' ने व्यंग्य किया है -

फिर आया चुनाव
आश्वासनों की लहरों पर
बहेगी फिर
कागज की नाव। 49

समाज में बदलते परिवर्तन के साथ ही राजनीति में विशेष रूप से परिवर्तन पाये जाते है। आज के चुनाव में भ्रष्टाचार की अधिकता पायी जाती है। आज के चुनावी दिखावे से समाज के व्यक्ति मजदूरी करनेवालों का जीना मुश्किल हो गया है। चुनाव के बदलते रूपों पर कवि शरीफ भारती ने व्यंग्य कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखी है-

चुनावी शोर-शारबे से थका मजदूर
अभी-अभी सोचा था
नींद की पहली पारी में ही खोया था
कि तभी अचानक एक झन्नाटेदार थप्पड़
उसके गाल पर पड़ा
मजदूर तिलमिलाकर बिस्तर से हो गया खड़ा।
मजदूर बोला-
माई बाप,
जरा सोचे आप
यदि सभी उम्मीदवार
अपने निशान इसी तरह बताएँगे
तो हम तो मारे जाएँगे।
हँसिया-हथोड़े वाली पार्टी के आ गए
तो हम कहाँ जाएँगे?

मजदूर था परेशान
कैसे प्रत्याशी, कैसे निशान।
कहीं बहँसिया-हथौड़ा,
कहीं हाथी, कहीं तीरकमान
पर देखो विधि का विधान
इन आतंकी प्रत्याशियों की धमकी से
मजदूर तो डर गया,
और बिना वोट डाले ही
इस संसार से कूच कर गया। 50

कवि अशोक अंजुम ने राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। आज के युग में चुनाव जीतना बहुत मुश्किल हो गया है। योग्यता पर चुनाव नहीं जीता जा सकता है। जिसके पास गुण्डे और ताकत है वही चुनाव में जीते जाते है। इन परिस्थितियों परकवि अशोक अंजुम ने निम्नांकित पंक्तियाँ लिखी है-

कमज़ोर सीढ़ियाँ थी, ऊपर ही क्यों चढ़ा था?
जब दीखता था गड़ढ़ा, आगे ही क्यों बढ़ा था?
अब हार के बैठा तो सब दे रहे नसीहत-
'जो पास न थे गुड़े, चुनाव क्यों लड़ा था?' 51

आधुनिक युग में समाज में विकृतियों का अत्यधिक समावेश हो गया है। आज के नेता सिर्फ अपने स्वार्थ के लिये कार्य करते है। उन्हें चुनाव में किस तरह जीतना है उसके लिये हर प्रकार के हथकण्डे अपनाते है इन स्थितियों को देखकर कवि अशोक भाटी ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है-

चुनाव -प्रचार का जोर था
चारों तरफ़ शोर था
नेताजी स्वभाव से रूखे थे
और सुबह से भूखे थे
प्रत्याशी को दे रहे थे गाली
कंजूस ने पाँच लाख की थैली दबा दी
इसके लिये कब तक फिरें मारे-मारे
थकान कहाँ जाकर उतारें? 52

आज के समाज में चुनाव होना जनता की समस्याओं के बढ़ाना है। चुनाव होने पर महँगाई बढ़ जाती है। जिससे समाज को कठिनाइयाँ में से जीना पड़ता है। राजनीति की बढ़ती हुई विकृतियों को देखकर कवि बालकृष्ण गर्ग ने आज की चुनावी राजनीति पर व्यंग्य किया है-

वोट लेने चले आ रहे हैं वे फिर
जान कैसे छुड़ाएँ नए साल में
है सभी तो हमारे, किसे छोड़ें फिर
ठप्पा सब पर लगाएँ नए साल में
जीतकर आ गए 'बाल' पॉवर मे यदि
आँख भी क्यों मिलाएँ नए साल में। 53

आधुनिक राजनीति में चुनाव में बदलती परिस्थितियों पर कवि हलीम आईना ने व्यंग्य किया है। कि चुनाव शुरू होते है जयकार के नारों से पृथ्वी आकाश एक हो जाते है। चारो तरफ प्रत्याशी अपने-अपने वादों की बौछार करते है। चारों तरफ शोर होता है प्रत्याशी एक-दूसरे पर झूठे आरोप लगाते है। इस सल्तनत के पाने के लिये हर आदमी जोर लगाता है।

चुनाव की इन परिस्थितियों पर हास्य-व्यंग्य द्वारा निम्न पंक्तियाँ उद्घाटित की है-

दरियादिल सरकार, इलैक्शन आया है।
वादों की बौछार, इलैक्शन आया है।
कविताबाजी में भैया रक्खा है क्या,
नेता का बन यार, इलैक्शन आया है।
संसद से सड़कों तक मेढ़क टर्राए,
साँपों का दरबार, इलैक्शन आया है।
रैली और आरक्षण के हंगामों ने,
खूब रँगे अखबार, इलैक्शन आया है।
इक दूजे पर कीचड़ फेंक रहे चमचे
होली-सा त्यौहार, इलैक्शन आया है।
गिरगिट-किन्नर नाचे-गाएँ मस्ती में,

जनता तालीमार, इलैक्शन आया है।

कर गुंडों की खेप खाना बस्ती को,

मानवता को मार, इलैक्शन आया है।

अब तो ये गणतंत्र हुआ है दल दल सा,

लोक हुआ लाचार, इलैक्शन आया है।

तू भी उतलू सीधा कर 'आईना' जब,

सब हैं पाँकिटमार, इलैक्शन आया है। 54

आज के नेता अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए गलत हथकण्डों का प्रयोग करते है। चुनाव जीतने के लिये झूठे वादे करते है। हारने के बाद भी इन प्रत्याशियों की इतनी पहुँच होती है कि कोई न कोई रास्ता निकाल लेते है। जी हुजूरी करके पद प्राप्त कर लेते है। राजनीति के बदलते हुए रूप को कवि डॉ. गोपाल बाबू शर्मा ने व्यंग्यात्म शब्दों में प्रस्तुत किया है -

मिले दो नेता

एक चुनाव में हारे हुए।

दूसरे, वक्त के मारे हुए

क्योंकि

वे जिस मंत्रि-मण्डल में थे

अकस्मात् हो गया फेल।

बिगड़ गया

बनां-बनाया खेल।

दोनों नेता

करने लगे परस्पर सवाल-

कैसे हैं; हाल-चाल ?

पहले ने कहा-

'क्या बताऊँ यार

मेरी सगी पत्नी ने ही किया,

मेरे खिलाफ प्रचार

वह लोगों से

कहती रहती थी अक्सर

कि मैं कभी भी
अपना किया हुआ वायदा
निभा नहीं पाता हूँ,
वक्त से पहले ही
अकर्मव्यता की परिधिमें
ढ़ेर हो जाता हूँ।
उन्होंने मुझको चुनाव में
नहीं दिया वोट
और मैं गया हार।
खेर, नहीं है कोई ममाल
क्योंकि हाई कमान का
मेरे ऊपर है हाथ,
जल्दी ही बन जाऊँगा मैं
कहीं न कहीं का राज्यपाल।' 55

आज के नेतागण अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये चुनाव में राजनीति का सहारा लेते है। चुनाव के समय हलचल शुरू हो जाती है। देश में राजनीति की ऐसी महामारी फैली है। चुनाव में पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता है चुनाव में फैलने वाली विकृतियों पर भागीरथ बड़ोले ने व्यंग्य कविता द्वारा पंक्तियाँ लिखी है-

गली-गली में महक रही है,
हवा चुनावी चहक रही है।
साँझ-सकारे द्वारा-द्वारे
दौड़ रहे चिंतित हरकार,
दलदल में दुबके बेचारे
पाट रहे इस दौर दरारें।
उमड़े कहीं खयाली बादल
नई बिजलियाँ चमक रही है।
जाने कितने रिश्ते पिछले,
जाने कितने नाते निकले
वह सदा जो छिछळे-छिछले

नए जोश में जमकर मचले,
मोल भाव का मादक मौसम
यह मनमौजी बहक रही है। 56

कवियित्री सरला भटनागर ने चुनाव के समय नेताओं की स्थिति बाल मनोवृत्ति हो जाती है इस पर व्यंग्य किया है। चुनाव के समय समाज का वातावरण किस प्रकार बदल जाता है। सभी प्रत्याशी खूब शोर-शराबा करते है। एक दूसरे पर कीचड़ उछालते है यानि गलत आरोप लगाये जाते है -

बाल मनोवृत्ति पायी सब नेताओं ने
अड़गम बड़गम बोला खूब सभाओं में
सब ने ही सब पर थी कीचड़ खूब उछाली
दल-बदलू ले अपनी दौड़े लोटा थाली
बार-बार बिखरे टुकड़ों को लाकर जोड़।
बार-बार जोड़ी हाँडी को फिर से तोड़ा। 57

2. प्रतिनिधि चरित्र

नेता चरित्र : आज के राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिनिधि चरित्र के रूप में नेता उभर के समाज के सामने आये उनका चरित्र गिर चुका है। पहले के नेता देश के लिए अपने को बलिदान कर देते थे। परन्तु आज के नेता तो देशकी बलि चढ़ा रहे हैं। ये नेता अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिये अपने चरित्र का पतन कर रहे है। ये घोटाले, चाराकाण्ड, बेईमानी सभी गलत हथकण्डों को अपनाते है।

1060 के बाद भारत देश की उन्नति के उद्देश्य से एवं जनता के कल्याण हेतु कई सरकारी योजनाये बनायी गयी और जिनके अमल के लिये कर्ज लिये गये, किन्तु देश के भ्रष्ट राजनीतिज्ञों की स्वार्थी मनोवृत्ति के कारण ये योजनायें जनता तक नहीं पहुँच सकी। केवल कुछ व्यक्ति इनका लाभ उठा सकें।

आज वर्तमान काल में अनैतिकता, अनाचार, भ्रष्टाचार स्वार्थ आदि कई कुप्रवृत्तियाँ राजनीति का अंग बन गयी हैं। उपज की भ्रष्ट राजनीति से आम आदमी दूर भागने लगा है। 'अब राजनीति से सद्‌गुण नहीं रह गये एक विषैला हस्तकौशल बन गया है। आज राजनीति में नेताओं में ईमानदारी नहीं रह गयी है'। 58

आधुनिक युग के राजनेताओ ने राजनीति को व्यवसाय अपना कमाने का जरिया बना लिया है। राजनेताओं के चरित्र में अनैतिकता, चरित्र हीनता, बेईमानी

आदि का समावेश हो गया है -हिन्दी साहित्यकारों ने भी वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट चरित्र पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। राजनैतिक जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं और नेताओं के चरित्र पर हास्य-व्यंग्य साहित्य के द्वारा तीखा प्रहार किया है। राजनेताओं की कारगुजरियाँ, उनके चरित्र, कथनी और करनी में अन्दर, स्वार्थी मनोवृत्तियों, रिश्वतखोरी, भ्रष्टचार नौकरशाही, अफसरशाही, आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था, गरीब और निरीह जनता का शोषण आदि अनेक स्थितियों पर हास्य-व्यंग्य साहित्य के द्वारा उजागर किया है। 59

26 जनवरी 1950 को स्वतंत्र भारत के संविधान का अमल आरम्भ हुआ किन्तु स्वतंत्रता के बाद राजनीतिज्ञों ने लोकतंत्र की सारी मर्यादाओं को भंग कर दिया। यद्यपि जनतांत्रिक शासनप्रणाली सभी शासन प्रणालियों में सहज और श्रेष्ठ होती है, किन्तु भारतीय जनतंत्र का रूप कुछ इस प्रकार से बिगड़ गया कि समाज मे व्यक्ति को जीना दूभर हो गया है। जनतांत्रिक प्रणाली के दो-तीन दशकों को देख-समझने के बाद आज के हास्य-व्यंग्यकारों ने यह निष्कर्ष निकाला कि हमारी प्रजातांत्रिक शासन-व्यवस्था ने सुख-सुविधाओं के स्थान पर दुःख और आभाव ही दिये है। आज हमारे देश में प्रजातंत्र एक दिखावा मजाक बनकर रह गया है इसलिये व्यंग्यकारों ने लोकतंत्र को बदलने वाले राजनीतिज्ञों पर कटाक्ष किया है। 60

नेता चरित्रः

कवि मिश्रीलाल जायसवाल ने नेताओंके बदलते हुए चरित्र पर हास्य-व्यंग्य कविता प्रस्तुत की है इस कविता से स्पष्ट होता है कि देश की राजनीति विद्रूपतायें दिन पर दिन बढ़ रही है, और इसमें राजनेता सहयोग देते है। आज के नेताओं का चरित्र बदल गया है। अपनी सुख-सुविधाओं के लिये नेता का पद प्राप्त करते है देश की कोई फिक्र नहीं हैं। पहले ने नेता देशके प्रति अपनी बलि चढ़ा देते थे आज ऐसे नेताओं को सपने में भी नहीं देखा जा सकता है। जो देश के हित के लिये सोचे।

देश के लिये
फाँसी चढ़ जाएँ
अभ ऐसे कहाँ नेक हैं
त्याग की इस गंगा को
गंदा करने के लिए
एक ही काफी था

यहाँ तो अनेक हैं। 61

कवि परमेश्वर गोयल ने राजनीति में फैलती हुई विकृतियों को देखकर नेताओं के बदलते चरित्र पर व्यंग्य किया है। आज के नेता राजनीति में आकर भारतीय संस्कारों को भूल गये है। इस पर व्यंग्य पंक्तियाँ द्रटव्य की है-

'रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीता राम'
गाने वाले गाँधी बाबा।
ईश्वर-अल्लाह एक ही नाम
सुनते रहे, लिखते रहे
नियमित हर शाम
पर आज आपके ही
इन तथा कथित अनुयायिओं में
समग्र भाव ऐसा कहाँ खो गया?
****
जो हमारे देश में
फिरंगी नहीं कर पाए
नेता करके दिखाएँगे
अपनी राष्ट्रभाषा
राष्ट्रप्रेम तो पहले ही
पचा चुके है।
अब अपनी भारतीय संस्कृति,
अपने संस्कार
सब कुछ पचा जाएँगे। 62

दल-बदल की राजनीति में आज के नेताओं का चरित्र सर्वोपरि है। शासन करने वाले राजनेताओं में सबसे ज्यादा अस्थिरता दल-बदल की नीति पायी जाती है। जिससे सरकार की स्थिति डामाडोल हो रहीं है। राजनेताओं की इन विकृतियों को देखकर कवि टी.एन. राज ने व्यंग्य पंक्तियों द्वारा कटाक्ष किया है।

आजाद वतन के आँगन में तुम लूट मचाओ नेताजी।

***

तुम मक्कारों की दुनिया के, इन जाने-माने रुस्तम हो।
अपराध जगत के भीतर भी, कुछ नाम कमाओ नेताजी॥
जब खुद्दारी को ढ़ोने में, पहचान अपनी खो बैठो।
दल-बदली करके एक नया दल, रोज बनाओ, नेताजी॥ 63

आधुनिक समाज में राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार व्याप्त है। एक नेता जिस पर समाज का विश्वास टिका रहता है। जनता अपना भविष्य मानती है। यह विश्वास टूट चुका है। आज के नेता जीतने के बाद सब कुछ भूल जाते है। आज के नेताओं बदलते हुए चरित्र पर कवि सुरजीत नवदीप ने हास्य-व्यंग्य पंक्तियाँ द्रष्टव्य की है।

जहां पर भूख का मारा एक नेता घास खा जाए,
जो नजता का दिया हुआ, प्यार और विश्वास खा जाए,
वह आदमी होकर भी पूरा हैवान है दादा।
ये हिन्दूस्तान है दादा॥
विधान सभा और संसद में लात-घूँसे चलते हैं,
राजनीति के नाम पर चोर, डकैटा, गुंडे पलते है,
फिर भी जनता की नज़रों में-ये भगवान है दादा।
ये हिन्दुस्तान है दादा॥ 64

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार अति तीव्र गति से बढ़ रहा है। राजनीति में भ्रष्टाचार की अधिकता ज्यादा है। राजनेता बड़े-बड़े घोटाले करते है और पहले के शासक अपने देश हित के लिये बलिदान देते थे। परन्तु आज के शासकके मन में देश भक्ति और हित की भावना नहीं रह गयी है। आज के राजनेताओं के बदलते हुए चरित्र पर कवि अमृत लाला मालवीय ने व्यंग्य द्वारा पंक्तियाँ प्रस्तुत की है -

तुलसी दास जी रामायण लिखकर
जग को धन्य कर गए।
पर येतो उनसे भी आगे बढ़कर
कर्मकाण्ड की बीलवेदी चढ़ गए।
इनकी रामायण हत्याकांड, बलात्कार,
बोफोर्स, प्रतिभूति, शक्कर और सेंटफिट

से होकर सांसद खरीद तक चली गयी
चारा घोटाला तो किसी काण्ड का
एक हिस्सा है।
यह तो हवाला कांड तक चली गयी। 65

आधुनिक युग में नेताओं में भ्रष्टता पूर्ण रूप से बढ़ गयी है। इस देश के प्रति जहां शहीदों का खून बहा था वहाँ पर आज गद्दार नेता अपना अधिकार समझ कर प्रभुत्व स्थापित किये हुए है। आज के नेता राजनीति में जाकर सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त करते है इस बदलते हुए परिवर्तन परकवि डॉ. उर्मिलेश ने व्यंग्य किया है -

जहाँ शहीदों का कभी रक्त बहा निष्काम।
वहां बड़े आराम से छलक रहे हैं जाम॥
स्वागत होता द्वार पर भीतर मिलते माल।
कुछ नेताओं के लिये संसद है ससुरला॥ 66

भारतीय समाज में लोकतंत्र केवल नाम के लिए ही रह गया है। जनता का स्वयं अपना कोई अधिकार नहीं रह गया है। आज के नेता अपने स्वार्थ के लिये चुनाव जीतते है आधुनिक युग में सीधे-सरल व्यक्ति की जरूरत नहीं है। जिसके पास गुण्डे है भ्रष्टाचारी है उसी का समाज में बोलबाला है। आज की राजनीति में होने वाले परिवर्तन को देखकर कवि पुरुषोत्तम वज्र ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

आँख खोलकर देखो तो
कितना भ्रष्टाचार है
सारे नेता कामचोर मुस्टंडे है
कधों पर तो डंडे है,
और हाथों में खंडे है।
बड़ा वही कहलाता है,
जिसके जितने गुंडे है।
जनता भूखी-प्यासी है,
मालिक होकर दासी है।
अब जनता तैयार है।
सबको मिलक गाना हैं
बार-बार दोहरना है।

जनता से सरकार है,

जनता की सरकार है। 67

आज के युग में 'मानवीयता और आदर्श' शब्दकोश में ही रह गये है। अजा के नेता चुनाव में तरह-तरह के आश्वासन देकर चुनाव जीत जाते है, और अपने स्वार्थ हेतु कार्यो में जुट जाते है जीतने के बाद समाज की समस्याओं से इन्हें कोई सरोकार नही रहता है। आज के नेताओं की भ्रष्ट नीति को कवि योगेन्द्र मौद्‌गिल ने व्यंग्यात्मक शब्दों में लिखा है-

जनता बोली–
'क्यों नेताजी
हमने तुम्हें वोट देकर के
राजनीति की कुर्सी दी है,
तुमने इसके बदले बोलो
हम जनता को क्या लौटाया?'
नेता बोला– 'प्यारी जनता
मेरी भोली, न्यारी जनता
तुमने सौपी मुझको सत्ता
बदले में मैं क्या दे सकता
भ्रष्टाचार, घोटाला
चारा और हवाला
खुली जुबाँ को ताले दूँगा
आश्वासन हर बार मिलेंगे
पढ़ने को अखबार मिलेगें।' 68

हास्य व्यंग्य के कवि हुल्लड़ मुरादाबादी की दृष्टि में राजनीति में भ्रष्टाचार, विसंगतियों, विद्रूपताओं का समावेश अत्यधिक हो गया है। आज के नेता सत्ता प्राप्त करने के पश्चात अपार धन अपने पास इकठ्ठा करते है, और आज की युवा पीढ़ी बेकार समस्याओं से घिरी है। समाज में बिगड़ती हुई परिस्थितियों से नेताओं को कोई सरोकार नहीं है।

कोठी, बँगले, गुंडे, पैसा, नेता का इतिहास है,
नौजवान के हिस्से में तो कुंठा है, संत्रास है

संख्या नहीं बता पाओगे पढ़े-लिखे बेकारों की
आओं मिलकर हवा निकाले सरकारी गुब्बारोकी॥ 69

कवि अखगर पानीपती ने राजनीति में नेताओं के भ्रष्ट आदर्शो का पर्दाफाश किया है। आज के नेता जनता को कल्याण करने से विमुख होकर झूठे आश्वासन और भाषण देते है। यह नेता जनता को जीवन के बड़े-बड़े आदर्शों की बाते करते है पर जीवन में यथार्थ धड़ातल पर स्व-प्रतिष्ठा, यश, मान भूखे है। आज के नेता ऐसा गांधीवादी चेहरा पहने है कि इन्हें पहचानना मुश्किल है-

पहन मुखौटे इतम के, फितरत केऐयार।
चले सिखाते मंच से हमको शिष्टाचार॥
अवसरवादों के चंगुल में आजादी की शहजादी है।
पहचान करे कैसे इनकी हर चेहरा गाधीवादी है॥
ये राज है कैसा खोल जरा,
ऐ भारत माता बोल जरा॥ 70

कवि अरूण जैमिनी ने आज के नेताओं के चरित्र को देखकर नेताओं के ईमानदार न होने पर हास्य व्यंग्य तुकबन्धियाँ की है कि आज के युग में ईमानदार नेता मिलना मुश्किल हो गया है -

आपस में प्यार
भरा-पूरा परिवार
कल में आज
संगीत में रियाज
बातचीत का रिवाज
दोस्ती में लिहाज
सड़क किनारे प्याऊ
संबोधन में ताऊ
दो रूपए उधार
और नेता ईमानदार
ढूंढ़ते रह जाओगे,
ढूंढ़ते रह जाओगे, ढ़ँढ़ते रह जाओंगे। 71

कवि ओम प्रकाश आदित्य ने राजनीति में भ्रष्टा चरित्रवाले नेताओं पर व्यंग्य

किया है कि आज के चुनाव ने इस तरह कहर ढाया है कि सामाजिकता ईमानदरी का नाम-नहीं है। आज चुनाव में जीतने वाले प्रत्याशी पर देश हित के लिये नहीं सोचा जा सकता है कि अब देश उन्नति करेगा। आज के दोहरे चरित्र वाले नेता समाज की समस्याओं को बढ़ाते है।

फिर से चुनाव की लहर ने कहर ढ़ाया,
नदियों के साथ कैसे-कैसे नाले बह गए।
उल्लुओं को अंबुआ की डाल पर देखकर,
हौंसले बसंत के अनंत तक ढह गए।
भारत में कभी गंगू तेलियों का राज होगा,
जाते-जाते राजा भोज मंत्रियों से कह गए,
नेताओं के नाम पर केवल कलंक रह गए।72

आज के आधुनिक जीवन में अनेक समस्यायें बढ़ती जा रही है। इन समस्याओं का कारण राजनीति है। आज के नेता सरकार में आकर सिर्फ पैसा कमाने के सोचता राजनीति में आने से पहले नेता एक आम व्यक्ति ही क्यों न हो पाँच साल बाद वह अरबपति बन जाता है उसके लिये कोई समस्यायें नहीं होती, परन्तु समाज और जनता के लिये अनेक समस्यायें उत्पन्न कर देता है। आज नेताओं के गिरते हुए चरित्र पर कवि मूलचन्द 'नादान' लिखते है-

आपने किसी नेता पर गुस्सा दिखाया है।
क्या उस पर तैश आया है?
जो गंगू तेली से, राजा भोज
कैसे बन गया पता लगाया है?
पूछा है किसी नेता से
पाँच साल में कैसे बन गयीं पाँच-पाँच कोठियाँ,
कहाँ से आ गयीं चमचमाती कारें।
वो उसकी प्यारी घरवाली
घूमती थी फटी साड़ी में
कैसे लद गई सोने के जेबरों से
कहाँ से आया माल, है न कमाल॥
दिखाइए, दिखाइए तैश दिखाइए

किन्तु पहले

देश को ऐसे नेताओं से बचाइए।

ऐसे नेताओं से बचाइए। 73

भारतीय समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार में राजनीति में नेताओं के चरित्र में अत्यधिक भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। आज के नेता अपनी कुर्सी बचाने के लिये गलत कार्य भी करते है। आज के नेताओं में ईमानदारी नहीं रह गयी। जनता को नेताओं पर विश्वास नहीं रह गया है। इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। कवि सतीशचन्द्र कमलाकर की व्यंग्य पंक्तियों द्वारा नेता के चरित्र को उजागर किया गया है।

एक नेता जब मेरे घर आया

मैंने उसे एक गिलास दूध पिलाया।

वह बोला–

'आप मुझे कांफी, चाय या शर्बत पिलाते,

आपने मुझे दूध क्यों पिलाया है?

क्या माजरा है?

मेरी समझ में कुछ नहीं आया है।'

मैने कहा–

'आज नागपंचमी है, '

नेता और नाग

दोनों की राशि एक है

अब आप ही समझ लीजिए

यदि आपके पास बुद्धि, विवेक है। 74

आज का हिन्दुस्तान ज्यादातर गैर जिम्मेदार और भ्रष्टाचारी प्रतिनिधियों से भरा है। जिनमें अधिकांश प्रतिनधि शासक है। आज के शासक नेताओं को सिर्फ अपनी चिन्ता है। नेता को देश और जनता की कोई परवाह नहीं है। नेता इस तरह अपना काम निकालते है। कि जनता कुछ नहीं समझ पाती। नेताओं के इन दोहरे चरित्र पर कवि अतहड़ बीकानेरी ने व्यंग्य किया है–

हाथ मिले हनुमत के हमको, पाँव मिला अंगद का

जीवन भर के लिए लिखाया – पट्टा मंत्री पद का

बंदा, कल तक था पटवारी, जनता खड़ी तमाशा देंखे

पाँचो घी में आज हमारी, जनता खड़ी तमाशा देंखे,
हम है गुरु-घंटाल, हाथ का देखो जरा सफाई
चुपके से चल दिए, चाट कर मक्खन और मलाई
हँडिया हर्षद पर दे मारी, जनता खड़ी तमाशा देखे
लीला लोकतंत्र की न्यारी, जनता खड़ी तमाशा देखे। 75

आज की राजनीति इतनी भ्रष्ट हो गयी है आज के शासक जनता को प्रताड़ना दे रहे है। इनका कोई भरोसा नहीं रहा है। अपनी सरकार बनाये रखने के लिए आपस में दंगे करवाते है। घोटालें करते है। आज के नेताओं की भ्रष्ट राजनीति को देखकर कवि चक्रधर शुक्ल ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

बापू तेरे देश की
जनता हाल-बेहाल है,
नेताओं की मत पूछो
इसमें कौन दलाल है?
साक्षरता जारी है
पत्राचार भारी है
जुर्म किए संगीन हैं
पद पर वो आसीन है
काम बड़े सरकारी है
दिल के दौरे जारी है
पाचनशक्ति महान है
नेता ही भगवान है।
कँगला और कंगाल हैं। बापू तेरे देश... 76

नेताओं की दल-बदल की नीति पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है कि आज की राजनीति में गैर जिम्मेदार भ्रष्ट शासक ज्यादा हो गये है। उन्हें सिर्फ अपने स्वार्थ की चिन्ता नहीं रहती है आज के दोहरे चरित्र वाले नेता समाज की व्यवस्था बिगाड़ने में लगे है। ये नेता जब चाहे झूठ बोलकर दल-बदल सकते हैं।

कभी खत्म होगें नहीं,
राजनीति के युद्ध,
अर्थ और यश के लिए, चमचों बनों विशुद्ध।

नेता वही महान जो

भागे वोट बटोर,

पहले मीठा मुलायम, पीछे बने कठोर।

राजनीति के मंच पर,

मिले झूठ के ढूँठ,

या फिर इनकमटैक्स में, देख लीजिए झूठ।

लाट मार सिद्धांत को

प्राप्त करो धन-मान

दलबदलू बन जाइए, छोड़ धर्म-ईमान। 77

आज के आधुनिक युग में राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टचार बढ़ता जा रहा है। कुर्सी पाने के लिये यह नेता झूठे वायदें और आश्वासन देकर वोटों की भीख मांगते है। आज की राजनीति के लिए योग्य व्यक्ति की जरुरत नहीं है। जिस व्यक्ति के पास कत्ली, गुंडे होते है वही राजनीति में कामयाब है। आज के नेता ऊपर से अलग दिखते है, और अन्दर से कुछ और होते है। आज के नेता घोटाले करके धन बटोरते है और फिर रामनामी चादर ओढ़ लेते है। आज के इन दोहरे चरित्र वाले नेताओं पर कवि मनोज अबोध ने व्यंग्य कविता लिखी है-

एक हाथ में वायदे, एक हाथ में वोट,

फिर आए बहुरुपिए, घर-घर माँगन वोट

इस पंचायत राज की, ये देखी पहचान

चोर, उचक्का, चौधरी, कुटनी भई प्रधान

कटल, डकैती, अपहरण, अरू घोटालेबाज

मंत्रीपद के वास्ते, यही योग्यता आज

राजा मंत्री, तांत्रिका, छोटे-बड़े दलाल

एक हवाला ने किए, बकरे कई हलाल

तन-भर चाँदी गेंह में, मन-भर सोना हाथ

फिर भी छोड़ा वक्त ने, जयललिता का साथ,

ऊपर से हे रस भरे, भीतर से अखरोट

बदल-बदलकर कैंचुली, माँग रहे जो वोट

जिसने खुलकर उम्र भर, सदा कमाए पाप

वो बैठा अब कर रहा, राम-नाम का जाप।

जूते से बिजली मिले, पानी मारे जोर

जूते को सिर नावते, शासक नेता-चोर

रहिमन- जूता राखिए, सदा दाहिने हाथ,

अधिकारों की जंग में, देगा खुलकर साथ। 78

कवि एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसकी आँखो से समाज के कोई भी कारनामें ओंझल नहीं रह सकते है। डॉ. वीरेन्द्र 'तरुण' ने नेताओं की दोहरी राजनीति पर व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है। आज के नेता घोटाले करते रहते है। इन पर कोई विश्वास नहीं किया जा सका है। अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिए दल-बदल देते है। आज के नेता अपने स्वार्थ को पूरा करने में लगें हुए है -

इंसानियत को पी रहे है देश के नेता

हैवानियत को जी रहे है देश के नेता

घोटालों पर घोटालें खुलते रोजरातदिन

दुखती रगों को सी रहे हैं, देश के नेता

सुखराम सुख से सो रहे नोटो की सेज पर

गम रम की तरह पी रहे है देश के नेता

सत्ता गई जो हाथ से तो दल-बदल लिया

गिरगिट की तरह जी रहे है देश के नेता

वादे चुनाव में किये थे छाती ठोककर

वादों से मुकर भी रहे हैं देश के नेता

वे खा रहे हैं घूस तो वे क्यों न खाएँगे

मुद्दत से नकलची रहे है, देश के नेता। 79

कवि काका हाथरसी ने राजनीति में बढ़ती हुई विकृतियों पर व्यंग्य किया है। आज के नेताओं का चरित्र दोहरा हो गया है। आज के नेता समाज के लिये कानून, नियम बनाते है परन्तु स्वयं के लिये कोई नियमों की बाध्यता नहीं है। जो चाहे नेता कर सकते है।

कच्ची-पक्की बात से, वक्ता जोड़े लिंक,

भाषण सुरा विरोध पर, डेली करते ड्रिंक।

डेली करते ड्रिंक, बात के धनी घनेरे,

जय हो श्रीमान, पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
अपने ऊपर कभी आपने किया गौर है?
नेताजी ने कहा – 'हमारी बात और है।' 80

आज के राजनेताओं का चरित्र पूर्णतः भ्रष्ट हो गया है। पुराने शासक देश के लिए अपना सब कुछ अर्पण करते थे परन्तु आज के शासक भ्रष्टाचार का सहारा लेकर ऊँचे पदों पर पहुँच जाते है। आज के नेता राजनीति के आत्मसुख के लिए किसी भी तरह का कार्य करने के लिए तत्पर रहते है नेताओं के चरित्र पर प्रेम कि शोर पटाखा ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है –

उस युग के
हे राम का नाम पत्थरों पर लिखा
और पुल पार कर गए
आज के युग में
हराम के नाम का सहारा लिया
और बिना पुल बनाए
कांकरीट, सीमेन्ट, लोहा
सब पार कर गए
पीढ़ियां तर गए।
बोले चर्चित होने के लिये
कोई फोकट का फार्मूला बताइए ?
हमने कहा मुक्त का माल चरते-चरते
आपर चित्त हो जाइए
हमारी भाषा में चर्चित कहलाइए।
'आप तो हमारे
कतचर को चर रहे हैं,
जो काम कल होना है
उसे हम आज कर रहे हैं।'
आज के युग का
सबसे सफल आसन
कुर्सी आसन

जिस पर बैठते ही
शुभ हो जाते है आश्वासन
आश्वासन
खास क्रिया का एक सरल आसन
जैसे श्वास ली और छोड़ दी
आश्वासनों की बात कहीं
और तोड़ दी
नेता के माने
सीधा रहे तो नेता–
उल्टा हुआ तो ताने। 81

आधुनिक युग में कवियों ने नेताओं के चरित्र को ठीक से देखा-परखा और उनके दोहरे चरित्र को अपने व्यंग्य शब्दों में व्याख्यायित किया है। आज के नेताओं का कोई ठिकाना नहीं है। थोड़ी सी लालच में अपना ईमान बदल देते है। आज के नेताओं की स्थिति डाकुओं से भी ज्यादा गिर गयी है-

नेता को
सिक्कों से
तोला गया
तोलने पर भेद यह खुल गया,
चंद सिक्कों में ही
नेता तुल गया।
उनके हेराफेरी
गोलमाल के किस्से पढ़कर
डाकुओं के दल
आत्मसमर्पण के लिए खड़े हैं
कह रहे हैं
नेताजी सचमुच सबसे बड़े। 82

आज के आधुनिक युग में राजनीति के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि सूर्यकुमार पाण्डेय ने व्यंग्य किया है। कि आज के नेताओं की मर्जी के अनुसार ही उनके कार्य

होते है। उनकी मर्जी के खिलाफ कोई कुछ नहीं कर सकते है

नेताजी आप क्या करते है?
कुछ नहीं, मात्र वादा कतरे हैं,
और जब कभी हम कुछ करने का
इरादा करते हैं
तो उसे हम नहीं
हमारे इलाके के दादा करते हैं।
आपके दादा
तो आपसे कुछ ज्यादा करते हैं
जी नहीं उतना ही करेंगे
जितना हम कहेंगे
इस बात का हम
वादा करते हैं। 83

आज के आपाधापी युग में राजनीति चलाने के लिये अब किसी विशेष योग्य व्यक्ति की जरुरत नहीं होती है। जिस पर कवि मिश्री लाल जायसवाल ने व्यंग्य पंक्तियों द्वारा कटाक्ष किया है- आज के नेताओं का चरित्र इतना गिर गया है उन पर जितना उल्लेख किया जाए कम है।

आधुनिक युग में चमचागीरि सर्वोपरी स्थान पर है। इसके द्वारा व्यक्ति राजनीति में स्थान पर कर सकता है।

जैसे-

चमचागीरी की
रेलम पेल में
एक जेबकतरा जी
बन गए मिनिस्टर
एक जगह उद्घाटन के लिए
पहुँचे सजधज कर
मगर उद्घाटन के समय
सब लोग
उन्हें हेरत से ताकने लगे

वे कैंची से

फीते की जगह

संयोजक की जेब काटने लगे। 84

आज के भारतीय नेताओं के चरित्र हीनता की जितनी व्याख्या की जाये कम है। भारतीय नेताओं की उपदेश प्रियता विख्यात है। राजनेता अपने कर्तव्यों को भूल गये है। नेताओं के कारनामें कुछ और होतेहै। और समाज में अलग दिखते है। आज के नेताओं ने मानवीयता और आदर्श कोशों तक नजर नहीं आता है। इस स्थिति को कवि व्रजेश भट्ट ने व्यंग्य शब्दों में चित्रित किया है -

कल तक जो अपने थे

भेद उनके अब खुले हैं।

देखने में बहुत ही भले हैं।

इनके चेहरे पर नकाब है

बोतल में जैसे शराब हैं।

इनकी राते चमकदार हैं।

दिन इनके दूधिया धूले हैं।

इनके बिगड़े हुए आचरण

उस पर भी संन्यासी आवरण।

मुंह में राम, बगल में छुरी,

पंडित ऐसे हमें मिले हैं।

मौन है हम, ये बोलते हैं,

कौडियों में तौलते हैं।

तोले-तोले तुल गए हम,

ये अभी तक अन-तुले हैं। 85

भारत देश के पहले के शासक नेता महात्मा गाँधी, नेहरु, आदि देश के लिए शहीद हो गये अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। परन्तु आज के नेता देश को खोखला करने में लगे है। आज के नेता भ्रष्टाचार का उत्पादन करने में लगे है। आज के युग के नेताओं की देश के प्रति जो अकर्तव्य है उस पर कवि गणेश सोनी प्रतीक ने व्यंग्य कविता दृष्टव्य की है -

हे राष्ट्रपिता।

तुम शहीद हुए हो जब से,
हम शहद हो गए
शहद की मिठास में खो गए।
तुम्हारा खादी का चरखा
चर और खा के रूप में
अलग-अलग हिस्सों में बँटकर
समूचा हिन्दुस्तान खा रहा है,
तुम्हारा खादी का संदेश
खाद के रूप में
नई फ़सल के बीच
बिखराया जा रहा है
सिरफिरें नेताओं को
सिर्फ यहीं नज़र आ रहा हैं। 86

भारतीय समाज में अनेक विकृतियों का समावेश होता जा रहा है। जिसमें राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार की अधिकता पायी जाती है। जिसका कारण है। नेताओं के दोहरे चरित्र। आज के नेता चुनाव जीतने के पश्चात् एक अपार धन के मालिक बन जाते है। इनका ऊपरी चरित्र साफ दिखता है। परन्तु अनेक घोटाले करकें अपना कार्य पूरा करते है। इस पर कवि अशोक अंजुम की हास्य-व्यंग्य कविता द्वारा नेता के चरित्र को उजागर किया गया है -

आप कहते हो यहाँ ऊपरी कमाई नहीं,
हमको आने तो दो, रस्ता बना के छोड़ेंगे।
यूं तो खादी में लग रहे हैं वे भले मानुष
पर यही देश को कच्चा चबा के छोड़ेंगे। 87

आज के भारतीय नेता स्वार्थ लिप्सा में इतने रंगे है। कि उन्हें मानवयिता नाम मात्र नहीं आती है। देश पतन की ओर जाये इससे उन्हें कोई मतलब नहीं है। अपने कर्तव्यों से विमुख होकर आज के राजनेता अपने सुख प्राप्त करने में जुट गये है। इन परिस्थितियों को देखकर कवि राजेन्द्र राजा ने व्यंग्य कविता द्वारा दर्शाया है-

बेचारे सांप ना जाने कहाँ-कहाँ से
दूध बटोर कर लाये

चलकर भैयाजी के पास आये
और बोले, 'श्रीमानजी, लीजिये
आपके लिये दूध लाये है, पीजिये।'
इतना सुनते ही भैयाजी को
बहुत गुस्सा आया
उन्होंने सांपो को धमकाया,
'तुम्हें शर्म नहीं आती
यह क्या उल्टी गंगा बहा रहे हो
सांप होकर आदमी को दूध
पिला रहे हो।'
इतना सुतने ही एक बूढ़े सांप ने
अपना फन उठाया
और 'भैयाजी' को बताया,
हे युग-पुरुष, हम तो अब
केवल नाम मात्र के ही सांप हैं
हमारा 'असली धरम' तो आप
ही निभा रहे हैं
इसलिये हम आपको दूध
पिला रहे है।' 88

हमारे देश का आम नागरिक समस्याओं की भंवर में डूबा हुआ है उसके कुछ समझ में नहीं आता कि आज के शासक चुनाव से पूर्व आम आदमीं की हर समस्याओं को सुनते है। समाज के हर व्यक्ति से हमदर्दी होती है। लेकिन जीतने के बाद सभी कर्तव्य भूल जाते है। नेताओं के इन बदलते हुए चरित्र पर कवि 'ब्रजकिशोर पटेल ने व्यंग्य पंक्तियों द्वारा सुन्दर अभिव्यक्ति की है-

हमने कहा - 'क्या कारण है
चुनाव से पहले
आपका ह्रदय
फूल से भी ज्यादा
कोमल हो जाता है

आप मत दाताओं की हर समस्या को
ध्यान से सुनते हैं ?'
वे बोले -
इसलिए
कि मतदाता
माला में गूँथने के लिये
फूल ही चुनते है।
हमने पूछा- 'और क्या कारण है
चुन लिये जाने के बाद
आप लोग पत्थर हो जाते है?'
वे बोले- 'इसलिये
क्योंकि इस देश मे
पत्थर ही पूजे जाते हैं।।'89

साठोत्तरी कविताओं के द्वारा कवि श्याम ज्वालामुखी ने नेताओं के बदलते चरित्र को उजागर किया है। आज के नेता भ्रष्टाचार के आंकठ में डूबे हुए है। ये नेता गरीब जनता को धोखा देते है। और इसमें इन्हें कोई शर्म नहीं होती है। आज की राजनीति में प्रवेश करने के लिये इन चरित्रों का अनुसरण करना जरुरी है।

पहुँच गए हम भी
नेतागीरी के इंटरव्यू की 'क्यू' में
प्रश्न था-
'क्या तुमने कभी किसी
अंधे भिकारी की कटोरी में
पाँच पैसे डालकर, दस पैसे उठाये है?
हमने कहा- नहीं,
वे बोले-
क्या खाक नेतागीरी निभाओगे?
एक अंधे को बेवकुफ बना नहीं सकें
अस्सी करोड़ दो आंखो वालों को

कैसे बनाओगे ? 90

आज के राजनैतिक वातावरण में सिर्फ कुर्सी की राजनीति हो विशेष रूप से हैं। आज भारत कृषि प्रधान देश नहीं कुर्सी प्रधान देश बन रहा है। कुर्सी के लिये प्रत्याशी अपना धर्म ईमान सब गवाँ देते है। आज के नेताओं को सिर्फ अपना लक्ष्य कुर्सी पाना ही दिखता है। उसे समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार से कोई सरोक़रा नहीं रहा है। आ के नेताओं की कुर्सी के लिये इस स्वार्थो प्रवृत्ति पर कवियित्रि सरला भटनागर ने व्यंग्य पंक्तियों द्वारा दर्शाया है-

सबको ही तो एक खिलौना भाया
कुर्सी पर सब नेताओं का जी ललचाया
सबने उसके लिए धर्म ईमान गँवाया
सबको अपनी ढपली अपना राग सुहाया
सब ने कूटनीति अपनी फैलाई
बिना हक अधिकार एक ने कुर्सी हथियाई
बच्चों का सान्याय धर्म मन में बैठाया
जब जिसको जैसे चाहा वैसे धमकाया॥ 91

आधुनिक युग में दोहरे चरित्र वाले नेताओं की संख्या बढ़ रही है। आज का नेता ईमानदार, सदाचारी होना मुश्किल है, आधुनिक युग के सत्ताधारी इस प्रक़ार के है कि पाँच साल में अरबपतिबन जाते है। आधुनिक सत्ताधारियों के चरित्र परकवि 'अल्हड़ बीकानेरी' ने व्यंग्य किया है -

सोने के सितारे, ऊँचे अम्बर
से तोड़ सके
नेता का सपूत, अलबेला
हो तो ऐसा ही
धरती पे आरती उतारे
बूदें बरगद
नीम पे चढ़ा हुआ करेला
हो तो ऐसा हो
दो किलो खली से तनो तेल, जो निकाल सके
सत्ता का खिलाड़ी खाया- खेला, हो तो ऐसा हो

कल तक था करोड़पति, आज
है अरबपति घोटाले का रोज-रोज मेला
हो तो ऐसा हो । 92

आधुनिक युग के नेता सिर्फ अपने स्वार्थ को पूरा करते है। उन्हें किसी का डर, भय नहीं होता है। नवीन सत्ताधारियों को दल-बदल घोटाले रिश्वत लेने में कोई संकोच नहीं होता है। समाज नेता के लिए कुछ भी कहे उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। आज के दोहरे चरित्र वाले नेताओं की निडरता पर कवि अल्हड़ बीकानेरी ने हास्य-व्यंग्य के द्वारा निम्न पंक्तियाँ लिखी हैं-

नेता हूँ मैं, रिश्वत के धन से भयभीत नहीं
मैं रिश्वत खोरी के उन्मुलन से डरता हूँ
अपने पिछड़े हुए देश की नैया खेता हूँ
लोकसभा में धुआँधार मैं भाषण देता हूँ
जब मेरी भाषण पर जूते चलने लगते है
जूतों की बौछार खोपड़ी पर सह लेता हूँ
विरोधियों के इस जँगलीपन से भयभीत नहीं
पर अपनी चँदिया के गंजेपन से डरता हूँ। 93

कवि अल्हड़ बीकानेरी ने हास्य-व्यंग्य के द्वारा नेताओं के कारनामों पर व्यंग्य किया है। आज के नेता राजनीति का सहारा लेकर अपने सभी कार्य करके आत्म सुख प्राप्त करते है। करोड़ो अरबों इकट्ठा करते हैं। देश की परिस्थितिया दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है -

राजनीति का चेप लेकर
वैतरणी को तर लो
करो खोखला देश, नींव
अपने महलों की भर लो। 94

हास्य-व्यंग्य के मूर्धन्य कवि काका हाथरसी से आज के सत्ताधारियों के भ्रष्ट चरित्र की यथार्थ अभिव्यक्ति की है। आज के नेताओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। स्वतन्त्रता से पूर्व राजनेताओं में ईमानदारी, त्याग, बलिदान की भावना पूज्यनीय थी परन्तु आज के नेता में यह भावना जागृत नहीं होती है, आज के नेताओं के अन्दर क्या भावनायें है। इसको जानना मुश्किल हो गया है -

नेत्रों की ज्योति घटती जा रही है,
इनमें एक्सरे वाले ऐसे लैंस कीजिए एड्जस्ट,
नेताओं की अंतरात्मा दीख सके स्पष्ट।
फिर, जनता को धोखा नहीं दे सकेंगे।
दल-बदलू वोट नहीं ले सकेंगे। 95

काका हाथरसी ने साठोत्तर दौर की हास्य-व्यंग्य कविताओं के द्वारा आज के राजनीतिज्ञों की भ्रष्ट चरित्र पर व्यंग्यात्मक शब्द प्रस्तुत किये है। आज के राजनेता सिर्फ अपनी स्वार्थ लिप्सा में लगे हुए है। राजनीति में आने के बाद अरबों कमाते है। देश की स्थिति किस प्रकार गिर रही है। इससे इन्हें कोई सरोकार नहीं है-

कलयुग के इन्सान की,
बड़ी भयंकर छाप,
जनता जाए भाड़ में, माल बटोरें आप। 96

आज के राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ के लिये दंगे करवाते है जिसमें बेकसूर इन्सान मारा जाता है। और राजनीतिज्ञों को इसका कोई फर्क नहीं पड़ता है। न ही इनका कोई नुकसान होता है।

दँगों में मरते रहे,
बेकसूर इंसान,
नेता कोई नहिं मरा, खाँय नित्य ईमान। 97

आज के आधुनिक युग में राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को देखकर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य दोहा प्रस्तुत किया है कि आज की राजनीति दोहरे चरित्र वालीराजनीति बन गयी है। चुनाव से पहले नेताओं की स्थिति अलग होती है। जीतने के बाद अलग होती है -

नेता वही महान जो,
भागे वोट बटोर,
पहले मीठा मुलायम, पीछे बनें कठोर। 98

आज के नेताओं की स्थिति यह है कि उनका चरित्र स्वार्थी बन गया है। नेता को सिर्फ अपने हित साधनाही सर्वोपरि मानते है। जिसके लिये उन्हें धर्म ईमान का कोई चिन्ता नहीं है। इन बदलते हुए चरित्रों पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य द्वारा दर्शाया है-

भ्रष्टाचार बन गए

जब नेता श्रीमान

बिना मौत के मर गया, कलियुग में ईमान। 99

आज के नेताओं के चरित्र पर जितना कहा जाये कम है। ये सत्ताधारी नेता जनता को सदाचार, ईमानदारी का भाषण देते है और चरित्र ऐसा है कि झूठ, फरेब, भ्रष्टाचार से पूरे राजनीतिक परिवेश को भ्रष्ट कर दिया है। और समाज के सामने सदाचारी बनकर रहते है। आज के नेताओ के चरित्र की सच्चाई काका हाथरसी ने इस प्रकार अभिव्यक्त की है -

सदाचार पर दे रहे,

भाषण सत्यकुमार,

लंबी रिश्वत मारकर, लेते नहीं डकार। 100

स्वतंत्रता से पूर्व राजनीति को गर्व की बात मानी जाती थी। उस समय देश के नेता पूर्ण रूप से समर्पित थे परन्तु आज झूटे आश्वासन अपनी स्वार्थीनीति में लगे हुए है। आज के नेता मतदाताओं से झूठे वादें करके जीत जाते है और बाद में अपने वादे भूल जाते हैं। इन स्वार्थी नीति वाले नेताओं पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है-

सामंतवाद का स्वाद लेते रहो

समाजवाद के उपदेश देते रहो

मतदाताओं का आश्वासनों से मन भर दो

विजयश्री के पश्चात् सम्बन्ध कट कर दो

स्वार्थ का स्वादिष्ट हलवा खाते रहों

परमार्थ के निरर्थक गीत गाते रहो। 101

आज के राजनीतिओं के दोहरे चरित्र पर काका हाथरसी ने व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत किया है कि आज के नेताओं का चरित्र भ्रष्ट हो गया है, इनके चरित्र की तुलना नागों से की है। नेता झूठे आश्वासन देकर वोटो को पताते है और वोटर इनके शिकार बन जाते है।

अखबार की सुर्खियों ने इसे पाला

इस खबर को खूब उछाला

एक अफ्रीकी युवक

पूरे बावन दिन सांपो के बीच रहा
दुनिया को आश्चर्य से भर गया
कौन सा कीर्तिमान स्थापित कर गया-
हम तो पूरे पचास साल से
अजगरों से पल रहे हैं
जो प्रेमपूर्वक
अपने वोटरों को निगल रहे हैं। 102

काका हाथरसी ने नेताओं के दोहरे चरित्र को व्यंग्य दोहे के द्वारा दर्शाया है कि आज के नेता जनता को किस प्रकार से ठग रहे है। चुनाव के समय रामनामी चादर ओढ़कर मीठे-मीठे बोलते है। और जनता उनकी बातों पर विश्वास कर लेती है-

मीटिगों में बोलते, मीठा-मीठा झूठ,
कूटनीति की चाल से, ले जनता को लूट। 103

डॉ. सरोजनी प्रीतम ने आज के नेताओं के भ्रष्ट और दोहरे चरित्र पर व्यंग्य किया है कि आज के नेताओं के चरित्र को भ्रष्ट, बेईमान, की ही संज्ञा दी जाती है।

गुस्से में आकर ।
नेताजी बोले चिल्लाकर
'कैद करो, फांसी परलकटा दो,
तस्करी, भ्रष्टाचार की
कड़ी से कड़ी सजा दो।'
आदेश सुनकर अधिकारी
आनंद विभोर हो उठे और बोले
'नेताजी, आप क्यों
अपने प्रति इतने कठोर हो उठे।' 104

आधुनिक युग की बदलती हुई परिस्थितियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि शिष्टाचार और सदाचार सिर्फ शब्द कोश बन गये है। समाज में इनका कोई महत्व नहीं है। ईमानदारी से रहने वाले व्यक्ति कुछ नहीं कर पाते है भ्रष्ट नीति अपना कर राजनीति में ऊँचा पद प्राप्त करते है। ये नेता धूर्त एवं कपटी बनकर हर समय गिरगिट की तरह रूप बदलने मेंलगे है। आज के नेताओ पर भरोसा करना मुर्खता है, सांजन ग्वालियरी ने इसे स्पष्ट शब्दो में व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत किया है -

जिन्दगी भर घास छोली, फिर भी आवारा रहे।
ज्योंहि वे मंत्री बने फौरन ही डी.लिट. हो गये।
योग्यता तो आजकल अभिशाप बनकर रह गई,
योग्य थे हर क्षेत्र में वे लोग अनफिट हो गये।
उल्लुओं की इस कदर यारो उचटकर लग गई
बेधड़क हर टेस्टमेंवे टोटली फिर हो गये।
रंग बदले हर घड़ी इन पर भरोसा क्या करें,
लीडर हमारे देश के सब आज गिरगिट हो गये।
धर्मग्रन्थों से अधिक महिमा है राशन कार्ड की,
बेटी बेटों से बी बढ़कर आज परमिट हो गये। 105

स्वतंत्रता से पूर्व शासक वर्ग राजनेताओं को जनता का कर्णधार कहा जाता था। परन्तु आज नेताओं के दोहरे चरित्र स्वार्थी प्रवृत्ति हो जाने के कारण कवि मुकुटविहारी सरोज ने इन राजनेताओं की पहचान को व्यंग्य के द्वारा प्रस्तुत किया है आज के नेताओं के द्वारा ही सरकार चल रही है, ये जब जैसा चाहे नियम, कानून बनाकर सरकार चला रहे है। इनके द्वारा प्रकाशित अखबार भी आज के झूठे है। ये नेता जैसा चाहे देश को चला सकते है। सब कुछ इन्ही के हाथ में है-

प्रभुता के घर जन्में, समारोह में पाले हैं,
इनके ग्रह मुँह में चाँदी, की चम्मच वाले है,
उद्घाटन में दिन काटें रातें, अखबारों में-
ये शुमार होकर ही मानेंगे, अवतारों में,
ये तो बड़ी कृपा है, येजो दिखते यह इन्सान हैं।
ये जो कहे प्रमाण करें जो कुछ प्रतिमान बने
इनने जब-जब चाहा तब-तब नए विधान बने
कोई क्या, सीमा नादें, इनके अधिकारों की-
ये खुद जन्म पत्रियाँ लिखते है, सरकारों की
तुम होगे सामान्य, यहाँ तो पैदायशी प्रधान है। 106

नेताओं के बदलते हुए चरित्र और कारनामों से पूरा देश परिचित है आज के नेता रहने के लिए घर देने की बजाय खुला आसमान देते है। उन्हें अपने आश्वासन की कोई परवाह नहीं है। जनता को चैन से खाना भी नसीब नहीं हो रहाहै। भारत की

विपन्नता और वेदना को अभिव्यक्ति देनेवाली व्यंग्य रचना कवि प्रभाव रिरन ने की है -

छत के बदले पुआल देते हो,
नित सुलगते सवाल देते हो।
हम झुकातें है सिरश्रद्धा से,
आप पगड़ी उछाल देते हो,
जीते जी वे लिबास, मरने पर,
एक रंगीन शाल देते हो।
जिस्म बिकते हैं क्यूं बाजारों में,
इस तरफ भी ख्याल देते हो।
बात रोटी की जब भी चलती,
आप हंस कर के टाल देते हो।
वोट लेते हो एक बार मगर,
तुम सजा पाँच साल देते हो। 107

समूचे देश में नेताओं का चरित्र एक सा ही है। पूरे देश में अलग-अलग तरह के बदते हुए चरित्र वाले नेता दिखायी देते है। जो गाँधी की तरह सीधे बनकर अपना जाल फैलाये है। आप दोहरे चरित्रवाले नेताओं की विडम्बना परकवि दिनेश दिनकर ने हास्य-व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी ह-

जिधर देखों उधर
अभिनव वहेलिए
फैलाए बाग्जाल
बिखराये लालच के दाने
महात्मा से
मंगलता के मंत्र पढ़ते
दिख रहे हैं
बाजारों में विविध नस्लों के
रंग-बिरगे पक्षी बिक रहे हैं
बोली लगा रहे है दूसरे अहेलिए
आखिरी उड़ान

पिजड़े में

जलतरंग बजा रही है। 108

आधुनिक युग के नेताओं के लिए कुर्सी सबसे बड़ी विशेषता है। कुर्सी ही सर्वोपरि है। आज भारत कृषि प्रधान देश न होकर कुर्सी प्रदान देश हो रहा है आज के नेताओं का धर्म सिर्फ कुर्सी पाना रह गया है। देश का कुछ भी हो युगीन राजनीतिज्ञ कुर्सीमय हो गये है। इस परकवि उपेन्द्र प्रसाद राय ने हास्य-व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की है।

मैं हूँ लीडर -चीनी, चावल, गेहूँ का हूँ परिमिट ।

एक लीडरी छोड़ सभी कामों में हूँ मैं अनफिट।

कुर्सी मेरा धरम-करम है, कुर्सी मेरा जीवन,

रंग बदलता हूँ मैं ऐसे ज्यों रंग रसिया गिरगिट। 109

स्वतंत्रता के पहले सफेद खादी स्वदेश प्रेम की धोतट थी। उनके तन और मन दोनों उजले थे। परन्तु अब खादी के श्वेत वस्त्र धारण करने वाले तथाकथित नेतागण धूर्त, बनावटी, कपटी बन गये है। इनके भ्रष्टाचार करने की अति हो गयी है। और समाज के सामने सरल स्वच्छ दिखते है। इन बदलते हुए चरित्र वाले नेताओं पर कवि रामकिशोर मेहता ने व्यंग्य किया है-

सबको भ्रष्ट जो कर सके, खुद न भ्रष्ट दिखाय।

ऐसे बगुला भगत को, रखियों पास बिठाय॥

रखियो पास बिठाय, सफेदी चुन-चुन लीजो।

करिया रंग दिखाय, त्याग तुरन्त ही दीजों॥

कह मेहता कविराय श्रेष्ठ मतलबी तबको।

इसका बस चल जाय, पार लगा दे सबके॥ 110

राजनीति के बदलते हुए परवेश में नेताओं का बदलता हुआ चरित्र सर्वोपरि है। यह स्वार्थी राजनेता देश के लिये नासूर बन गये है। राजनीति चलाने के लिये योग्य व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है। जिसके पास गुण्डें है। धन की ताकत है। वही राजनीति में सफल है और उनसे सभी डरते है। नेताओं के चरित्र पर कवि जय कुमार रुसवा ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है-

उनके दल में

गुण्डों की

पूरी जमात
भरी है
इसीलिए
उनकी ताकत
सर्वोपरि है
और जनता
उनेस डरी-डरी है। 111

आधुनिक युग में राजनीति व्यवसायी बन गयी है। राजनेताओं का एक लक्ष्य होता है। कि किस तरह कुर्सी हासिल की जाये। कुर्सी पाते ही नेता सरकारी कोष को अपना समझकर मनचाहा खर्च करने लग जाते है। नेताओं के कर्तव्यों को देखकर कवि जय कुमार रुसवा ने व्यंग्य किया है-

कुर्सी पाते ही
हर नेता के
मन में
यही एक बात
होती हैं
कि अब
सरकारी कोष
उनकी बपौती है । 112

आज की राजनीति तो दाँव-पेचों का अखाड़ा बन गयी है। आज के शासक इतने भ्रष्ट है कि उन पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता है। इनके खुद के नियम कानून बने हुए है। इनके द्वारा सतायी गयी जनता मजबूर होकर इन्हें वोट देती है। संविधान के नियम, कानून को बदलने वाले भ्रष्ट नेताओं के अश्लील चरित्र का खोखलापन उतारते हुए कवि धूमकेतु ने प्रहारत्मक व्यंग्य किया है -

जाँच कमीशन को बैठाकर उसके न्याय को ठोकरे
ऐसे अपने भाग्य विधाता इन्हें समाल करो?
सभ्य सुसंस्कृत, सदाचारी, पंच बिराजे पंचायत में
युगदृष्टा जिनसे चकरता, इन्हें सलाम करों?
पूरे समय गालियाँ बकता, अंतिम दिन वोट दे मागता

ऐसा जागरुक मतदाता, इन्हें सलाम करो?

हम बकरे हैं, ये कसाई हैं, सूरज इनके घर बंदी है-

संविधान के ये अधिष्ठता, इन्हें सलाम करों? 113

कवि सूर्य कुमार 'पाण्डेय ने हास्य-व्यंग्य पंक्तियों के द्वारा नेताओं के दोहरे चरित्र पर प्रहार किया है। आज के नेताओं पर भरोसा करना मुश्किल होता है। ये ऊपर से दिखाने में उजले और अन्दर से काले दो तरह का व्यवहार रखने वाले है। कुर्सी से उतरने के बाद इनकी क्या स्थिति होती है। इस पर तुलनात्मक व्यंग्य किया गया है -

यूँ तो अपने देश में
नेता नटवरनागर होता है,
माखन चोर होता है,
त्रिभंगी होता है,
कंस जिसका मामा होता है,
लेकिन बेचारा
पाँच साल में
एक बार सुदामा होता है।
जब कुरसी से उतर जाए
तो बिल्कुल पाजामा होता है।
मेरे एक मित्र बोले-
आप नेता को
पजामा बतलाते हैं।
इतने सर्वशक्तिमान जतुं पर भी
उगँली उठाते है।
आप नेता और पजामा में
कोई भी समरूपता भी पाते हैं।
मैनें कहा-
जो पाते हैं,
वह आपको दिखाते हैं,
दोंनो को मैला होने पर

छाँटना पड़ता है।
और निचोड़ना भी पड़ता है।
कभी-कभार
किसी खास दिशा-निर्देश के लिए
मोड़ना भी पड़ता है।
दोनो से
बेहतर काम लेने के लिए
इन्हें प्रेस करना पड़ता है
मगर हमेशा
इन दोनों के भीतर छिपे हुए
नंगेपन से डरना पड़ता है।
दोनो ही
ऊपर से एक मुँहे
और नीचे से दो मुँहे होते है।
ये नारे के बिना
बेकार होते हैं।
और सदा ही हमारे पेट पर
बँधने कलिए,
बेकरार होते हैं। 114

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार तीव्र गति से फैलता जा रहा है। राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार फैल गया है। आधुनिक युग में सियासत के कारनामें इतने भयंकर होते है कि जनसामान्य उन्हें समझ नहीं पाता है। आज राजनैतिक मूल्यों का हास होता जा रहा है। जिसके जिम्मेदार आज के नेता है। इन नेताओं के भ्रष्ट चरित्र को व्यंग्य द्वारा सूर्यकुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत किया है-

मैंने कहा-
नेताजी
सुना है कि
आपको
उद्घाटन से बड़ा मोह है,

और कल
मेरे मोहल्ले की
कूड़ा उठाओ सीमित का
उद्घाटन समारोह है।
अन्नदाता !
आप आ जाते
तो बोझ हलका हो जाता।
नेता जी बोले-
हम अवश्य आएँगे!
मैं बोला-
आइए
समारोह की शोभा बढ़ाइए
भला इसमें क्या शर्मिंदगी है,
हर कहीं कूड़ा है, गदंगी है
भ्रष्टाचार का कूड़ा
झूठ-फरेब और मक्कारी का कूड़ा
स्वार्थ और गद्दारी का कूड़ा
आप आठ-दस क्या
हजार लाएँगे
तब भी उठा नहीं पाएँगे।
इसीलिए आप
बस उद्घाटन करते रहिए
उद्घाटन रंग लाएगा
आपकी कृपा से
मेरा मोहल्ला क्या
समूचा देश साफ हो जाएगा। 115

आज नेताओं के दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए स्वार्थ और लोभ की प्रवृत्ति होने के कारण नैतिक मूल्यों का पतन बढ़ता जा रहा है। आज के नेताओं के चरित्र में भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोर, आदि का समावेश हो गया है। जिसे देखकर क़वि अशोक

चक्रधर ने व्यंग्य किया है -

भ्रष्टाचारी मजिस्ट्रेट
रिश्वतखोर थानेदार
इंजीनियर, ओवरसियर
रिश्तेदार, नातेदार
मुझ से भी पैदा हुए
मुझे में ही समाएगे
पुरस्कार ये सारे मेरे है
मेरे पास आयेंगे।
अचानक स्वर्ण गिद्ध
रजत बगुला, कास्य कउआ
अपने-अपने पंख
फड़फड़ाने लगे।
नेता जी पर
फूल बरसाने लगे। 116

कवि मधुप पाण्डेय ने नेताओं के दोहरे चरित्रपर व्यंग्य किया है चुनाव के समय नेता के दीनता के भाव को जनता समक्ष नहीं पाती है।

सुना है
कई अभिनेताओं का
नेता बनने का विचार है
समझ लीजिए
कि दर्शक का बंटादार है
क्यों कि नेता तो
जन्मजात अभिनेता होता है
वह एक ही समय
एक आँख से हँसता है
और दूसरी से रोता है,
वोट माँगने के लिए
वह जिस तरह

अपने चेहरे पर
दीनता के भाव लाता है
क्या उसके
अभिनय की गहराई
कोई भी समझ पाता है?
फिर वही नेता
जब कुर्सी पर बैठता है
बैठे-बैठे ऐंठता है
तब उसकी अदा
जो कहर ढाती है
क्या उसकी
अभिनय-कला-पटुता
समझ में भी आती है?
तथ्य यह है कि
नेता के असली चेहरे पर
हमेशा
अभिनय के
रंग-बिरंगे मुखौटे लटकते हैं
बेचारे दर्शक भटकते हैं
अब अगर अभिनेता भी
नेता के मुखौटे
लटकाने पर
उतर आएँगे
तो भोले-भाले दर्शक
असली चेहरे की
एक झलक पाने के लिए भी
तरस-तरस जाएँगे। 117

आज के राजनीतिज्ञ राजनीतिको व्यवसाय बनायें हुए है, आधुनिक युग के शासक पूरे देश में अपना अधिकार बनाये हुए है। ये ऊपर से दिखने में अलग और

अन्दर से अलग होते है। ये गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते है। शासकों के बदलते हुए रूप दोहरे चरित्र पर कवि रामप्रसाद मिश्र ने व्यंग्य किया है -

हे नेता ! तुझको नमस्कार
तू अखिल सृष्टि का समाहार
धरती पर तू सर्वत्र व्याप्त
आकाश हुए है सदा प्राप्त
राकेट सी है तेरी उड़ान
जय-जय का होता घोर गान
मुस्कान कँटीली जगतमार
हे नेता ! तुझको नमस्कार
तन से मानव, मन से अबोध
बकरे-सा स्वर पर सिंह क्रोध
हाथी-सा तन, कंगारू-गीत
गिरगिट से रँग, तेदुंआ सुमति
जीवन सेराजा बोल रंक
भोले भाषण पर कार्य बंक
जनता देती सर्वस्व बार
हे नेता ! तुझको नमस्कार
तन से मानव, मन से अबोध
बकरे सा स्वर पर सिंह क्रोध
हाथी-सा तन, कंगारू-गति
गिरिगिट-से रंग, तेदुवा सुमति
जीवन से राजा बोल रंग
भोले भाषण पर कार्य बंक
जनता देवी सर्वस्व बार
हे नेता ! तुझको नमस्कार । 118

आज की राजनीति में शासक निरंकुश होते जा रहे है। उन्हें सिर्फ अपने स्वार्थ के लिये कार्य करते है। पूर्णतः इनका स्वभाव स्वार्थी और भ्रष्टाचार में डूबा हुआ

है। राजनीति की इन विकृतियों पर कवि आदित्य शर्मा ने व्यंग्य किया है -

भ्रष्टाचार में डूबा नेता, देख के मै ये कहता हूँ।
खूब कर रहे आप उगाही, शर्म नहीं तुमकों आती॥ 119

आज के युग में राजनीति व्यसाय बन गयी है। नेताओं की चुनाव में जीतने के बाद पाँचों उँगलियाँ घी में रहती है। ये करोड़ों रूपये कमाते है। जिनके पास कुछ भी नहीं होता है। चुनाव जीतने के बाद करोडपति बन जाते है। सत्ता प्राप्त करके सभी सुख प्राप्त करते है। आधुनिक युग के सत्ताधारियों ने राजनीति को व्यवसाय बना दिया है। इस पर आदित्य शर्मा चेतन ने व्यंग्य किया है-

जब से नेताजीकी, इस देश में सरकार हुई।
झोपड़ी की जगह पें, कोठी है तैयार हुई॥
पास जिनके नहीं थी, एक टूटी साइकिल भी।
उनके चलने के लिए एक नई कार हुई।
जो तरसते थे कभी, एक बीबी मिल जाये।
उनकी बीबीकी संख्या, आज तो हजार हुई॥
मिलेगा सबको रोजगार, वादा था जिससे।
वो युवा पीढ़ी आज, और भी बेकार हुई॥
होगें वे लोग और, जो कभी जन सेवक थे।
आज तो राजनीति, देश में व्यापार हुई॥ 120

आज के सत्ताधारी नेताओंकी स्थिति निरंकुश होती जा रही है। आजके नेता सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिये एक-दूसरे से लड़ते है झगड़ते है। आज की युवा पीढ़ी संसद में इनके कारनामों को देखकर इनके आदर्श बनने की कोशिश कर रहे है। जिससे देश की स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है।

एक नव युवक ने-
चौराहे पर,
कर दिया झगड़ा।
पुलिस वालोंने
उसे रंगे हाथों पकड़ा।
उसने पूँछा-
क्यों बें।

चौराहे पर झगड़ता है?
कानून से नहीं डरता है?
उस बालक का-
उत्तर था-
हम, अपने कर्णदारों का-
अनुकरण कर रहे हैं।
इसलिए झगड़ रहे है।
वे जब,
देश के सर्वोच्च सदन-
संसद में झगड़ सकते हैं।
तो क्या हम,
इस छोटे से चौराहे पर-
नहीं झगड़ सकते हैं?
जब हम अभी से झगड़ेंगे।
तभी तो देश के बड़े नेता बनेंगे। 121

आज के नेता देश को खोखला करने में लगे है। दोहरे चरित्र वाले नेता किस प्रकार देश को खा रहे है भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इस पर कवि शैल चतुर्वेदी ने व्यंग्य किया है- आज की राजनीति व्यवसायी बन गयी है।

हमने मित्र से कहा-
'चुनाव आ रहा है।'
तो वह बोला-
'खड़े हो जाइये
देश थोड़ा बहुत बचा है
उसे आप खाइये।'
हमने पूछा-
'देश कैसे खाते है?'
वे बोले-
'बँबई में नहीं दिल्ली में सिखाते हैं। '
वहाँ एक से एक खाने वाले बैठे हैं

जब भी डकार लेते हैं चुनाव हो जाता है'
ऐसा ही एक कुंभकरण की औलाद
छः महीने बाद जागा
तो लंच में स्कूल खा गया
डिनर में स्टेडियम खा रहा है
और सुना है स्विटजरलैंड जा रहा है
पेट साफ करवाने
वहाँ से लौटकर आयेगा
तो ब्रेकफास्ट में सरकारी बैंक खायेगा
एक और है कुंभकरण के भाई
उन्होंने पेट भरने की खूब स्कीम बनाई
जैसी ही कुर्सी संभाली
फर्टिलाइजर की फैक्ट्री खा ली।
देश के बदलते हुए परिवेश में
आज का राजनेता
अपने जीवन के प्रति
कितना आश्वस्त रहता है
देश भले ही जाये भाड़ में
वह मस्त रहता है। 122

भारतीय परिवेश पूर्णतया बदल गया है। आज सत्ताधारी नेताओं के हाथों में देश की बागडोर है। जिन्हें देश की कोई चिन्ता नहीं है। नेताओं के तरह-तरह के चरित्रों का जाल पूरे देश में फैला हुआ है। इन परिस्थितियों को देखकर कवि प्रेमकिशोर 'पटाखा' ने यह अभिव्यक्ति की है-

आज कितना बदल गया है
हमारा भारतीय परिवेश
नेताओं की रंगबिरंगी
आतिशबाजी से
चमक रहा है मेरा देश
न्यूज में सुना है

पढ़ा है अखबार में
नेता गिरी का विद्यालय
खुल गया है बिहार में
भ्रष्ट नेताओं की
रॉकेट से भी तेज गति
इनके पीछे
बेचारी जनता की दुर्गति
गति-दुर्गति के बीच
फँस गए हैं हम
आंतकवादी गति-विधियों
बन्दूके-विस्फोट और वन। 123

आज के नेता सत्ता प्राप्त करने के पश्चात अपने सुखों और पैसा कमाने के तरीके खोजते रहते है। ऊँचे पद पर पहुँच कर अपने कर्तव्यों को भूल जाते है। इन्हें किसी की परवाह नहीं होती कवि उमांशकर 'मनोमौजी' की व्यंग्य पंक्तियाँ इस संदर्भ में प्रस्तुत है-

वे
पद-पाकर
निम्न-स्तर
अर्थात्-
मिनि-स्तर
तक उतर आते हैं
इसलिए-
'मिनिस्टर' कहलाते हैं। 124

कवि गोपाल प्रसाद व्यास के अनुसार उनकी दृष्टि में आधुनिक युग में सभी का अवमूलयन हो रहा है। पहले के नेताओं पर जनता अपना सर्वस्व सौप देती थी। परन्तु आज के नेतागण, झूठ, फरेब, भ्रष्टाचारी के घोतक है। अवसर पाते ही अपने फायदे की बात सोचते है।

बस यही वक्त है जनता में
अपना विश्वास जमाने का।

बस, यही वक्त है गई लीडरो की
फिर वापस लाने का।
बस, यही वक्त है बार-बार
रह-रहकर दिल्ली जाने का।
बस, यही वक्त 'जी हूजुर' कह
कौसिल में घुस जाने का।
मैं यही सोच, अनुकूल वायु पा
अपनी नौका खेता हूँ।
मै अवसरवादी नेता हूँ।
जब हुआ व्यक्तिगत आन्दोलन
मैने खुद को बीमार किया।
मित्रों से आँख बचा करके
घर में छुपना स्वीकार किया।
यह एक समय की नहीं बात
इक्किस, इकातिस, इकतालिस में
जब-जब जैसा मौका आया
वैसा ही रूख अख्तियार किया।
खतरे के समय काँग्रेस को
मैं नमस्कार कर देता हूँ।
मैं अवसरवादी नेता हूँ। 125

3. कुर्सी की राजनीति

आज के नेताओं का उद्देश्य सिर्फ कुर्सी प्राप्त करना रह गया है। शासक कुर्सी को ही अपना धर्म-कर्म समझते है। कुर्सी उन्हें गलत कार्य करने के लिए बाह्य कर देती है। कुर्सी न मिलने पर नेता अपने को अपाहिज समझता है और कुर्सी मिल जाने पर कामयाब समझता है। आज के इस कुर्सी युग पर डॉ. रामगोपाल सिंह ने व्यंग्य पंक्तियाँ द्रष्टव्य की हैं-

राजनीति क्षेत्र में तो
भीख ही भीख है
पहले टिकट मिलने की भीख

फिर वोट की भीख
कुर्सी की भीख और फिर
कुर्सी पर टिके रहने की भीख
भीख न मिलने पर
हम समझते है स्वयं को
अपाहिज/कामयाब/सम्राट। 126

आज स्वतंत्र भारत की बागडोर आज के नेताओं के हाथों में है। ये लोग भ्रष्ट तरीके से समृद्धि प्राप्त करते है। आज के शासक दल सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार फैला रहे है। देश का कितना भी पतन हो इन्हें कोई फर्क नहीं पढ़ता है। भारत देश कृषि प्रधान होने के बजाय कुर्सी प्रधान बन गया है। राजनीतिक नेताओं के दोहरे चरित्र पर कवि सूर्यकुमार पाण्डेय ने व्यंग्य द्वारा पंक्तियाँ लिखी है -

कोई मरे जीयें कोई हमें नहीं कुछ काम
हमें फक्त मिलते रहें लम्बे-चौड़े दाम॥
लम्बें चौड़े दाम पड़े न कुछ भी देना।
जाय भाड़ में देश हमें उससे क्या लेना॥
दोस्त चले ठाठ से धंधा नम्बर दोका।
देते रहे प्रेम से दुनिया भर को धोका॥
सोना तेरा धर्म है सोना तेरा काम।
अगर कहीं पर दौड़ हो जीते सभी इनाम॥
जीते सभी इनाम छोड़ दे सबको पीछे।
तू सबका उत्साद सभी है तुझसे नीचे॥
दोस्त नींद में भरता है जब तू खराटे।
दूर-दूर तक फटने लगते हैं सन्नाटे॥
रट्टू तोते की तरह नेता बोले मंत्र।
कुर्सी के चिपकाव ने भ्रष्ट कर दिया तंत्र॥
भ्रष्ट कर दिया तंत्र दौड़ कुर्सी के पीछे।
बिल्कुल भी मत सोच कौन है ऊपर नीचे॥
दोस्त समझ से बाहर है कुर्सी का किस्सा।
कुर्सी इनकी,या है ये कुर्सी का हिस्सा॥ 127

भारत देश में कुर्सी की महामारी ऐसी फैल है कि पूरे भारत देश में राजनीति के प्रत्याशी इसके शिकार हो गये है। कुर्सी के लालच में नित नए कारनामें होते रहते हैं। आज हर आदमी चाहता है कि वह कुर्सी पर बैठा रहे और आराम का जीवन व्यतीत करें, देश में कुर्सी पर बैठे शासकों का ही बोलबाला है, कुर्सी ही सर्वश्रेष्ठ मानी जा रही है। इस संदर्भ में कवि गिरिमोहन गुरुने हास्य-व्यंग्य द्वारा अभिव्यक्ति की है।

नित नए उत्पाद करती कुर्सियां।
आदमी को मात करती कुर्सियां॥
अपनी जड़ता की जड़ें मजबूत कर।
दिवस को भी रात करती कुर्सियाँ॥
जो सरलता से बिताते जिन्दगी।
उन्हीं पर आघात करती कुर्सियाँ॥
फाइलों पर जो रखा करते वजन।
सिर्फ उनसे बात करती कुर्सिया॥
जाम होठों से लगाती तब कहीं।
काम की शुरुआत करती कुर्सियाँ॥ 128

आज राजनीति में भ्रष्टाचार की सबसे ज्यादा अधिकता है। आज के शासकों का काम सिर्फ कुर्सी हासिल करना है कुर्सी के लालच में लड़ाई-झगड़े, भ्रष्टाचार पूरे देश में फैला है। आज के नेताओं की स्वार्थपरक जिन्दगी को देखकर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

कुर्सी लालच द्वेष की, लूटम-फूट प्रपंच,
बंदर आपस में लड़े, बिल्ली छीना मंच। 129

आज की राजनीति में ज्यादातर गैर जिम्मेदार और भ्रष्टाटारी शासकों की अधिकता हो गयी है। राजनेता सिर्फ कुर्सी के लालच में ही जीते है आज के राजनेताओं के लिए कुर्सी अराध्य हो गयी है। देश के बढ़ते भ्रष्टाचार से उन्हें कोई सरोकार नहीं है। राजनीति में बढ़ती विसंगतियों पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है -

कुर्सी के लालची हैं, क्यू में लगे रहेंगे।
अगले चुनाव आएँ, तब तक नहीं मरेंगे। 130

आधुनिक युग के राजनेता सिर्फ अपने स्वार्थ को देखते है। किस तरह से

उन्हें कुर्सी हासिल होगी किस तरह से पार्टी को बचायेगे इन्हीं कार्यो को करते है। देश में बढ़ते भ्रष्टाचार से उन्हें कोई मतलब नहीं है। धन ही समाज के मानवीयता से लेना-देना है । कुर्सी के लालची सत्ताधारियों पर कवि श्यामसुन्दर घोष ने इस संदर्भ में व्यंग्य प्रस्तुत किया हैं-

बस अपनी पार्टी को देखो
बस अपनी कुर्सी को देखो
क्या लेना है देश-दशा से
मान-मूल्य भट्ठी में झोंको
बस पिछलग्गुओं की जमात हो
तेजस्वी लोगों का क्षय हो। 131

आज की राजनीति में शासक दल कुर्सी प्राप्त करने के लिए अपना -अपना जोर लगाते है। राजनीति व्यवसाय का क्षेत्र बन गयी है। पहले के समय में राजनीति देश के लिये गौरव थी। परन्तु आज कुर्सी का व्यापार बन गयी है। इस सम्बन्ध में कवि रोहिताश्व अस्थाना ने लिखा है-

राजनीति के क्षेत्र में, सब उन्निस या बीस।
वंशज है कुछ बालि के, कुछ दिखते दससीस॥
नेताजी संसद गए, पुनः न आए काज॥
कुर्सी को मत छोड़िए, चिपके रहिए यार।
राजनीति में हर जगह कुर्सी का व्यापार॥ 132

आधुनिक युग की राजनीति में दिन पर दिन परिवर्तन ही होते जा रहे है। राजनेताओं के लिये कुर्सी ही सर्वोपरि है। पूरे देश में कुर्सी को व्यवसाय का रूप बना दिया है। ऊँचे पद पर पहुँचकर नेता धन कमाने में लग जाते है। इस बदलते परिवेश पर कवि रोहिताश्व अस्थाना ने व्यंग्य किया है।

कुर्सी को मत छोड़िए, चिपके राहेए यार।
राजनीति में हर जगब, कुर्सी का व्यापार॥
मुखिया जी ने कर दिया, सममुच ग्राम सुधार।
जीप खरीदी पुत्र को, खुद ले आए कार॥ 133

आधुनिक युग में राजनेता किसी भी कीमत पर कुर्सी को नहीं छोड़ना चाहता है। कुर्सी का मोह बढ़ता ही जा रहा हैं। कुर्सी पाने के लिये अनेंक प्रकार के हाथकण्डों

का प्रयोग करते है। और योग्यता के बिना ही मंत्री पद मिल जाता है। आज का राजनीतज्ञ कुर्सी से ही चिपका रहना चाहता है। इस सम्बन्धमें कवि-सुरेश नीरव ने व्यंग्य दोहे दृष्टव्य किये है-

खेल कुर्सी के हैं, नीरव जी, बड़े बेंढ़गे।

मंत्री सूबे का बना भैंस चुरानेवाला॥ 134

आधुनिक युग के राजनेता सिर्फ कुर्सी को ही अपना अराध्य मानते है। कुर्सी से हट जाने का भय उन्हें सदा रहता है। इसलिए कुर्सी पर अधिकार बनायें रखने के लिये अनेंक चाले चलते रहते है। कुर्सी की लालच में नेता भ्रष्टाचार के आकंठ में डूब गये है, और इसका परिणाम जनता को भुगतना पड़ रहा है। कुर्सी के लालची सत्ताधारियों पर कवियत्री सरला भटनागर ने व्यंग्यात्मक प्रहार किया है -

कौन आज के नेताओं की बोलों बात चलाए

कुर्सी के आगे पीछे जो अपना जाल बिछाएँ

सब ने उसके लिएधर्म ईमान गँवाया

सबको अपनी ढपली अपना राग सुहाया

दुःख बढ़ते जाते जनता के कौन करे सुनवाई

अनुचित को ही उचित बनाया ऐसा।

राज्य धर्म सब नष्ट हुए हो जैसा॥

रे पैसा..... 135

4. लाल फीताशाही : युगीन राजनीति की नींव भ्रष्टाचार पर आधारित हो गयीं है। और लालफीताशाही को प्राथमिकता मिल गई है। आधुनिक युग मेंदेश के शासकीय कार्यालय भ्रष्टचार का केन्द्र बन गये है। समाज में आम आदमी के बिना रिश्वत दिये कोई कार्य नहीं होते है। आज के कार्यालयों में कोई भीकार्य इतने विलम्ब से होता है कि आदमी दुनिया छोड़ कर ही चला जायें। आम जनता को बढ़ते हुए प्रशासकीय भ्रष्टाचार से अनेंक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

आज के प्रशासकीय भ्रष्टाचार पूरे देश में फैल रहा है। सरकारी कार्यालय भ्रष्टाचार के शिकार हो गये है। सरकारी अफसर भ्रष्टाचार में समा कर देश को खोखला कर रहे है, और बेचारी जनता इनके शिकार होकर अनेक कठिनाइयों का सामना कर रही हैं। नरेन्द्र मिश्र धड़कन ने इस संदर्भ में व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

सरकारी कोश

'अफसरों के

जुआ, शराब में बह गए।

विकास और

जनता के अरमान

आँसुओ में बह गए।'136

आज प्रशासकीय कार्यालयों में प्रशासक भ्रष्टाचार को अपना लक्ष्य समझने लगे है। आज कार्यालयों की स्थिति तो यह है कि वहाँ पर जब तक रिश्वत न दी जाये कोई भी कार्य तत्परता ने नहीं होता है सरकारी कार्यालयों पर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर जय कुमार 'रुसवा' ने व्यंग्य किया है -

सरकारी अफसर ने

टेबल के

नीचे से जब

सौ के नोट की

हरी पत्ती पाई

तभी पढ़ पाया

वह

फाइल की4

लिखाई। 137

सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत के कोई कार्य नहीं होता है। कार्यालयों के चपरासी भी रिश्वत के बिना कोई कार्य नहीं करते है। आप आदमी को इन्हें भी रिश्वत देनी पड़ती है। कवि जय कुमार रुसवा ने कार्यालयों की व्यवस्था पर सटीक व्यंग्य किया है-

आयकर विभाग में

चपरासी भी

जब कुछ

नकद रकम पाता है

तभी फाइल

टेबल पर

लाता है

यह कौन सा

टैक्स

कहलाता है? 138

युगीन राजनीति लालफीताशाही की शिकार है। आज सरकारी कार्यालयों में घोटाले हो रहे है इसकी देन राजनीतिज्ञ है। आज कार्यालयों की स्थिति यह है कि सभी कार्य सिर्फ कागजों पर ही हो रहे है। सरकारी कार्यालयों में बढ़ते हुए घोटालों पर कवि अशोक चक्रधर ने व्यंग्य पंक्तियाँ इन्हीं भावों की बड़ी मार्मिक अभिव्यंजना करती हैं-

रात्रि का समय,
जब बारह पर आ गई सुई।
तो प्रतियोगिता शुरु हुई।
सर्वप्रथम जंगल विभाग आया
जंगल अधिकारी ने बताया-
इस प्रतियोगिता के
सारे फर्नीचर के लिए
चार हजार चार सौ बीस पेड़
कटवायें जा चुके हैं,
और एक-एक डबल बैड
एक-एक सोफ़ा-सैट
जूरी के हर सदस्य के घर
पहले ही
भिजवाए जा चुके हैं।
हमारी ओर से
भ्रष्टाचार का यही नमूना है।
आप लोग लोग सुबह जब
जंगल जाएंगे
तो स्वयं देखेंगे कि
जंगल का एक बड़ा हिस्सा

अब बिलकुल सुना है।
अगला प्रतियोगी
पी. डबल्यू डी. का.
उसने बताया अपना तरीका-
हम लैण्ड-फिलिंग
या अर्थ फिलिंग करते हैं
यानी जमीन के
निचले हिस्सो को
ऊंचा करने के लिए
मिट्टी भरते है।
हर बरसात में
मिट्टी वह जाती हैं।
और समस्या
वहीं की वहीं रह जाती है।
जिस टीले से
हम मिट्टी लाते हैं।
या काग़जो पर
लाया जाना दिखाते हैं।
यदि सचमुच हमने
उतनी मिट्टी को
डलवाया होता।
तो आपने उस टीले की जगह
पृथ्वी में
अमरीका तक का आर-पार
गड़ढ़ा पाया होता।
लेकिन टीला
ज्यों का त्यों खड़ा है।
उतना ही ऊँचा
उतना ही बड़ा

मिट्टी डली भी
और नहीं भी,
ऐसा नमूना
नहीं देखा होगा कहीं भी। 139

आज सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार की अधिकता पायी जाती है। समाज में गरीब व्यक्ति को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार द्वारा गरीबों के लिये कई योजनायें बनाई जाती है। और उन योजनाओं के धन का एक बड़ा हिस्सा नेतागण और सरकारी कर्मचारी हड़प लेते हैं। और गरीब जनता को ज्यों की त्यों परेशानियों को झेलता पड़ता है। लालफीताशाही के इस भयंकर रोग से व्यथित होकर डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल लिखते हैं-

उन्होंने गरीबी मिटाओं कार्यक्रम पर
अत्यधिक बल दिया तो
हमने उनसे प्रश्न किया-
'महोदय, बताएँ'
सरकार द्वारा उछाली गई रोटी का
छोटा-सा टुकड़ा ही
ग़रीब को मिल पाता है
बाक़ी कहाँ जाता है?
वे बोले-
यही तो समाजवाद में हमारा
गहरा विश्वास जताता है,
एक गरीब के बहाने
सैकड़ों की गरीबी मिटाता है। 140

आज का भारतीय समाज लालफीताशाही का शिकार हो गया है। सरकार द्वारा कोई भी योजना बनाई जाती है। तो उसका फायदा सरकारी अफसर उठाते है। और समाज की गरीब जनता ज्यों की त्यों रह जाती है। लाल-फीताशाही ने देश को लूटना प्रारम्भ कर दिया है। इस सम्बन्ध में प्रेम किशोर पटाख़ा ने व्यंग्य किया है -

स्कूल में बच्चों को
एक दाने की मूगफलियाँ बांटी जा रही थीं

यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी
मैंने शिक्षक से कहा–'ये मूँगफलियाँ जो बच्चों में बटवाई हैं
बतायेंगे आप, कहाँ से मंगवाई हैं?
क्या इतनी पैदावार घट गई
इस नये जमाने की
पैदा होने लग गई मूंगफलियां
केवल एक दाने की'
तब शिक्षक ने मेरे प्रश्न का किया समाधान
और कहा– 'श्रीमान !
कैसे बताऊँ आपको
इस देश में बढ़ते हुए पाप को
ये मूंगफली
जब ऊपर से चली
तब पूरे चार दाने की थी
वह तो इसका एक दाना
हमारे बड़े साहब खा गये
दूसरा दाना छोटे साहब पचा गये
जब दो दाने दो अफसर की
दाढ़ में अटक गये
मौका पाकर तीसरा दाना
हेड मास्टर साहब गटक गये
इस तरह की व्यवस्था
चल रही है सरकारी खजाने की
ऊपर से मूंगफलिया आती हैं।'
पूरे चार दाने की
मगर भ्रष्टाचार की आंधी में बह जाती हैं
जनता तक आते-आते
एक दाने की रह जाती है। 141

लालफीताशाही से समाज के आम व्यक्ति त्रस्त हो गये है। सरकारी अफसर

इतने घोटाले करते है। योजनाओं का अधिकांश धन अफसरों की तिजोरियों में भर रहा है। और देश खोखला हो रहा है। इस सम्बन्ध में प्रकाश मिश्र ने व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की है-

'किसान ने कहा, भैया
बाँध कहाँ बना है?
नदी कहाँ बहती है ?
हमें बताओ।
हमने कहा,
अपनी कलम उठाओ
ईट कुम्हार के घर में
और उसका सारा कमीशन
इंजीनियर के दफ्तर में
सीमेंट
ठेकेदार की कोठी का
भार सहती है
और नदी मिनिस्टर के बंगले
में बहती है।' 142

5. प्रशासकीय भ्रष्टाचार :-

प्रशासनिक तन्त्र में व्याप्त अव्यवस्था और भ्रष्टाचार से पूरा देश खोखला होता जा रहा है। जहाँ शासक वर्ग के उच्चप्रतिनिधि, जनता के कर्णधार माने जाते थे। आज जनता में भ्रष्टाचार फैला रहे है। तब उनके अधीन अधिकारी वर्ग किस तरह मर्यादा में रह सकता है। समाज का कोई भी कार्याळ्य ऐसा नहीं है जहाँ घोटाले नहीं होते है।

भारत में शासक दल भ्रष्ट होता जा रहा है। आधुनिक राजनेता ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे है। आज सरे आम घोटाले होते है। नेतागण अफसर, कर्मचारी अपने परिवारों को ऐश्वर्य और वैभव से सम्पन्न कर रहे है , और आज जनता ठोकरें खा रही है। इस प्रकार के भ्रष्ट और स्वार्थी प्रशासन परकवि अल्लड़ बीकानेरी ने व्यंग्य किया है-

आए दिन विस्फोट करे जो
आदम खोर फरिश्ते

अफसर और लीडरों से क्यों

है उन सबके रिश्ते

क्या पाया आयोग बिठा के कोई बोलता नहीं

बैठ गए सब मुंह लटकाके कोई बोलता नहीं। 143

सरकारी अफसर, कर्मचारी सभी रिश्वत का पैसा कमाने में लगे हुए है। इस युग में बिना रिश्वत के आम आदमी को कामयाबी हासिल नहीं होती है। प्रशासन के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि अल्लड़ बीकानेरी ने व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है।

गूँगे क्लर्क, अर्दली बहरे

अफ़सर आँखों का अंधा

कहाँ आ फँसा उड़ते पंछी

कुतर नौकरी का फंदा

जितने शिष्य बनाये तूने

निकले गुरू घंटाल सभी

खीचं रहे हैं, दोनों हाथों

दो नम्बर का माल सभी। 144

कवि काका हाथरसी ने प्रशासन के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है। आधुनिक युग में प्रशासन भ्रष्ट होने के कारण सभी कार्यलय में बेईमानी, रिश्वत का बोलबाला है। बिना रिश्वत के कोई कार्य नहीं होता है। न्याय और अन्याय नोटो पर आधारित है जो पैसे से मजबूत है। उसी को कामयाबी मिलती है।

न्याय और अन्याय का, नोट करो डिफरेंस,

जिसकी लाठी बलवती, हाँक ले गया भैंस।

निर्बल धक्के खाएँ, तूती बोल रही बलवान की।

पर उपकारी भावना, पेशकार से सीख,

दस रूपए के नोट में बदल गई तारीख।

खाल खिंच रही न्यायलय में, सत्य-धर्म ईमान की। 145

आज प्रशासन में भ्रष्टाचार का समावेश पूर्ण रूप से फैल गया है। पूरे देश में हिंसा ही व्याप्त है। आज के शासक जगह-जगह दगें करवाते है जिसमें कितनों की जाने जाये उससे उन्हें कोई मतलब नहीं है। काका हाथरसी ने प्रशासन में बढ़ते हुए

भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।

मेरे शासन में-
अहिंसा परमोधर्म की बजाय-
हिंसा परमोधर्म की नारेबाजी होगी
सरेआम
बूढ़ा मरे या जवान,
हमको हत्या से काम।
कही तूफान। कहीं भूकंप,
कहीं बाढ़, कहीं सूखा
फिर जनता को उल्लू बनाने के लिए -
जाँच आयोग बिठायेंगे
सनसनी खेज अफवाहों द्वारा,
कराए जाएँगे दंगे। 146

आधुनिक युग में राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है। राजनीति में लोग झूठ फरेब, बेईमानी का सहारा लेकर ही पैसे कमाते है। कोई भी सरकारी तंत्र ऐसा नहीं है। जहाँ भ्रष्टता नहीं है-

राजनीति के मंच पर मिलें झूठ के ठूँठ,
या फिर इनकमटैक्स में देख लीजिए झूठ। 147

भारत में भ्रष्टाचार इस तरह फैल गया है, कि सरकारी कार्यालयों में छोटी जगहों पर सभी अपनी मर्जी से काम कर रहे है। कई जगहों पर लोग नौकरी करते है लेकिन वहां पर कभी जाते नहीं है। इस संदर्भ में काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

शक्ल देखी न कभी दफ्तर की।
वो तनखा पा रहे हैं चुप रहिए। 148

आज के युगीन राजनीतिज्ञ पूर्ण भ्रष्ट हो चुके है। जिससे सरकारी कर्मचारियों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इस दौर में ईमानदारी से कोई कमाना नहीं चाहता है। काका हाथरसी ने इसको व्यंग्यात्मक दोहे द्वारा प्रस्तुत किया है।

दिन-दिन बढ़ता जा रहा,
काले धन का जोर,
डार-डार सरकार है, बात-पात कर चोर। 149

आधुनिक युग में प्रशासन में सिर्फ, झूठ, बेईमान, रिश्वत का ही बोलबला है। इस प्रकार की परिस्थितियों में ईमानदार व्यक्ति का जीना मुश्किल हो गया है। इस भ्रष्ट प्रशासन में झूठे व्यक्ति को कामयाबी हासिल होती है। इस पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य द्रष्टव्य किया है।

सत्य बोलने पर मिली,
अफसर सकी फटकार,
झूठे सर्टिफिकेट पर, छुट्टी लेली चार। 150

आधुनिक युग में नेतागण भ्रष्टाचार का सहारा लेकर देश को खोखला करने में लगे है। घोटाले करने के लिये अधिकारी वर्गको भी बढ़ावा मिल रहा है। प्रशासन में उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक सभी भ्रष्ट होते जा रहे है। और देश पतन की ओर बढ़ रहा है। इस पर रामगोपाल सिंह की व्यंग्य पंक्तियाँ इस प्रकार है -

लीडर ने आंधकारियों को भेजा संदेश
नहीं अकेले खाइए, वर्ष गाँठ पर देश
डकारो-फिफ्टी-फिफ्टी॥
छोटे-मोटे सफर हैं, अमरीका जावान
सबसे लम्बी यात्रा, हैं घर से शमशान
करोगे बिना टिकट के। 151

आज देश में ऐसी राजनीति की ऐसी महामारी फैली है कि पूरा देश इससे बीमार है। आज के नेतागण अपने नीचे के अधिकारियों को आदेश देते है घोटालें करवाते है। कर्मचारियों को आदेश का पालन करना उनकी मजबूरी हो जाती है। भ्रष्टाचारी प्रशासन पर कवि काशीपुरी कुंदनने व्यंग्य द्वारा अभिव्यक्ति की है-

हे ! कानून के अधिकृत कलात्कारी।
कर्तव्य से आँख मूँदे हुए अधिकारी
चेहरा पीला, नीयत काली मगर बदनलाला है
आपका क्या ख्याल है?
अधिकारी ने कहा - 'क्या बताएँ यार
हमारा तो हो गया बंटाधार।
आदेश के ऊपर आदेश आता है।
एक आदेश हमेशा दूसरे के खिलाफ जाता है

गली-गली में कोई न कोई नेता है।
कार्यवाही करोतो ट्रान्सफर करा देने की धमकी देता है'
न करो तो सरकार इंक्रीमेंट रोक देती है।
सारी बदनामी हमारे मत्थे झोंक देती है।
कर्मचारी हड़ताल करने पर अलग उथारु है। 152

कवि आदित्य शर्मा 'चेतन' ने आज के भ्रष्ट प्रशासन को व्यंग्य द्वारा समाज के समक्ष कविता प्रस्तुत की है। भारत में आयदिन घटनायें घटित होती रहती है। इन बढ़ती हुई समस्याओं को रोकने के लिये कानून द्वारा कोई कदम नहीं उठाया जाता है। प्रशासन भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। सभी जगह भ्रष्टाचार और अवसरवादिता के दृष्य दिखाई देते है-

घटनायें लूट-मार मारपीट आग बनी,
बढ़ रही 'चेतन' ये आजकल देश में,
कानून बना है यहाँ हाथ का खिलौना मात्र,
खेलने लगे हैं इसे खूनी इस देश में,
शांति की पुकार फिर मचने लगी है यार,
शांति लाओ, शांति लाओ शोर मचा देश में,
संसद नहीं है जब भारत की शांत तब
शांति भला आयेगी बताओ कैसे देश में। 153

6. भ्रष्ट खोखले आदर्श :-

कवि शैल चतुर्वेदी व्याप्त ने भ्रष्ट-खोखले आदर्शों का पर्दाफाश किया है। आज राजनीति में शासकों को सिर्फ अपना स्वार्थ दिखाई देता है। भ्रष्टाचार, पद लिप्सा नारे बाजी राजनीति के खोखले आदर्श है। आज के राजनेता जन कल्याण के कार्यो से विमुख है। ये नेता खोखले आदर्शो को अपना रहे है। भारतीय नागरिक इन खोखले आदर्शो को जानकर भी नेताओं पर उगँली नहीं उठा सकते हैं।

विक्रम से बोला बेताल
लोकतंत्र का देख कमाल
रोजी, रोटी और लंगोटी
लाजवाब ये तीन सवाल
सबको अपनी-अपनी चिन्ता

कौन देश का करे खयाल
जिसकी कुर्सी उसका पौउवा
पौउवा पीकर करे धमाल
डंडा ऊँचा रहे हमारा
कहते फिरते झंड़ा लाल
मछली खुद आके फँस जाए
राजनीति है ऐसा जाल
जनता की किस्मत में पर्चो
सील लगा पेटी में डाल
हर बाजी वे ही जीतेंगे
आगे पीछे खड़े दलाल
जीत गये तो भाव बढ़े हैं
चलें अढ़ाई घरकी चाल
हार गये तो करवा देंगे
चाहे जहाँ वहीं हड़ताल
सिर पर है जादू की टोपी
तन पर है खादी की दाल
उन पर अँगुली कौन उठाये,
जिनकी अंटी में है माल। 154

कवि अश्विनी कुमार पाण्डेय के अनुसार आज युगीन राजनीतिज्ञों का झूठ, फरेब, धोखा खोखले आदर्श रह गये है। पूरा भारत देश भ्रष्टाचार की चपेट में समा गया है। इस सम्बन्ध में व्यंग्य पंक्तियों को प्रस्तुत किया गया है-

भले हो देश में दंगा
हमें चिंता नहीं कोई
विदेशी कर्ज़लेलेकर
मनाते रोज हम जलसे
कहो कंगाल, भिखमंगा
हमें चिन्ता नहीं कोई
बिकेंगे हम, बिकोगौ तुम,

बिकेगा देश यह सारा

रहा यदि हाल बेढंगा –

'हमें चिंता नहीं कोई।' 155

आज के नेताओं की उपदेश प्रियता पूरे देश में विख्यात है। यह व्यवहारिक अकर्मण्यिता के सूचक है। आज के राजनेता बड़े-बड़े आदर्शो की बातें करते है। परन्तु यथार्थ में स्व-प्रतिष्ठा, यश, सम्मान के भूखे है। ये नेतागण कहते कुछ है और करते कुछ है। राजनीति के भ्रष्ट खोखले आदर्शी पर कवि अशोक अंजुम ने व्यंग्य किया है-

नेता करे न नौकरी, नेता करे न काम

फिर भी नेता के लिए है आराम हराम

बिताते सारी बातें

कोठी में बैठे करें झोपड़ियों की बातें

झोपड़पट्टी हटा वहाँ होटल बनवा के

करें गरीबी दूर गरीबों को मरवा के। 156

आज की राजनीति भ्रष्टाचार को प्रश्य दे रही है। आज के नेता भ्रष्ट, अवसरवादी, पद लिप्सा, खोखले, नारेबाजी आदि अनेंक संदर्भ उनके साहित्य में दृष्टिगोचर है। नेतागण देश में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे है और दिखावे के लिये आदर्शो की बाते करते है। यथार्थ में इनका व्यक्तित्व खोखला है। इस सम्बन्ध में कवि मूलचन्द्र शर्मा 'नादान' ने हास्य-व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है –

जो व्हिस्की ठर्रा रम, शराब

वोटर को पिलाये उसका है।

जो झूठे आश्वासन देकर

वोटर को पटाये उसका है।

जो मुख्य मंत्री से मंत्री पद

पाकर के अपना भला करें।

यदि दुगना लालच दे कोई

तो मिलकर उससे दगा करे,

जो अपने मुख्य विरोधी के

सर को तुड़वाये उसका है।

जो गुंडो को दे संरक्षण

गोली चलवाये उसकाहै- ये अबळा...
जो भूख-नंगे, भिखमंगों को
क्रंति करो कह उकसाये,
जो स्वयं अन्न को छिपा-छिपा
गोदामों में भारता जाये,
जो देश सभाओं में गरीब
आंसू की झड़ियां लगा सके
लेकिन जो काले पैसे से
दस-पांच कोठियाँ बना सके,
बनकर जासूस विदेशों का
जो करे देश से गद्दारी।
जिसकी फितरत हो गुंण्डापन,
ऐयाशी, धोखा, मक्कारी,
हिन्दू-मुस्लिम को लडवाये,
जो अपने वोटों की खातिर।
जो काले धन को जमा करे,
ले बैंक विदेशों में जाकर॥ 157

आज के नेताओं का व्यक्तित्व, आदर्श सिर्फ दिखावा मात्र रह गया है। देश में तरह-तरह के प्रशासक अपना अलग-अलग रंग दिखाने में लगे हैं। इन्हें देश की बिगड़ती परिस्थितियों से कोई लेना-देना नहीं है। समाज के कल्याण से विमुख है। भ्रष्ट और खोखले आदर्शी पर इनकी सरकार चल रही है। इस बदलते हुए परिवेश परकवि हुल्लड़ देहरादूनी ने व्यंग्य द्वारा अभिव्यक्ति की है-

इस रामराज्य की लीला का परिणाम न जाने क्या होगा?
अंजाम न जाने क्या होगा
कुछ नेता हैं कुछ लीडर हैं कुछ मुर्गे हैं कुछ तीतर हैं
इस राजनीति के जंगल में सब रँगे रँगाये गीदड़ है।
यदि सुबह दिमाग ठीक इनका तो शाम न जाने क्या होगा?
कुछ लम्बे है कुछ छोटे हैं, कुछ पतले है कुछ मोटे हैं।
इन नेताओं में साठ फीसदी बेपेदी के लोटे हैं।

फिर इन सबसे, बापू का पूरा काम न जाने क्या होगा
है ब्लैक मार्केट गर्म यहां, रिश्वतखोरी है धर्म यहाँ,
चरखा कातो गाढ़ा पहनो, फिर कर ले कोई कर्म यहाँ,
इस देशभक्ति से हाय मेरे देश का नाम न जाने क्या होगा।158

आज के नेताओं का चरित्र उनके आदर्श दिखावा बनकर रह गये है। यह नेता सदाचारी बनकर जनता को लूटने में लगे है, और अपने कर्तव्यों को भूल गये है। कवि काका हाथसी ने नेताओं के खोखले आदर्श पर व्यंग्य किया है-

सदाचार की ओट में, करिए, लूट-खसोट,
मंत्री के चमचे बनो, मिले नोट पर नोट। 159

आज के शासक झूठ, फरेब, भाषणों और (खोखले आदर्शी) को अपनाते है। इनका उद्देश्य जनता को बेवकूफ बनाना है। आज के राजनेताओं के भ्रष्ट खोखले आदर्शो पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

सत्ता से पत्ता कटे, हो करके असहाय,
भाषण देकर विरोधी, जनता को बहकाय। 160

7- दल-बदल की राजनीति :

आज के राजनीतिज्ञों के चरित्र का सबसे भ्रष्ट पहलू दल-बदलना है। सत्ता प्राप्ति के लिये नेतागण अपना सिंद्धात बदल देते है। भारतीय राजनीति का यह सबसे दुखद पहलू है। जनता नेताओं के इस ककृत्य को किंक-र्तव्यविमूढ़ की स्थिति से देखती रह जाती है। नेताओं को अपने सिद्धान्त को छोड़ने का कोई भय नहीं रहा है। राजनीति की इस गम्भीर दशा पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है -

मंत्री पद ही लूट है, लूट सके तो लूट,
अंतकाल पछ ताएगा, प्राण जाएँगे छूट।
प्राण जाएँगे छूट, मेज पर रक्खे पेपर
बदल पार्टी, इस्तीफा पर कर सिगनेचर
कहँ काका कवि, स्वतंत्रता का लाभ उठाओ
राष्ट्र ध्वजा फहरा करके फोटो खिंचवाओ। 161

आधुनिक युग के स्वार्थपरक दल-बदलू नेताओं पर कवि काका हाथरसी व्यंग्य द्वारा प्रहार किया है। राजनीति में नेताओं के लिये दलबदल की नीति सर्वोपरि है।

जिस पार्टी में अपना लाभ देखते है। पार्टी छोड़ वहाँ पर पहुँच जाते है।

राजनीति की दौड़ में
जो नित ठोकर खायँ,
नया मुखौटा लगाकर, दलबदलू बन जायँ। 162

आधुनिक युग में प्रशासन के सत्ता लोलुप प्रशासकों की अधिकता हो गई है। सत्ता के लालची नेता अपना धर्म-ईमान खो बैठे है। कुर्सी के लालची नेताओं के चरित्र में ईमानदारी, सदाचार दूर-दूर दिखाई नहीं देता है। इन सत्ता लोलुप नेताओं के बदलते रूप पर काका हाथरसी ने व्यंग्य द्वारा कटाक्ष किया है।

दलबदलू भैया ओउम् दलबदलू भैया,
सत्ता-लोलुप नेताओं के बाप तुमहिं भैया।

* * *

खींचातानी में कुर्सी के पाए टूट गए,
गांधीवादी त्यागी, रागी बनकर रूठ गए।

* * *

श्रीमान, ऐसा कीर्तिमान स्थापित कर जाएँ,
गिरगिट ईर्ष्या करे, खुदकुशी करके मर जाएँ। 163

काका हाथरसी ने आज के नेताओं के बदलते रूप पर व्यंग्य द्वारा अभिव्यक्ति की है। आज के नेता चुनाव लड़ते समय कुछ कहते है और जीतने के बाद उनका समर्थन बदल जाता है। जहाँ फायदा मिलता है उसी के पक्ष में जाना इनका स्वभाव बन गया है। नेताओं की दलबदल और स्वार्थी होने से देश पतन के गर्त में गिरता जा रहा है।

क्या कहा... समर्थन?
हाँ-हाँ चुनाव लड़ते समय हमने किया था
समर्थन हिन्दी का,
और अब करते है अँगरेजी का।
अवसर आयेगा तो पक्ष लेंगे
तेलगू, तमिल, उर्दु और उड़िया का
शराब की बोतल और भंग की पुड़िया का। 164

आधुनिक युग में राजनैतिक क्षेत्र में अत्यधिक भ्रष्टाचार का समावेश हो गया

है। राजनेता अपने स्वार्थ के लिये दल-बदलकर खूब कमाई करते है। और जनता को मूर्ख बना रहे है। आज केनेता राजनीति में रहकर खूब पैसा कमाकर मौज उठाते है। चाहे उसके लिये उन्हें अपना ईमान खोना पड़ें। राजनीति दलों में दलबदल की क्रिया अक्षम्य अपराध है। इससे देश का राजनैतिक परिवेश धूमिल होता जा रहा है। कहीं ऐसा न हो कि देश की जनता के हृदय में नेताओं को चोर, डकैतों की संज्ञा दी जानी लगे। राजनीति में दल-बदल के परिवेश पर कवि तोताराम गुप्त विरही ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति किया है-

खूब कमाई कर रहे बदल-बदल कर रूप।
मुरख जनता आज तक बजा रही है सूप ॥
बाप नाचता रहा है नौटंकी में जाय।
बेटा भूला वह कला टी.वी. में चिल्लाय॥
कुर्सी पाकर मस्त हैं नेता नटवर लाल।
दौरा करते रात-दिन बजा-बजाकर गाल॥
अलग-अलग खिचडी पका घटकवाद घडियाल।
साँप नेवला लड़ रहे ठोंक-ठोककर टाल॥
कुर्सी पाकर देश की भूल गया है मित्र।
तन से बदबू आ रही लगा रहा है इत्र॥
बिना मारे मरते नहीं भारत में शैतान।
उछलकूद करते यहाँ डाकू-बेईमान॥ 165

कवि आशाकरण 'अटल' ने राजनेताओं की दल-बदल की नीति पर व्यंग्य किया है। नेता अपना फायदा न देखकर दल-बदल देते है। आज के नेतागण सत्ता को नहीं छोड़ना चाहते है। इसके लिये इन्हें कुछ भी करना पड़ा। इस बदलती हुई राजनीति पर कवि आशाकरण 'अटला' ने व्यंग्य की अभिव्यक्ति की है-

गांव में नई सड़क बनते देखकर
और गली के नुक्कड़ वाली पंचायत की बत्ती
जो हमेशा बुझी रहती थी,
आज जलते देखकर
एक बुढ़िया ने सरपंच से पूछा-
'बेटा! चुनाव होने वाला है क्या?

अभी ढ़ाई साल पहले ही तो हुआ था।
सरपंच ने हाँ में सिर हिलाते हुए
और दलबदल के विरूद्ध
एक लम्बा-सा भाषण पिलाते हुए,'
बुढ़िया से कहा-
'ये सब दल बदलूओ के कारण हुआ।
उन्होंने दल बदल के सरकार गिराई,
इसीलिए, चुनाव से पहले
चुनाव की नौबत आई।'
बुढ़ियाँ ने भाषण सुनके
पंचायत की जलती हुई बत्ती को देखा,
नई बनती हुई सड़क को याद किया,
और देश के हर दल बदलू को
सच्चे मन से आर्शीवाद दिया
ये पंचायत की बत्ती
जो पाँच साल बाद जलने वाली थी,
तुमने ढ़ाई साल में जलवा दी है। 166

आधुनिक युग में राजनीति में भ्रष्टाचार की होड़ लगी है। जिसको मौका मिलता है। ऊँचा पद प्राप्त करने की सोचता है। नेता को जिस पार्टी से लाभ होता है उसी के पक्ष में आ जाते है। आज के नेताओं में ईमानदारी शिष्टाचार, अपना कोई सिद्धान्त नहीं रह गया है। इनका अपने वायदो से मुकर जाना और दल-बदल की नीति से जनता का इनके ऊपर से विश्वास हट गया है बदलती हुई राजनैतिक परिस्थितियों पर कवि महर उददीन खा, ने व्यंग्य द्वारा प्रहार किया है -

बोल मत, बस देख तू जो हो रहा है आजकल,
कुर्सियों की दौड़ में पीछे न चल, आगे निकल।
जीत जाए तो मंजे कुर्सी के लेना पांच साल,
हार जाए यदि कभी तो चूक मत फिर दल-बदल।
एक बोरा नोट दस गुंडे लगा ले साथ में,
फिर समस्या कौन-सी है जो नहीं हो पाय हल।

छोड़ दे सिद्धांत सेवा यह पुरानी बात है,

राजनीति के लिए है अब जरूरी राइफल। 167

भारतीय समाज में सबसे अधिक भ्रष्टाचार राजनीति में देखने को मिलता है। सत्ता प्राप्ति करने हेतु नेतागण अपना धर्म सिद्धान्त किसी की परवाह नहीं करते है। आज की राजनीति झूठे वादों और आश्वासनों पर टिकी है। कवि काका हाथरसी ने इस संदर्भ में व्यंग्य किया है-

राजनीति के मंच पर

मिलें झूठ के ठूँठ,

या फिर इनकमलटैक्स में, देख लीजिए झूठ।

लात मार सिद्धान्त को

प्राप्त करो धन-मान

दलबदलू बन जाइए, छोड़ धर्म-ईमान। 168

8. राजनीति व्यवसायी बन गयीं है :

समाज के बदलते हुए परिवेश में राजनीति में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार देखने को मिलता है। आधुनिक युग के शासकों में राजनीति को व्यवसाय का रूप दे दिया है। राजनीति मुनाफाखारों का धंधा बन गयी है। सत्ता प्राप्त करने के बाद बिना पूँजी लगायें ही सत्तादारी करोड़ों की दैलत कमा लेते है। इस संदर्भ में कवि चिरंजीत ने व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है -

बड़ा मुनाफें वाला धंधा, राजनीति का निश्चिय ही,

बिना पूँजी के, बिन निवेश के, दौलत से घर भरता है। 169

आधुनिक युग में समाज का प्रत्येक व्यक्ति राजनीति में जाना चाहता है। सत्ता में जाने के बाद अपना जीवन सफल समझते है। क्यों कि सत्ता में पहुँचकर लाखों-करोड़ो कमाने वाले नेताओं के कारनामे दिखाई नहीं देते। आज राजनीति व्यवसायी बन गयी है। यहाँ पर लोग खाली हाथ जाते है और झोली भरकर आते है। आज की बदलती हुई परिस्थितियों पर कवि सुरेश अवस्थी ने व्यंग्य किया है।

करोड़पति बनना होगा तो

टी.वी. पर क्यों

राजनीति में जाऊँगा।

राजनीति का लेन-देन तो

जनता को भी नहीं दिखता है
वहाँ मंत्री को तो छोड़-
एम. पी. एम. एल. ए.भी
करोड़ों में बिकता है
राजनीति में तो बस
कमाल ही कमाल होता हैं
सात पुस्तों का भिखारीदास
पलक झपकते
करोड़ीमल होता है। 170

स्वतंत्रता से पूर्व राजनीति को एक सम्मान की दृष्टिसे देखा जाता था। राजनेता देश के कर्णधार कहे जाते है। परन्तु आधुनिक युग में राजनीति में सिद्धान्त व्यवसाय के रूप में देखी जाती है। पैसा कमाने के उद्देश्य से प्रत्याशी सत्ता में जाने की सोचता है। जो व्यक्ति सत्ता में पहुँच जाते है उनकी सभी समस्याओं का हल हो जाता है। इस सम्बन्ध में कवि अशोक चक्रधर की व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

राजनीति का
इंसानियत से
कोई वास्ता नहीं है
राजनीति शुद्ध व्यवसाय है,
जिसकी एक निश्चित आय है,
इसमें जीतने वाले के
पौ-बारह
तो हारने वाले के
पौ-तेरह रहते है,
चित और पट्ट दोनों अपनी
इसे राजनीति कहते है,
इसीलिए बंधुवर,
टिकिट की समस्या है।
इसे हलधर हल करे
या कमल या हल चक्र

या फिर हल कर डाले
हाथ का पंजा
बस कर जाए शिकंजा।
हमने कहा–मुर्गादास।
हमारी शुभकामना है–
माल खाते रहें हराम का,
टिकिट तो मिले
लेकिन स्वर्गधाम का। 171

आधुनिक युग के नेताओं का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना है। सत्ता में आकर ये अरबों कमाते है। इतना पैसा कहाँ से मिलता है जनता इससे बेखबर है। और जनता को अनेंक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। राजनीति को आज व्यवसायी केन्द्र माना जाने लगा है। दिन पर दिन राजनीति में मूल्यों का पतन हो रहा है। इन गिरते हुए मूल्यों को देखकर कवि कालीचरण गौतम ने व्यंग्य लिखा है।

अरबों के हो तुम पति, सुन लो नकली बात।
इतना धन कैसे हुआ, की शोषित से घात॥
की शोषित से घात, लूट से पैसा आया।
जवाहरता के देर, स्वर्ग–चाँदी सब पाया॥
कह 'गौतम' कविराय, इकट्ठे कीने सरबों।
ना मेहनत का माल, डकैती डाली अरबो॥ 172

आज के राजनीतिज्ञ हमेशा यह चाहते है कि उनकी सरकार बनी रहें और हंमेशा कुर्सी पर बैठे रहें। प्रशासक हमेशा इसी कोशिश में लगे रहते है कि उनकी सरकार न गिरने पाये क्योंकि राजनति ही तो इनका धंधा बन चुकी है। इस पर कवि काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है–

बनी रहे यह कीमतें, बनी रहे सरकार,
नीची ऊँची नाव हो, डूब जाय मंझधार॥ 173

आधुनिक युग में व्यवसाय के क्षेत्र में राजनीति को सर्वोपरि समझा जाने लगा है। लोग सोचने लगे है कि राजनीति में आने के लिये थोड़ा कर्जा लेलें। फिर सत्ता में पहुँचकर उससे चौगुना हासिल करेगें। आज की जनता राजनीति से भयभीत हो गई

है। रजानीति के बदलते हुए परिवेश पर काका हाथरसी ने व्यंग्य किया है-

कर्जा भी लेना पड़े ले लो आँखे मीच
जीत जाए तो चौगुना एक वर्ष में खींच
एकवर्ष में खींच, महाजन सभी डरेंगे
देख आपका रौब, तकाजा नहीं करेंगे
कहँ 'काका' कवि कर्ज छोड़ होगें आभारी
दिलवा दो उनको कोई ठेका सरकारी। 174

आधुनिक युग के प्रत्याशियों ने राजनीति को व्यवसाय का रूप बना दिया है। जिसकों कोई काम नहीं मिलता है। वह प्रत्याशी बन जाता है। आज के राजनीति को देश के हित के लिये कोई कार्य नहीं करते है। राजनीति के बदलते हुए रूप को काका हाथरसी ने व्यंग्यायित किया है -

परेशान हो जाएँ जब, इस जीवन से आप,
कोशिश करते ही रहो, मत बैठो चुपचाप।
मत बैठों चुपचाप, समय का लाभ उठाओ,
नए इलैक्शन आएँ, प्रत्याशी बन जाओ।
जीत गए तो आदर और अदाब मिलेगा,
हार गए, तो विज्ञापन का लाभ मिलेगा। 175

9. राजनैतिक भ्रष्टाचार :

स्वतंत्रता के बाद हास्य-व्यंग्य का नायक है नेता और नायिका राजनीति। आज के नेता और राजनीति हास्य-व्यंग्य साहित्य में पूर्ण रूप से भ्रष्टाचार का समावेश हो गया है। आज का लोकतंत्र समाज के सामने एक मज़ाक बनकर रह गया है। आये दिन इसमें भ्रष्ट तरीके से अपनायें गये खेल चलते रहते हैं। आज का लोकतंत्र केवल कहने मात्र का रह गया है। राजनीति में कोई भी अंग ऐसा नहीं है। जहाँ भ्रष्टाचार न मिले, आज के इस बदलते हुए परिवेश पर कवि केदारनाथ अग्रवाल ने व्यंग्य किया हैं-

हे मेरी तुम ! सब चलता है लोकतंत्र में
चाकू-जूता-मुक्का मूसल। और नहाना
हे मेरी तुम ! भूल-भटकरकर भ्रम फैलाए
गलत दिशा में! दौड़ रहा है बुरा जमाना।
हे मेरी तुम ! खेल-खेल में खेल न जीते

जीवन के दिन रीते-बीते,
हारे बाजी लगातार हम,
अपनी गोट नहीं पक पाई
मात मुहम्मबत ने भी खाई
हे मेरी तुम ! आओं बैठो इसी रेत पर
हमने तुमने जिस पर चलकर उमर गँवाई। 176

आधुनिक युग में राजनीति भ्रष्टाचार का केन्द्र बनी हुई है। राजनीति में सब एक से बढ़कर एक है। आज की राजनीति में दलबदल की नीति कुर्सी की राजनीति झूठ, फरेब आदि विसंगतियों का समावेश हो गया है। राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर डॉ. रोहिताश्व अस्थाना लिखते हैं-

राजनीति के क्षेत्र में, सब उन्निस या बीस।
वंशज है कुछ बालि के, कुछ दिखते दससीस॥
आरक्षण की आजकल, हुई गरम दूकान।
पनकाड़ी बाबू बना, पंड़ित बेचे पान॥
मक्खन बाजी में निपुण, नारी बाजी ज्ञात।
नेता के चमचे बनों, करो खूब उत्पात॥
मुखियाजी ने कर दिया सचमुच ग्राम सुधार।
जीप खरीदी पुत्र को, खुद लाए कार॥
सच्चाई की सेज पर, गद्दे काटे दार।
मिथ्यारानी कर रही, फूलों का व्यापार॥
कथनी करनी में बड़ा, अन्तर दिखता आज।
नेताजी संसद गये, पुनः न आए काज॥ 177

आज की राजनीति में विद्रूपताओं एवं विडम्बनाओं का अत्यधिक समावेश हो गया है। आज देश में कई भ्रष्ट नेता है। जो अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये कई तिकड़म किया करते है। स्वार्थी नेताओं के शासन में जनता को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आज के शासकों की सत्ता में आने के बाद जो भी तमन्ना अधूरी रहती है दुबारा जीतने पर पूरी कर लेते है। आज के शासक अपने दायित्वों का ठीक से निर्वाह नहीं करते है। राजनीति की इन समस्याओं पर सूर्यकुमार पाण्डेय ने व्यंग्य द्वारा लिखा

है।

रहनुमाओं के हुए दिन कब के पूरे देखिए,
रह गए इस दौर में केवल जमूरे देखिए।
अब गुलाबों की तमन्ना छोड़िए प्यारे मियाँ,
सूघने के नाम पर केवल धतूरे देखिए।
हर तरफ गड़ढ़ो के जंगल, गोबरों की बस्तियाँ,
यू तरक्की में है, शामिल उनके धूरे देखिए।
चाकुओं के दम पे सारे शोहदे एम.ए. हो गये,
नींव जिनकी खोंखली है, वे कंगूरे देखिए।
इस इलेक्शन बाद, उनके पूरे सब हो जाएँगे,
गम जो पिछली दफा के थे अधूरे देखिए। 178

आज के राजनीतिज्ञ जन सामान्य की समस्याओं को बढ़ावा दे रहे हैं। और अपनी स्वार्थ परक राजनीति को बढ़ावा दे रहे है। आज की जनता नेताओं के कारनामों से परेशान हो गयी है। आधुनिक युग के नेता त्याग की अप्रेक्षा भोग में विश्वास करते है। जन कल्याण और उनकी बातों से उन्हें कोई लेना नहीं है। राजनैतिक भ्रष्टाचार को कवि दिनेश रस्तोंगी ने व्यंग्यात्मक रूप में व्याखायित किया है-

रोशनी के वास्ते सुरमा न हरगिज बेचिये।
दूसरे की आंख में कुछ धूल कसकर झोकिये।।
है अगर साया किसी नेता, का सिर पर आपके।
ठाट से गुराईइये जिस-तिस पे चाहे भौकिये।।
नमन की मुद्रा बनाकर, मिलिये जो हो सामने।
भौकना है गर छुरी तो पीठ पीछे भौकिये।।
कुछ नहीं बोलेगी ये जनता बड़ी मासूम है।
वोट इसका छोन कर, इसको दनादन पीटिये।
सरफरोशी की तमन्ना वाली तस्वीरें हटा।
मुल्क के सौदागरों के फ्रेम में जड़ दीजिये।।
था इशारा साफ उनका, आप पर समझे नहीं।
एक मौका दे दिया अब हाल अपना देखिये।। 179

युगीन राजनीतिज्ञो का उद्देश्य सिर्फ वोट प्राप्त करके सत्ता प्राप्त करना है।

आज की राजनीति जो वेश्या बन गयीं है। जिसका न कोई धर्म है न ईमान है। आज के नेता सिर्फ यह देखत है कि उन्हें सत्ता में कैसे कामयाबी मिले।

धूर्त, कपटी नेताओं से जनता हमेशा भयभीत रहती है। राजनीति में फैलते हुए भ्रष्टाचार पर डॉ. सत्यकाम 'गिरीश' ने व्यंग्य किया है-

ऊँचा पद हो, द्रव्य से भरे आप के भाण्ड
होवे रोज विहार-सा कोई चारा काण्ड
रचें हवाला नित नये रोज उड़ाये माल
चाहे जितनी आयु हो, लाल, लाल हो गाल
भीख मांगने की नहीं तुम्हें जरुरत आज
नेता जी ने कल तुम्हें पहनाया था ताज
रैली में खाना तुम्हें जिसने बांटा मुफ्त
उस दलकी जय-जय करो क्यों बैठे हो सुस्त
बूथों पर कब्जा करो यही समय की मांग
मत पेटी ही दो बदल तोड़ सभी की टांग
हो अपना आतंक तो निश्चित होगी जीत
वोट न डालेगी स्वयं जनता हो भयभीत
इश्क बुढ़ापे में करे, मन से रहे जवान
जिंदा दिल इंसान से खुश रहते भगवान। 180

युगीन परिवेश में राजनीति राष्ट्र के लिये नासूर बन गयी। आज के शासक बेईमान, एक-दूसरों पर आरोप लगाने वाले हो गये है। इन शासकों का चरित्र कपटी बनकर पशुवत बन गया है। आधुनिक युग की हिंसक राजनीति पर जय कुमार रुसवा ने व्यंग्य किया है -

पार्टियों की बिसात
बेईमानों की जमात
आरोपों
प्रत्यारोपों की बरसात
विश्वासघात
बस विश्वासघात
भरी हुई है।

ऐसे करामातो से
वर्तमान में
शासन की बात। 181

आधुनिक युग में राजनीति जो दाव-पेचों का अखाड़ा बन गयी है। युगीन राजनीति ने दल-बदल, छल-कपट, आतंकवाद आदि को बढ़ावा दे रही है। आज के नेताओं के दुराचारों की वजह से देश की स्थिति बिगड़ती जा रही है। देश की जनता चुप बैठी रही जो देश गर्त में चला जायेगा। भ्रष्टतार के विरुद्ध जनता को कदम उठाना जरुरी है। बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि धूमकेतु ने अपनी कविता में इस प्रकार लिखा है -

कब तक सहन करोगे यारों डूब जायेगा देश
निर्णायक जंग लड़ो, पहन लो केशरिया परिवेश।
वीर बहादूर जनता की, छाती पर चढ़ ऐठे हैं
सद्गुणी, सद्पुरुष संत समाजू सत्ता में बैठे है।
खाये कमीशन भांड विदुषक रकम भेजे परदेश
कब तक सहन करोगे यारों डूब जायेगा देश,
हत्या करके हत्यारे क्षणभर में लुप्त हो जाये ?
जागरुक अधिकारी फर्ज में, सब छुन-छुने बजाते?
निअपराध चढ़ेगें कब तक, आंतकवाद को भेटे
कब तक सहन करोगे यारों डूब जायेगा देश ?
कांटा काटे से निकलेगा बुर्जुग यहीं बतलाते
और हमारे धर्मग्रन्थ में यही उदाहरण आते
खप्पर भर दे मां भवानी का कर रक्तिम अभिषेक
कब तक सहन करोगें यारों, डूब जायेगा देश। 182

साहित्यकार राजनीतिज्ञ नहीं होता है और न ही वह राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाता है। वह तो तटस्थ भाव से उसका सर्वेक्षण करता है। राजनीतिक परिस्थितियाँ जाने-अनजानें उस पर प्रभाव डालती है। और उन से प्रेरित होकर साहित्यकार काव्य के माध्यम से स्पष्ट कर देता है। इस संदर्भ में धूमकेतू ने राजनीति में फैलते हुए भ्रष्टाचार पर अभिव्यक्ति की है युगीन शासक भ्रष्टता की सीमा को पार कर गये है। देश में आय दिन दंगे करवाये जाते है। सत्ता प्राप्ति की लालच में इनका

कोई ईमान नहीं रहता है। ये अपने कर्तव्य और सिद्धान्तों से बेखबर है। इन सत्ताधारियो से देश को बचाना होगा-

सहन करने की एक सीमा है, आखिर कब तक बर्दास्त करे।
गुड़ों को सर पर बिठलाये, कब तक उनको सलाम कहे।
आग लगाकर चाहते हो, शांती और शुभकामना हो।
कलंकित कर भारत माता को, दुष्टों से फिर सद्‌भावना हो,
सब काम तुम्हारे आत्मघाती, पदलोलुप और स्वार्थ जन है।
संस्कृति के तुम हत्यारे हो, विधर्मी हो पापी मन हैं,
जब चाहा संविधान तोड़ा, गर्दन अपनों की काटी,
वोटों के खातिर नपुंसको, धरती माता के धाती हैं,
तुमने कश्मीर को उलझाया, गद्दारों के तलुए चाटे।
तुष्टीकरण के पक्षधर तुम, भारत माता के हाथ काटे।
यदि अब भी सबल नहीं होंगे, गारंटी शांति की कौन देगा।
तुम गले-गले तक डूबे हो- रक्षा का भार कौन लेगा।
संगठन हमारा लक्ष्य बन्धु, सत्ता तो एक बहाना है।
संस्कृति धर्म के साथ-साथ, हिन्दुस्तान बचाना है। 183

युगीन राजनीति में ईमानदार शासक मिलना मुश्किल हो गया है। सभी भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे है। भ्रष्टाचार से ग्रसित समाज में ईमानदार, सच्चे व्यक्ति को जीना मुश्किल हो गया है। आज के शासक अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए एक जाल बिछाया है। जिससे आम जनता को छुटकारा पाना मुश्किल इस प्रकार की राजनैतिक विद्रूपताओं, भ्रष्टाचार पर कवि सूर्यकुमार पाण्डेय ने व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है-

बैठक में
और भी तमाम सुझाव आए
जैसे-
देश में नया कानून लाया जाए
जो ईमानदार हैं
उन्हें फाँसी पर लटकाया जाए
जो भाईचारे की बात करे
उसे खुद चारा बनाकर

भूखे भेड़ियों के सामने
डाल दिया जाये
जो सच बोले–
उसे कारावास की सजा दी जाए
और जो इस कानून का विरोध करें
उसकी जमानत तक न ली जाए
जो अहिंसा की बात करे
उसे नोंच–खसोट लिया जाए
और जो घोटाले में साथ न दें
उसका गला घोट दिया जाय,
जो व्यक्ति
रिश्वत खाए–बिना जी रहा हो
उसकी संपत्ति की
जांच की जाए
कि बिना कुछ लिए–दिए
वह किस तरह जिंदा है
कहीं कोई ईमानदार आदमी तो
इसके साथ नहीं है। 184

आज के राजनीतज्ञ जनसामान्य की समस्याओं की उपेक्षा करते हुए अपने स्वार्थ में व्यस्त रहते हैं। राजनीति चोर, डाकुओं का केन्द्र बन गई है। राजनीति की इन समस्याओं से जनता को अनेंक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और सब कुछ सहन करते हुए मौन है। शासक देश की गरीबी दूर करने से बेखबर है। आतंकवाद को दिन पर दिन बढ़ावा मिल रहा है। भारत में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर आदित्य शर्मा ने यंग्य के रूप में प्रहार किया है।

भारत वर्ष में मच रहा, चारो ओर ही शोर।
राजनीति में घुस रहे, गुंडे डाकू चोर॥
देश की हुई बरबादी।
बढ़ रहे हैं अपराधी॥
उठा पटक में व्यस्त है, दिल्ली का दरबार।

जनता पर है पड़ रही, महंगाई की मार॥
जुल्म छाती पर सहती।
बेचारी कुछ न करती॥
खाने को आटा नहीं, न ही घर में दाल।
फिर भी वो आंतक को, रहा पड़ोसी पाल॥
भीख कब तक मांगेगा।
सो रहा, कब जागेगा॥ 185

आज की राजनीति में न कोई धर्म है न ईमान है। स्वार्थ और पैसा ही सबकुछ है। इन परिस्थितियों से राजनैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। आज के राजनैतिक मूल्यों में इतना बदलाव आया है कि अब राजनीति सुसंस्कृत, सुशिक्षित व्यक्ति का क्षेत्र नहीं है। राजनीति में बढ़ती हुई विद्रूपताओं और भ्रष्टाचार पर कवि जैमिनी हरियाणवी ने व्यंग्य किया है-

सबेरे-सबेरे एक दिन
मेरे एक पड़ोसी
गंदे नाले में
चीनी डाल रहा था
शायद अपनी भड़ास निकाल रहा था
कारण पूछने पर
उसने बताया-
मैं एक विचारधारा में
डुबकी लगा रहा है
राजनीति में धर्म मिला रहा हूँ। 186

युगीन परिस्थितियों को देखते हुए आज का लोकतंत्र कलंकित हो गया है। लोकतंत्र सिर्फ कहने के लिये ही रह गया है। देश में आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है। संसद में हमेशा हवाले और घोटाले होते रहते है, और घोटाले करने वाले नेताओं के यश गान होते रहते है। राजनीति की विसंगतियों पर की जे.पी. शर्मा लिखते है-

लोकतंत्र का मंदिर संसद-वीरो की है भूमि निराली।

मंत्र-जाल क्रीड़ा स्वभाव की-जिहाओं की नर्तन गाली॥
नित्य हवाले और घोटाले-भक्तों के यश-गान गा रहें।
नेति-नेति हैं भक्त सभी अब-जन्मों की निधि यहाँ पा रहे॥ 187

भारतदेश में एक समय राजनीति को अपनाना गर्व की बात मानी जाती थी। त्याग, बलिदान, सेवा की भावना पूज्यनीय थी परन्तु आज के नेताओं में ईमानदारी, बलिदान का कोई महत्व नहीं रहा है। आज के राजनेता सत्ता प्राप्ति के लिये बिक जाते है। देश में चारों दिशाओं में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि एहसान कुरैशी ने व्यंग्य किया है-

आइये भाई साहब,
एक नई खोज में
हम जुट जाएँ
कुछ ईमानदारी की
गोलियाँ बनाएँ
और देश के
प्रत्येक भ्रष्टाचारी नेता को
पकड़-पकड़कर खिलाएँ
मेरे देश की
सोई किस्मत जाग जाए।
मुझे देश का दुःख सताता है,
और किसी कवि का
ये दोहा याद आता है।
समय-समय की बात है
समय-समय का योग,
लाखों में बिकने लगे
दो कौड़ी के लोग। 188

युगीन समाज में भ्रष्टाचार की अधिकता बढ़ती जा रही है। राष्ट्रके कर्णधार। जनतन्त्र में ऐसे-ऐसे नेता निर्वाचित होकर पहुँचते है जिनका नैतिक और सामाजिक चरित्र कंलकित होता है। अकुशल प्रतिनिधियों के कारण शासन भ्रष्ट होता जा रहा है। ये गलत कार्य करते है और झूठे आश्वासनों का सहारा लेते है। देश में चारों तरफ

दुर्घटना ये होती रहती है राजनीति के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि प्रेम किशोर पटाखा ने व्यंग्य किया है।

नेता यहाँ हमारे फसलों से उठ रहे हैं
आश्वासनों के बल पर जनता को ठग रहे हैं।
डंडा और झंड़ा
चंदा, चमचों का है सहारा
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
अखबार की खबर है, दुर्घटना घट रही है।
कहीं बम, कही पटाखा, हीं गैस फट रही है
जासूसी कर रहे हैं
कहकर वतन हमारा
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा। 189

आज की राजनीति में एक से बढ़कर एक भ्रष्ट व्यक्ति मिलते है। नेतागण ऊपर से साफ स्वच्छ और ईमानदार लगते है। परन्तु इनकी वास्तविकता देखने पर यह पता चलता है कि ये अन्दर से कितने काले है। आज के नेता सिर्फ राजनीति के भ्रष्टाचार में लिप्त है। इस संदर्भ में कवि अशोक अंजुम लिखते है-

मैं भी तुम भी, ये भी, वो भी
इस हमाम में सब47 नंगे,
हर-हर गंगे, हर गंगे।
ऊपर-ऊपर गोरे है, अंदर से है सबकाले
हर टोपी के नीचे हैं, तरह-तरह के घोटाले
पोल खुली बाबू निकले
यारो बेहद बदरंगे।
हर-हर गंगे, हर गंगे।
तीन के तेरह करने में, लगे हुए हैं सब भैया,
राजनीति की रोटी है, चुल्हा हर मजहब भैया,
शांति-दूत कहने भर करे
पर करवाते वे दंगे।
हर-हर गंगे, हर गंगे। 190

आधुनिक परिवेश में राजनेता को देश की कोई चिन्ता नहीं है। युगीन नेता अपने सिद्धान्तों को भूलकर घोटाले करते है। इनके गिरते हुए चरित्र से सरकारी कार्यालयों के अफसरों को बढ़ावा मिल जाता है। इन परिस्थितियों से पूरा देश भ्रष्टाचार की गर्त मेंजा रहा है। और देश का दुर्भाग्य नजर आ रहा है। इस सम्बंन्ध में मधुप पांडेय ने व्यंग्य किया है-

सड़क पर उखड़ी हुई गिट्टी
और सीमेंट में मिली हुई मिट्टी देखकर
मेरे भीतर का कवि-पत्रकार जागा
मैं कागज-कलम-लेकर
ठेकेदार के पास भागा।
मैने पूछा-
तुम जनता की
गाढ़ी कमाई का पैसा उड़ाते हो
तुम्हें शर्म नहीं आती,
सीमेन्ट में मिट्टी मिलाते हो
तुम्हारी सड़क की निर्माण-प्रक्रियाएँ
बिल्कुल चालू है।
वह विहँसकर बोला-
'क्या आप लालू हैं?'
मैंने कहा-
मै लालू नहीं,
मैं हूँ कवि-पत्रकार
मैने निश्चय किया है
कि मै मिटाऊगा भारत से भ्रष्टाचार।
सुनकर वह जरा अचकचाया,
मेरे बिल्कुल पास में आया।
बोला- यह लंबा किस्सा है
इस पराक्रम में
ऊपर से नीचे तक सबका हिस्सा है,

आप तो कवि पत्रकार है।
आप शब्द के अर्थ निकालने के लिए
स्वतंत्र है, स्वच्छंद है,
हमने तो पहले से ही
बोर्ड लगा रखा है-
काम चालू है
रास्ताबंद है। 191

आज के राजनैतिक परिवेश में पूर्ण रूप से भ्रष्टाचार समा गया है। आज के राजनैतिज्ञ महानता का मुखौटा लगाये घूमते है। परन्तु वास्तविकता में और हैं। ये पूरे देश को खोखला करने में लगे है। अपने शासको को देखकर देश के सरकारी अफसर भी देश भक्ति भूलकर घोटाला करने मे लगे है और हिन्दूस्तान का कानून अंधा और लगड़ा हो गया है। हिन्दूस्तान का प्रजातंत्र सिर्फ कहने के लिये है। प्रजातंत्र का अधिकार का प्रजातंत्र सिर्फ कहने के लिये है। प्रजातंत्र का अधिकार शासकों के हाथों में है. राजनीति के इस बदलते हुए परिवर्तनों पर कवि धमचक मुलथानी ने व्यंग्य किया है-

सरकारी दफ्तर के दरवाजे पर
खड़े व्यक्ति से मैंने पूछा- 'आप कौन?'
वह थोड़ी देर खड़ा रहा मौन
फिर बोला- 'मैं भ्रष्टाचार हूँ
यारों का यार हूँ
सत्ता सुख का सरदार हूँ
भारत में सबसे बड़ा हूँ
हिन्दूस्तान के हर सरकारी
दफ्तर की चोखट पर खड़ा हूँ।
वैसे मेरी कई किस्म है, कई ब्राण्ड हैं
जैसे बोफोर्स काण्ड, सीमेन्ट काण्ड, शक्कर काण्ड
और जो करते हैं बड़े-बड़े काण्ड
वे इस देश में ऐसे घूमते हैं
जैसे घूमते है सांड

क्यों कि इस देश की जनता गूँगी है
सरकार बहरी है, कानून अंधा है
जगह–जगह दो नम्बर का धंधा है
इस धंधे में गुण्डे हैं, डण्डे हैं
झोले हैं, झण्डे हैं,
झण्डो के नीचे प्रजातंत्र के पण्डे हैं
पण्डों के हाथों में सत्ता है
हिन्दूस्तान का लंगड़ा प्रजातंत्र
इन्हीं के हाथों में रहता है
और इस विशाल प्रजातंत्र में
गांधी, नेहरु और सुभाष की जगह
रतनी सत्री है, हर्षद मेहता है, हाजी मस्तान है
मेरा भारत महान है।' 192

आधुनिक युग में राजनीति में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर कवि ने व्यंग्य किया है। राजनेता की तुलना डाकुओं से की जाये तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए. आज के नेताओं का कोई धर्म, ईमान नहीं रहा है। जनता को लूटने में लगे है। इस संदर्भ में प्रदीब चौबे के अनुसार -

शहरों में है विधायक तो
गांव में है डाकू।
सुनते है राजनेता की,
छाँव में है डाकू।
दोनो तरह की कागज की
नाव में हैं डाकू।
इसका उसे सहारा
उसका उसे सहारा,
सारे जहाँ से अच्छा
हिन्दोस्तान हमारा। 193

युगीन परिवेश में भारत देशकी संस्कृति लुप्त हो गई है। पूरे देश में भ्रष्टाचार और बेईमानी का ही बोलबाला है। भारतीय समाज को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है

मानो इसकी संस्कृति भ्रष्टाचार ही है। भ्रष्टाचार ही पूरे देश में समाया हुआ है। इस संदर्भ में कवि ओमप्रकाश आदित्य की व्यंग्य पंक्तियाँ है-

बेईमानी भरात की आधुनिक सभ्यता है।
संस्कृति टूटी कुटियों में फटे हाल है।
पतियों की तरह रोज पार्टो बदलती है।
राजनीति आज ऐसी हो गई छिनाल है,
कंचन कवच पहने भेड़ियें विचरते हैं,
चापलूस गीदड़ों की चाँदी जैसी खाल है।
भ्रष्टाचार देश में या देश भ्रष्टाचार में है।
दाल में है काला या काले में ही दाल है। 194

भारतदेश का वास्तविक रूप जो होना चाहिए था अब देखने को नहीं मिल पा रहा है। चारो तरफ भ्रष्टाचार बेईमानी ही दिखायी देती है। देश की अपनी संस्कृति लुप्त हो गयी है। देश के शासक जो जनता के कर्ण धार माने जाते थे। योग्य चुनने के बजाय सिद्धांन्त हीन, चरित्रहीन ही चुने जा रहे है। देश के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर काका हाथरसी ने ने व्यंग्य पंक्तियाँ प्रस्तुत की है-

गुलदस्ता में सजाए, असली ताजा फूल।
मुरझा कर सब गिर गए, चाट रहे है धूल।
चाट रहे है धूल, हुए इक दिन में बासी।
प्लास्टिक वाले नकली लगा गया चपरासी।
देख लीजिए एक वर्ष तक ज्यों के त्यों हैं,
अब बोले असली से नकली अच्छे क्यों है।
हार गया इलेक्शन जो था नेता असली
विजयी होकर उछल रहा है नेता नकली। 195

(10) सत्ताप्राप्ति के पश्चात् आत्मसुख में लीन राजनेता:

भारतदेश में राजनीति में सबसे अधिक भ्रष्टाचार देखने को मिलता है। प्रत्याशी राजनीति में जब प्रवेश करते है। तो उनके पास कुछ नहीं होता है। इलेक्शन में जीतने के बाद सत्ता में पहुँचते है और अपने सभी सपनों को साकार कर लेते है। राजनेताओं को महल गाड़ियाँ प्राप्त होती है और इन सुखों को प्राप्त करके शासक जनता की समस्याओं से हमेशा बेखबर रहते है। इस संदर्भ में अल्लड़ बीकानेरी ने

व्यंग्य किया है -

हम है नेवा नुमा मदारी, क्या छिपाएँ तुमसे
तुम तो हो अपने दरबारी, क्या छिपाएँ तुमसे
कल तक थे चल रहे कत्ल के
हम पर बीस मुकदमे
एक इलेक्शन लड़ा जेल से
पहुँच गये संसद में
अपना पूत सांड सरकारी, क्या छिपाएँ तुमसे
पोता तस्कर और जुआरी, क्या छिपाएँ तुमसे
टप-टप था खपरैल टपकता
कल पुश्तैनी घर का
खुली लाटरी खड़ा47 हो गया
महल संगमरमर का। 196

सत्ता प्राप्ति पश्चात राजनेता अपने सुख सुविधाओं के भोग में लगे रहते है। जनता का कुछ भी हो उन्हें उससे कोई लेना-देना नहीं है। सत्ता में पहुँचकर नेता अपने को धन्य समझते है। कि उन्हें संसार के सभी सुख प्राप्त हो गये है -कवि जगन्नाथ विश्व के अनुसार -

हुए देखकर दंग हम दंगे लूट-खसोट,
बंदर ले गए बापू की लाठी-छड़ी-लंगोट।
लुंगाड़े ठर्रा पीते
देश के हुए फजीते।
राजनीति तो हो गई है कलंक अभिशाप,
सत्ता की खातिर लड़े भैया-बेटा-बाप।
नेताई नंगों जैसी,
देश की ऐसी-तैसी।
नेताजी ने कर लिया सचमुच सर्व-सुधार,
जनसेवा की आड़ में हो गई कोठी-कार।
कार में कंचन काया
धन्य कुरसी की माया। 197

आज के राजनीतिज्ञ तो सत्ता को स्वर्ग समझने लगे है। सत्ता प्राप्ति के लिये ये अपना घरद्वार बेच देते है, और सत्ता में पहुँचकर आत्मसुख को अनुभव करते है। नेताओं के परिवारीजन सभी सुख-सुविधाओं का लाभ उठाते है। आज के शासकों के लिये सत्ता सुखों का केन्द्र बन गई है।

इस संदर्भ में कवि डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ने व्यंग्य किया है-

नेताजी ने बेचकर, अपना सब घर-द्वार,
टिकट कटाया पहुँचकर, दिल्ली के दरबार।
दिल्ली के दरबार खिलाया हलवा पूरी,
लेकिन बनी रही, उनकी वोटर से दूरी।
चमचों पर विश्वास किया, मन में ना चेता।
वे सब गये डकार, लुटा बैठे घर नेता।
नेताजी मंत्री बने, मंत्राणी के ठाट,
सैर सपाटा कर रहीं, धूम रही हैं हाट।
धूम रही है हाट, बदलते पल-पल तेवर,
कहीं खरीद साड़ी, कही खरीदे जेबर।
उनके बिन भुगतान खुशी से जो कर देता,
उसके पौ बारह करते, पल भर में नेता। 198

आधुनिक युग के शासक अपने स्वार्थ के लिये सत्ता में प्रवेश करते है। अपने सुखों के लिये शासक अपने सिद्धान्तों को भूल जाते है। अपने सुखों में लीन होकर ये जनता की समस्याओं से बेखबर रहते है और इस तरह ये अपने स्वराज्य को भूलकर सिर्फ अपने कुटुम्ब का उद्धार करते है। कवि दिनकर सोनवलकर की पंक्तियाँ इस प्रकार है-

रावी के तट पर जो खायी थी शपथ,
उन शब्दों की गर्मी
हो गई समाप्त।
(वैसे भी एयरकण्डीशंन बंगले में न लगती है गर्मी न सर्दी)
त्याग और कर्मठता
जो मिले ते विरासत में
बापू से,

उन्हें कुचलती हुई बड़ी जा रही है
मिनिस्टर की कार
'आखिर क्यों हो तपस्या बेकार
और इस तरह
पूरा हो रहा है स्वप्न
स्वराज्य का,
स्व यानी मै और मेरा परिवार,'
मेरे रिश्तेदार
और कुछ पूँछ हिलाने वाले
कुत्ते वफादार। 199

11. समस्या ग्रस्त आम आदमी और भ्रष्ट राजनीति :

आधुनिक युग में आम आदमी अपनी समस्याओं से इतना परेशान है कि अपनी निजी जीवन की जरुरुतों के जाल में फंसा हुआ है। उसे देश की समस्याओं राजनेताओं के कारनामों से बेखबर है और जीता और हारा उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं है। समाज की इस दुर्व्यवस्था पर कवि काशीपुरी कुंदन ने ने व्यंग्य किया है-

हमारी समस्याएँ विकराल हैं
तुम्हें क्या बताएँ क्या हाल है।
ये जो तुम्हारा नेता है
हर पांच साल में धोखा देता है।
व्यापारी हमें लूटता है
अधिकारी हमें कूटता है
महंगाई के मारे बुरा हाल है
बच्चों के आगे बेरोजगारी का सवाल है
जो भी हमारे द्वार आता है
पहले तो हमारी गरीबी और लाचारी पर सहानुभूति जताता है
फिर हमें अपने हाल पर छोड़कर
कुछ न कुछ नई परेशानी जोड़कर
पता नहीं कहां भाग जाता है।
हमारे भाग में अत्याचार है।

दुर्व्यवस्था के हम शिकार हैं
अकाल हमारे पीछे पड़ा है
नया बजट बांकी कसर पूरी करने के लिए काल सा खड़ा है
कर्ज में पैदा होते है और कर्ज में मरते है
ये मत पूछो हुजूर काम के नाम पर क्या करते है।
सारी जिन्दगी रो रो कर जीते है।
और विसंगतियाँ भुलाने के लिए हर शाम जहरीली
आज हम जिन्दे है ये महज शराब इस्तकाक है पीते है।
वैसे बाली सब ठीक ठाक है। 200

आज भारत देश में आम आदमी की समस्या इतनी विकराल हो गयी है। कि वे उन्हीं में उलझकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें देश की राजनीति और राजनेताओं के बारे में सोचने का समय नहीं मिलता है। राजनेता सत्ता की प्राप्ति के लिये पूरा जोर लगा देते है। और धन इकट्ठा करकें आराम का जीवन व्यतीत करते है। उन्हें जनता की समस्याओं से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं है, देश की इन समस्याओं पर कवि मूलचन्द शर्मा 'नादान' ने व्यंग्य किया है-

मैने जब भी अपना सर
इधर से उधर घुमाया
एक काले आदमी को
शराब के व्यापारी
या किसी तस्कर सम्राट की कोठी में पाया,
मैं यह जुल्म नहीं सह सका।
उस काले आदमी से कहा-
'भगवान करेगा,
तुम्हारे इन दुष्कर्मो का जोखा-लेखा
तुमसे ज्यादा दुश्चरित्र आदमी नहीं देखा
पहले तो जोर से हंसा
फिर उसके जवाब ने मुझे सांप की तरह डंसा
बोला- तो तुम्हें और तुम्हारी जनता को
उसकी औकात बताऊँगा

* * *

ये वो देश है जहाँ
देशभक्तों को रहने को नहीं है मकान
और दलबदलू नेताओं के पास
कार, कोठी, बंगले आलीशान,
तुम और तुम्हारी जनता
ऐसे नेताों को चुनाव में जिताते हो
और मुझे दुश्चिरित्र कहकर उंगली उठाते हो। '
मैं अकेला ही नहीं,
भारत की जनता भी इसमें दोषी है।
कि मै दुश्चिरत्रि और अपवित्र हूँ
अब सुनो 'नादान'
मैं बताता हूँ, मै कौन हूँ
मै आज के
हिन्दुस्तान के नेताओं का चरित्र हूँ। 201

आज के राजनैतिक क्षेत्र में छल, झूठ, मक्कारी, फरेब, आपाधापी की होड़ लग गई है। राजनेताओं का समाज के सामने दिखावा अलग है और हकीकत में कुछ और है। इन समस्याओं से जनता को संघर्षो का सामना करना पड़ रहा है। कवि मधुप पांडेय के विचार इस सम्बन्ध में प्रस्तुत है-

जब आम आदमी महँगाई की ठंड में ठिठुरने लगा।
हाय-हाय करने लगा।
तो एक दल के सदस्य दोड़े-दौड़े आए।
उन्होंने मगरमच्छ की तरह आंसू बहाए।
सुख और सुविधा के आश्वासन दे गये।
और बदले में वे
उससे मांगकर उसका कुर्ता ले गये।
उनके जाते ही
उनके विरोधियों ने मोर्चा थाम लिया।
बंद और घेराव के

अपने परंम्परागत नुस्खे से काम लिया।
उसकी आंखों पर
नयी आकंक्षाओं की तख्ती टांग दी।
और बदले में उससे
उसकी धोती मांग ली
अब वह बेचारा
सिर्फ लंगोटी पहने
ठंड में ठिठुरकर मर रहा है।
परन्तु डर के मारे
हाय हाय भी नहीं कर रहा है। 202

12. भारतीय लोकतंत्र :-

संसद लोकतंत्र को बनाए रखने की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था है जो निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनती है। परन्तु आज लोकतंत्र सिर्फ कहने के लिये रह गया है लोकतंत्र की बजाय जोकतंत्र बन गया है। सत्ताधारी नेता पूरे देश में अपना जाल बिछाए है। चुनाव के समय ये उजले साफ सुथरे दिखते है परन्तु संसद में पहुँचकर उनका स्वार्थी असली रूप सामने आ जाता है। आज के युवा इनके पद चिन्हों पर चलने की कोशिश करते है। देश की इन बिगड़ती परिस्थितियों पर कवि अरविन्द सम्वेदित ने व्यंग्य द्वारा व्याख्यायित किया है।

एक सभा में नया खेलचल रहा था,
कोई किसी को मार रहा था,
कोई किसी के पीछे भाग रहा था।
एक-दूसरे के पीछे तेजी से झपटा,
इसी चक्कर में तीसरा बीच में ही रपटा।
सत्ता के मायावी खेल चल रहे थे।
लोग एक-दूसरे का कल्याण कर रहे थे
दूरदर्शन पर सब साफ-साफ दिखाया जा रहा था,
यारों बड़ा मजा आ रहा था।
मेरी आठ साल की मासूम बिटिया सम्वेदना बोली,
प्रश्नों की जैसी उसने पिटारी ही खोली।

'पापा ये अंकल दो साल पहले जब मेरे गांव में आये थे,
सबके हाथ जोड़े थे, बड़े प्यार से मुस्कारये थे।
क्या हो गया है जो आज पागलों की तरह वहशियाना लड़ रहे हैं?
इतना खून बह रहा है फिर भी पीछे नहीं हत रहे हैं।'
हम जब क्लास में शोर मचाते है,
तुम्हारी कसम पापा मिस से सजा पाते हैं।
क्या इनकी कोई टीचर नहीं होती है?
या नैतिक शिक्षा की इनके लिये कोई किताब ही नहीं होती है।
क्या गांधीजी के आदर्श व्यक्ति ऐसे ही होते हैं।
क्या लोकतन्त्र में आजादी इसी को कहते हैं?
क्या ये आजादी की पचासवीं सालगिरह इस तरह मना रहे हैं,
या लोकतन्त्र का असली चेहरा विश्व को दिखा रहे हैं।
इन प्रश्नों पर संविधान चुप और मैं बिल्कुल मौन था,
मुझे नहीं पता
दे दे इन प्रश्नों का जवाब
ऐसा महान् व्यक्ति कहाँ और कौन था।
मैं तो फिर भी एक पढ़े-लिखे बेरोजगार युवक की तरह चुप हो गया,
पर सम्वेदना का प्रश्न मेरे भारत महान् के लिये एक प्रश्नचिन्ह हो गया।

203

आज के सत्ताधारी नेताओं पर उनके भ्रष्ट चरित्र के कारण देश की जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। लोकतंत्र का कोई महत्व नहीं रहा है। जनता का कोई अधिकार नहीं रहा है। जो भ्रष्टाचार का विरोध करता है उसकी आवाज दबा दी जाती है। आज के शासकों के स्वार्थ सिद्ध का मूल मंत्र सत्ता है। देश के बदलते हुए परिवेश पर कवि अनिल धमाका की व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है।

हमारे राजनीतिज्ञों ने
एक चुइंगम बनाई है।
उत्पादन विशेष है,
अद्भुद केस है,
इसके फार्मूले में अनेंक

विशिष्टताओं का समावेश है।
ऊपर से राष्ट्रीय एकता का लेप है।
मधुर सुन्दर सी शेष है।
समाजवाद का पैकिंग
इस पर बहुत सुहाता है,
राष्ट्रीय नेता बन जाता है,
जो भी इसे खाता है।
यह सत्ता सिद्धि का मूल मंत्र है, 204

***

अध्याय -4

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. स्वातंत्र्यत्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ, सुरेश महेश्वरी। पृ 96-97
2. व्यंग्य का समाज दर्शन, डॉ. सुरेश आचार्य पृ. 40-41
3. साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनैतिक चेतना पृ. 66
4. काका की फलझडियॉ खाका हाथरसी। पृ. 128
5. काका की चौपाल, काका हाथरसी। पृ. 62
6. पत्रिका रंग चकतलस। पृ. 33
7. रंग चकतलस। पृ. 43, अप्रेलृ-जून 1999
8. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रॄ डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 88
9 साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना डॉ. एस. गम्भीर। पृ. 61
10. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 23
11. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 30
12. हास्य-विनोद काव्य कोश प. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 23
13 हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ 23
14. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 114
15. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 123
16. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 362
17. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्‌गिल। पृ. 19
18. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्‌गिल। पृ. 65
19. क्या हम समझते नही है, आशाकरण अटल। पृ.
20. खुल्लम-खुल्ला, अशोक अंजुम। पृ. 25
21. 1991 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताऍं, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 93
22. 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताऍं, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 14-15
23. 1995 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताऍं, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 34,37,38,39
24. 1989 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 60
25. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 17
26.
27 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, डॉ. गिरिराज शरण। पृ. 36-37
28. हास्य कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 41
29. मज़ा मिलेनियम, पं. सुरेश निरव। पृ. 53
30. हास्य-व्यंग्य भारती, डॉ. रामगोपाल सिंह। पृ.9 अक्टूबर-मार्च 2001
31 टुकडे-टुकड़े सोच, जय कुमार रुसवा। पृ. 31
32. टुकडे-टुकडे सोच, जय कुमार रुसवा। पृ. 132
33. सोची समझी, अशोक चक्रधर पृ. 21-22
34. धूर्त दर्पण, धूर्त बनारसी। पृ. 61
35. सोची-समझी अशोक चक्रधर। पृ. 16-17
36. हॅसो बत्तीसी फाड के, प्रेम किशोर पटाखा। पृ 29
37. जय बोलो बेईमान की, काका हाथरसी। पृ. 80
38. काका की फुलझडियॉ, काका हाथरसी। पृ. 31
39 काका की फुलझडियाँ, काका हाथरसी। पृ. 32
40. काका की फुलझड़ियाँ, काका हाथरसी। पृ. 87
41. काका की चौपाल, काका हाथरसी। पृ. 27

42. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. 25
43. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. 32
44. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. 35
45. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. 47
46. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. 48
47. सात देवरों से होली, सरला भटनागर। पृ 51-52
48. हँसी के रंग कवियों के संग प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 24
49 हँसी के रंग कवियों के संग प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 46
50. 1998 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 64-85-67
51. 1999 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 19
52. 2002 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 31-32
53. 2002 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 55
54. 2003 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ 77-78
55. दूधो नहाओं पूतों फलों, डॉ. गोपाल बाबू शर्मा, पृ. 78
56. नई गुदगुदी हास्य-व्यंग्य त्रैमासिक पत्रिका जुलाई-सितम्बर2004- पृ. 10
57. सात देवरों से होली, सरला भटनागर। पृ. 73
58. नव-भारत टाइम्स, नयी दिल्ली, 11 अक्टूम्बर 1981। पृ. 4
59. साठोत्तरी हिन्दी गजल डॉ. मधु खराटे। पृ. 106
60. हिन्दी कविता में गजलछ संवेदना और शितप डॉ जे पी गगावार। पृ. 99
61. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 23
62. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 72-73
63. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ.82-83
64. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ 115
65. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 145
66 हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 265
67 हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 298-299
68. हास्य-विनोद काव्य-कोश, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 385
69. अच्छा है पर कभी-कभी, हुल्लड मुरादाबादी। पृ. 41
70. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल। पृ. 10-11
71. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल। पृ. 15
72 व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल। पृ. 48
73. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 46
74. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 63
75. 1992 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 15
76. 1993 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 43
77. 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 33-34
78. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ. 44
79. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल. पृ 55
80 हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 16
81. हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 55-56
82 हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ.
83. हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 66
84. हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 73
85. हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 97

86. हास्य-कवि दरबार, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 99-100
87. हँसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन, प्रेम किशोर पटाखा । पृ. 9
88. हॅसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन, प्रेम किशोर पटाखा । पृ. 44-45
89. हॅसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन, प्रेम किशोर पटाखा । पृ. 55-56
90. हास्य-व्यंग्य के विविधरंग, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.
91. सात-देवरों से होली, सरला भटनागर। पृ. 76
92. भैसा पीवे सोमरस, अल्हड बीकानेरी। पृ. 14
93. भैसा पीवे सोमरस अल्हड बीकानेरी। पृ. 75
94. अब तो आंसू पोछ, अल्हड़ बीकानेरी। पृ. 19
95. जयबोले बेईमान की, काका हाथरसी। पृ. 68
96. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी। पृ. 28
97 लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 67
98. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 83
99. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 108
100. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 136
101. काका के कारतूस, काका हाथरसी। पृ. सामतंवाद का स्वाद लेते रहो समाज
102. यार सप्तक, काका हाथरसी। पृ. 90
103. काका की चौपाल, काका हाथरसी पृ. 73
104. हास्य-व्यंग्य भारती अप्रैल-सितंबर 2001, डॉ. राम गोपाल पृ. 3
105. पत्रिका रंग-चकल्लस अंक-3, जुलाई-सितंबर 1993, पृ. 11, असीम चेतन
106. पत्रिका रंग चकल्लस अक्टूबर-दिसम्बर सन्. पृ. 61.
107. नई-गुदगुदी अंक-11, फरवरी 1992। पृ. 16, विश्वभर मोदी।
108 पत्रिका व्यंग्य-तंरग अंक-12, दिसम्बर 2003 पृ 17, सरोज श्रीवास्तव
109. हुडदंग हास्य-व्यंग्यबार्षिकी अंक-17, मार्च 1989, चन्द्र शेखर झा इन्द्र
110. गिद्ध भोज, राम किशोर मेहता । पृ. 96
111. टुकडे-टुकड़े सोच, जाय कुमार रुसवा। पृ. 37
112 टुकड़े-टुकड़े सोच, जय कुमार रुसवा पृ. 80
113. लाशे खिल खिलाती हैं, धूमकेतु पृ. 21
114. पेट मे दाढियाँ है सूर्य कुमार पाण्डेय । पृ. 89-90
115. पेंट में दाडिया है, सुर्य कुमार पाण्डेय। पृ. 111-112
116. तमाशा अशोक चक्रधर। पृ. 174-175
117. हास्य और व्यंग्य मधुप पांडेय के संग । पृ-86-87
118. नेता चरित्रम्, डॉ. रामप्रसाद मिश्र-पृ. 8-9
119. चेतन-चुटकी, आदित्य शर्मा चेतन। पृ. 28
120. चेतन चुटकी आदित्य शर्मा चेतन। पृ. 31
121. चेतन चुटकी आदित्य शर्मा चेतन। पृ. 73
122. हॅसी आती है, शैल चतुर्वेदी। पृ. 8
123. हँसो बत्तीसी फाड के (हास्य कवि सम्मेलन) प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 3
124. हॅसो बत्तीसी फाड़ के (हास्य कवि सम्मेलन) प्रेम किशोर पटाखा। पृ 24
125. हास्य सागर, गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 434, 435
126. हास्य-व्यंग्य भारती पत्रिका अप्रैल-सितम्बर 2000 पृ. 17-18
127. हास्य-व्यंग्य भारती पत्रिका अप्रैल-सितम्बर 2000 पृ. 10-11
128. पत्रिका रंग चकल्लस, अंक-2, अप्रैल-जून 1991 पृ. 33 असीम चेतन।
129. काका की चौपाल काका हाथरसी पृ. 15

130. काका की चौपाल, काका हाथरसी पृ. 76
131. हास्य-विनोद काव्यकोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 67-68
132 व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल पृ 136,137
133. 1992 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 74
134. मज़ा मिलेनियम, पं. सुरेश नीरव पृ. 31
135. सात देवरों से होली, सरला भटनागर. पृ. 15
136. समय का शंख, नरेन्द्र मिश्र धडकन। पृ. 15
137. टुकडे-टुकडे सोच, जय कुमार रुसवा। पृ. 27
138. टुकडे-टुकड़े सो, जय कुमार रुसवा। पृ. 29
139. सोची समझी, अशोक चक्रधर। पृ. 50-51-52.
140 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ, डॉ. गिरिराजशरंण, पृ. 13
141. हँसता खिलखिलाता हास्य-कवि सम्मेलन, प्रेम किशोर पटाखा पृ. 77
142. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग, डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी, पृ. 77
143. अब तो आंसू पोठ, अल्हड़ बीकानेरी, पृ. 5-16
144. अब तो आंसू पोंछ, अल्हड बीकानेरी, पृ. 48
145. जय बोलो बेईमान की, काका हाथरसी पृ. 11
146. काका की चौपाल , काका हाथरसी, पृ. 71
147. काका की चौपाल , काका हाथरसी पृ. 75
148. जय बोलो बेईमान की, काका हाथरसी पृ 159
149. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 69
150 लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी पृ. 134
151 हास्य-व्यंग्य भारती पत्रिका पृष्ठ6, डॉ. राम गोपाल सिंह
152. मुर्दो का प्रतिभोज, काशीपुरी कुदन, पृ. 21-22
153. चेतन-चुटकी, आदित्य शर्मा चेतन। पृ. 132
154 रग चकल्लस, असीम चेतन पृ. 61
155. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएँ, अशोक अंजुम पृ. 20-21
156. लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएँ, अशोक अंजुम पृ. 64
157. हँसता खिलखिलाता हास्य कवि सम्मेलन, प्रेम किशोर पटाखा, पृ. 70
158. हास्य-व्यंग्य के विविधरंग, डॉ. बरसाने लाला चतुर्वेदी पृ 63
159. काका की चौपाल काका हाथरसी पृ. 121
160 काका की चौपाल काका हाथरसी पृ 17
161. काका की फूलझडियाँ, काका हाथरसी । पृ. 128
162. लूटनीति मंथन करी पृ. 121
163 काका के कारतूस, काका हाथरसी पृ. 21
164. काका के कारतूस, काकाहाथरसी पृ 108
165. हास्य-व्यंग्य भराती अपैल-सिंतबर 2001, डॉ. रामगोपाल सिह पृ. 2
166. क्या हम समझते नहीं है, आशाकरण अटल पृ. 114
167. 1990 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 43
168. 1994 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें, गिरिराजशरण अग्रवाल। पृ. 43
169 हास्य-विनोद काव्य कोश, प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 30
170. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल। पृ. 159
171. भोले-भाले, अशोक चक्रधर, पृ. 135-138
172. सांड का ब्याह कालीचरण गौतम। पृ. 75
173. काका की चौपाल काका हाथरसी पृ. 114

174. काका की फुलझड़ियाँ, काका हाथरसी। पृ. 31
175. काका की महफिल, काका हाथरसी पृ. 123
176. हास्य-व्यंग्य भारती अंक-8, अक्टूबर-मार्च 2003, पृ. 4 डॉ. रामगोपाल सिंह
177. रंग चकतलस अंक-5, अक्टूबर-दिसम्बर 1996। पृ. 21, असीम चेतन
178. रंग चकतलस, अक्टूबर-दिसम्बर 1996, पृ. 47 असीम चेतन
179 रंग चकतलस, अंक-2 अप्रेल-जून 1999, पृ 19 असीम चेतन
180. रग चकतलस,अंक-2 अप्रेल-जून1996, पृ. 43 असीम चेतन
181. टुकडे-टुकडे सोच, जय कुमार रुसवा। पृ. 130
182. लाशें खिलखिलाती हैं, धूमकेतु। पृ. 65
183. लाशें खिलखिलाती हैं, धूमकेतु। पृ. 67
184. पेट मे दाढियाँ है सूर्य कुमार पाण्डेय। पृ. 10-11
185. चेतन-चुटकी, आदित्य शर्मा चेतन। पृ. 45-46-47
186. हास्य-विनोद काव्य, पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 32
187. हास्य-विनोद काव्य, पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 132-133
188. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौद्गिल पृ. 45-46
189. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौद्गिल पृ. 110
190. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 16-17
191. 1996 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ. 42043
192 हॅसता खिलखिलाता हास्य कवि सम्मेलन प्रेम किशोर पटाखा। पृ. 76-77
193. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग बरसानेलाल चतुर्वेदी। पृ 62
194. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग बरसानेलाल चतुर्वेदी। पृ. 84
195. काका की महफिल काका हाथरसी. पृ. 124
196. घाट-घाट घूमे अल्हड बीकानेरी पृ. 31-32
197. व्यंग्यमेव जयते योगेन्द्र मौद्गिल पृ. 90
198. 1993 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण। पृ. 74
199. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी पृ 90
200. मुर्दो का प्रीतिभोज काशीपुरी कुंदन पृ., 23
201 लोकप्रिय हास्य-व्यंग्य कविताएं अशोक अंजुम पृ. 113, 114, 117.
202. 1991 की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ डॉ. गिरिराजशरण पृ। 55-56
203. हॅसता खिलखिलाता हास्यकवि सम्मलेन प्रेम किशोर पटाखा, पृ. 48-49
204. हास्य-विनोद काव्य कोश पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 359